

सर्वज्ञ-सर्वज्ञ
—कालिका—

श्री सुखदेव प्रसाद, विमल, विमल, इलाहाबाद
—कालिका—

[सर्वज्ञ के प्रसाद कवियों की, दिल सर्वज्ञ से बनी,
दिल पर बनी हुई कविताओं का लाजवाब संग्रह]

सर्वज्ञ-सर्वज्ञ

। प्रथम 'संसार' 'संसार' 'संसार'
प्रथम 'संसार' 'संसार' 'संसार'
—कवि

। प्रथम 'संसार' 'संसार'
'संसार' 'संसार' 'संसार'
प्रथम 'संसार' 'संसार' 'संसार'
—कवि

'दिल' एक अजीब चीज है—'दिल' की बात ही निराली है।
 'दिल' की मर्यादा बहुत बड़ी है। 'दिल' ऐसी बेसी चीज नहीं।
 'दिल' वाले 'दिल' की कद्र करते हैं। 'दिल' नहीं तो कुछ नहीं।
 'दिल' मनुष्य के जीवन की कसौटी है। 'दिल' देखर से मिलता
 है। 'दिल' सब कुछ कर सकता है। 'दिल' ही का संसार में सारा
 खेज है। 'दिल' ही का प्रेम की दुनिया में महत्व है। 'दिल' ही
 पर दुनिया की नजर रहती है। 'दिल' न होता तो संसार का
 आनन्द न मिलता। 'दिल' से बड़े बड़े समाजों देवता को मिलते हैं
 'दिल' ही वह आड़ना है जिस में सुहृदत्व की जीती जागती
 रत्नोत्तर नजर आती है। 'दिल' की आन-दान का क्या कहना।
 'दिल' का वांछना और परलना सहल काम नहीं है। 'दिल' ही
 जीवन का रहस्य है। 'दिल' पर सी रंग से, हजार रंग से, लाखों
 रंगों से कविताएँ की गई हैं। जैसे इस कारण 'दिल' पर नजर
 डालते हुए, 'दिल' पर जो अच्छे-अच्छे बड़े-बड़े कवि हैं उन्हें
 ही कविताओं का, उदाहरण के लिए मिल सकी, 'दिल' से संपर्क किया
 है। इसी से इस का नाम 'दुर्-दिल' रखा है। यह संपर्क कैसा है,
 में क्या बताऊँ, कविता के पारखी इसको बता सकते, और
 परर सकते हैं—'दिल' की दुनिया में विचर कर तरह तरह

दिल की बात

'दिल' इलाहाबादी।

कविता शैलियों का नाम—

दिल में तरह तरह की लम्बा लिय हुए,
 वीर है शीतल शीतल भी दलिया लिय हुए ।

पर कह कर बिदा सांगता हूँ

लिय से यह संग्रह हिन्दी लिय में हुआ है—अब मैं अपना एक
 धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता। बिनाकी सहोपाव। से उन्हें
 अब मैं मैं अपने पुराने मित्र पं० सातारसाह जी दुबे को भी
 के समाने आपणा—यह सब हिन्दगी के श्रेय में है—

का संग्रह बहुत जल्द करने वाला हूँ जो पुस्तक के रूप में पाठकों
 वार तकाले से मैं और अच्छे अच्छे उन्हें कवियों की कविताओं
 किया है। इसका श्रेय उन्हें को है, मुझे नहीं है। और उन्हें के वार
 अजरोह से और 'दिल' से आप्रह करने पर यह संग्रह मैंने तैयार
 मेरे परम मित्र श्री० पं० विद्याभारकर जी सुकुल के वार वार
 होगा—'दिल' भी यही 'दिल' से कहता है ।

आदर हुआ है उसी तरह आशा है कि इस संग्रह का भी स्वागत
 हिन्दी-संसार में जिस तरह मेरी रचनाओं और संग्रह का
 मैंने संग्रह किया है यह मेरा ही 'दिल' जानता है ।

के 'दिल' चुनकर पाठकों के समाने रखता हूँ—किस 'दिल' से

— 24 —

X X X

—'दाग' देहलावा

वज्रजिह्व २ "दाग" है और आदिकों के दिल में रहते हैं ।
 कोई मामों निशां पड़े तो से कासिर बना देना,
 मैं उनके दिल में रहता हूँ, वह मेरे दिल में रहते हैं ।
 खूदा रकले सुख्यत से किए आवाद दोनों पर,
 यहल अरमान ऐसे हैं कि दिल के दिल में रहते हैं ।
 देवाराँ हसरतें वह हैं कि रोके से नहीं रुकती,
 कि जिसकी जान जाती है उसों के दिल में रहते हैं ।
 बुलाने माहवशा' वज्रों हुईं मंजिल में रहते हैं



वज्र-जिह्व

यौन से देना है एकसर यौन हसरत देखकर,
 पूछते क्या हो तुम अपने गमनाई के दिल का संग ।

×
 क्या गिरा है नजर से आप क्यों दिल से मुझे ।
 ×
 खाक है ना खाक होकर खाक में मिल जाऊंगा,
 ×
 मेरे दिल से हो मुझे या तेरे दिल से हो मुझे ।
 दो तरह का डरक है लेकिन वही है एक डरक,
 एक खदानों का लुकि हो गया दिल से मुझे ।
 मैं जिस पर जान दी थी यह भी उस पर मर मिटा,
 चाहते हो या नहीं तुम चाहते दिल से मुझे ।
 क्या कहूँ जब वह कहे वहाँ गले में लाल कर,

× × ×

—'दर' वारती

जब आँखों से लड़ी आँखें, तो दिल खुद भिल गया दिल से ।
 वह करमाते थे यह अरमां तेरा निकलेगा मुश्किल से,
 कोई चाहे न चाहे, आपकी चाहेगा मैं दिल से ।
 खुदाई? भर का जिन्मा तो यह वन्दे से नहीं सकता,
 तेरी आदू भरी आँखें मेरे हसरत भरे दिल से ।
 मुझे सब त्यागते' दुनिया की मिल जाये तो मिल जाये,

X	X	X
—'अकथर' इलाहाबादी		
मेरा भ्रम यह है कि मेरे दिल में कुछ नहीं ।		
लेते हैं लोग अपनी दिली बात के सचों,		
X	X	X
—'विस्मल' इलाहाबादी		
कौन से घर में नहीं, या कौन से दिल में नहीं ।		
वसका चूर, वसका चूँदर, वसका कयाम, वसका मुकाम,		
X	X	X
—'चंद्र' नारदी		
एक गुम्हारी शकल सौ शकलें से भरे दिल में है ।		
जिस तरफ वही जागहें उस तरफ भ्रम नया,		
X	X	X
—'दाग' देहलीवादी		
जो नहीं हैं मैं, मगर देरदम मेरा दिल घर में है ।		
खूँटी है आदमी से "दाग" कब हूँवें-वतन,		
X	X	X
—'विस्मल' इलाहाबादी		
आज कुछ है और कल कुछ है हमारे दिल का रंग ।		
एक सूरत एक पहलू पर कभी रहता नहीं,		

X X X

—'विशाल' कलाकारों

यह दोआयें मांगती थी, आज एक कैंप चल्य,
दूरे भी दिन में रहे, बंदूकें भी दिन में रहे ।

X X X

—'दूर' गावों

रख दिया बंदूकें-बसंतों आपने दिन पर जो दिया,
तो यह मैं समझा कि दूरी दूरों दिन होगी ।

X X X

दिल हुआ मुझसे जुड़ा, मैं दूरीया दिन से अलग ।

दूरकें मैं बंदूकें में डाली यह कैसा बफका,

X X X

दिल हमारे पास है, वह है हमारे दिल के पास ।

हम रहे महकिल में क्यों, हम जायें क्यों महकिल के पास,

दिल तुम्हारे पास है, तुम हो हमारे दिल के पास ।

दूर से आंखें लड़ाने का नतीजा कुछ नहीं,

X X X

--'दूरी' देखने

जिसके होने का गुण भी न रहे दिल है वही ।

नाम पाते हैं सुदूरत में जो फिर जाते हैं,

दूर-दिल

मेरी छोटी बड़ी बच्चीयें सब मैं देख कर समझा,
कि भिन्न-भिन्न आदमों हैं साफ़ मेरे दिल के टुकड़े हैं ।

X X X

—'अपनी' बचनवा

दुःख में और दुःख में गार है वो मुश्किल एक है,
वस तरफ़ सारी खुदाई है, इधर दिल एक है ।

X X X

—'मेरे' बचनवा

और क्या जाने कोई दर्द महोबत का मजा,
दिल तुम्हें किसने दिया, इसको वसी के दिल से पूछ ।
दिल मेरा सब कुछ बचाने के लिए मौजूद है,
पूछना क्या चाहिए, तुम्हको यह अपने दिल से पूछ ।
पहले मेरा हाल सुन, फिर सुनके मेरा हाल देख,
देख कर फिर गौर कर, फिर गौर करके दिल से पूछ ।
इस तरह शायद बला है यह कुछ अपना राशी दुःख,
बैठ कर पहले मैं दिल का हाल मेरे दिल से पूछ ।
दोप यह बठती बचानी, एक यह आशावादी शायद,
देख आंखों से मेरी, अपने को मेरे दिल से पूछ ।

दर्द-दिल

वसक दिल की याद, मुन खोते हैं अपने दिल से हम ।
 क्या वहाँ थापदा और लफ्फे फामिल से हम,

X X X

— 'दाफक' इलाहाबादी

यह नदी मुमकिन परे गुमकी 'दाफक' दिल से अलग ।
 गुम निकलते वसकी दिल से यह गुमारा काम है,

X X X

फरानी हम न समके आज तक हसरत भरे दिल की ।

न जाना आज तक हमने, कि राजे इरक क्या शी है,

दिकाजत' कर नहीं सकता हसीनों से कोई दिल की ।

अदायें उनकी नरनर है, निगाहें उनकी खंजर है,

X X X

— 'दूँ' गावी

कभी नगरे जो मिलती है, सो दिल भी दिल से मिलता है ।

भेरी लकड़ीर का लड़ना है उस आँखों के लड़ने पर,

X X X

— 'दाफक' अमादपुरी

जो शीशे से भी नाजक है वह भरे दिल के टुकड़े है ।

जो पत्थर से सिखा है इन हसीनों का कलेजा है,

X X X

—'अकबर' इलाहाबादी

यस देही बाबों से "अकबर" मेरा जल जाता है विल ।
 यह देही कहते देही यह आजो अब तुम रात को,
 और देही दो देही साहेब कि प्यारता है विल ।
 कन्द करला है जो ठठने को भी करमाते है यह,
 अपने अपने दौर पर हर शकश पढ़लाता है विल ।
 शील आगर काय में खुश, है बरहमान बुतलाने में,

X X X

—'गनी' इलाहाबादी

बसो आकर मेरी आंखों में ठठरो तुम मेरे विल में ।
 देही आरमान है विल फा, देही आंखों को हसरत है,
 हर देही, हर बक, हर दम मेरे विल में रहे ।
 'आरजू' है सिर्फ़ इतनी ऐ ख्याले हुस्न पार,
 एक मेरे विल में रहे, एक आपके विल में रहे ।
 'दर-उरफत' के जो दो हिस्से हो वो आए मजा,

X X X

और फिर कहते हो, तुमको चाहते है विल से दम ।
 'सैकड़ों' जुगों सितम टां हो मेरी जान पर,

दर-विल

हमारे दिल को लेकर शौक से महफिल में घूम रहे थे,
 हमारे दिल को लेकर ही बात उसकी दिल में घूम रहे थे ।

—'खिरशीद' जलनशी

कभी देखा है उठना दूँ का, और बैठना दिल का ।

न पूछो, हम नशीबो, बस यही हालत है मेरी भी,

दिलरूपा होकर रहा करते हो मेरे दिल से दूर ।

इसको कहते हैं मोहबबल, इसका अरका नाम है,

—'अरशद' आलनशी

इलाका? और ही जाला है इस बेताबिये दिल में ।

कभी जब मुझे बालों को मैं दिल से मुलाता हूँ,

बोला देता है मुझको दूँ उठ उठ कर मेरे दिल में ।

मुझे बारी बारी रानों को जब घुम घाव आते हो,

—'बिस्मिल' इलाहाबादी

हाल है जो दिल में दिल ऐसा किसी का दिल भी है ।

कहने सुनने के लिए यों तो हैं दिल वाले बहुत,

यह है 'बिस्मिल' की गुरबन' दफन है टुकड़े यही दिल के ।

जो आये हो, वो हाथों को उठाकर फाटिहा पढ़ लो,

X

X

X

यह घर हुआ है क्योंकि गैरी को उस मुशकिल में गुम रखते
 निकालो अपने तरकश से हमारे दिल में गुम रखते।
 अभी यह जांचता हूँ मैं जफा क्या है यफा क्या है
 गुन्हे दिल दूंगा इंसानीय अपने दिल में गुम रखते।
 मुझे इन्कार गम से इस तरह वस शोख ने रोका,
 यह दिल का राज है दिल में छिपावो दिल में गुम रखते।
 यह मिट जायेगा खूद मिट कर सफाई अपनी कर लेगा,
 मेरे दिल की तरफ से क्यों ऊँचते दिल में गुम रखते।
 बहुत अच्छी यही तदवीर है क्यों ऊँचते दिल में गुम रखते।
 न अपने दिल में हम रखें न अपने दिल में गुम रखते।
 मोहब्बत के लिये हलाक नही निको मुहब्बत को,
 यहाँ से क्यों निकालो इसको अपने दिल में गुम रखते।
 अगर खिन्मत है यावर तो वह दिन भी आये जाते हैं,
 अदबान की जगह मेरी मोहब्बत दिल में गुम रखते।
 गुन्हे दिल दे रहा हूँ मैं तो मतलब क्या है और इसका,
 यह मतलब है कि मेरी याद अपने दिल में गुम रखते।
 मरते ऐसे कौनों को लिये क्या कहेखाने की,
 गिरवते मोहब्बत को वस अपने दिल में गुम रखते।
 —'रहे' मारती

कर लिया ऐसे कही और ठिकाना दिला का।
 बहिष्की का जो कही हाल तो करमाते हैं,
 और इस पर तुम्हें जाना है जगाना दिला का।
 हरे की शकल हो तुम, गुरु के पुत्र हो तुम,
 दंग जाया बेरी अखिर में समाना दिला का।
 निगड़े शर्म को शत्रुत्व किया, काम किया,
 क्यों कर आया तुम्हें गुरु से जगाना दिला का।
 पूरी मूर्खी भी जाननी नहीं जाती अब तक,

X X X

आद आता है हमें हाथ जमाना दिला का।
 अन्धी मूख वें शत्रु दृष्ट के जाना दिला का,

X X X

—'शावली' वैश्वकी

मैंने यह जाना कि गोया यह भी भरे दिला में है।
 देखना उकरीर की लज्जा कि जो समने कही,

X X X

अरुण' नगरी इरक के काविल नहीं रहा,
 जिस दिला वें राज था मुझे यह दिला नहीं रहा।

यार मरव के यर से 'दाग' समक में आला,
वही दाना' है, फटा जिमने न याना दिल का।
—'दाग' दृढ़दिल

इन शीख^२ हसीनों^३ से जो माया^३ नहीं होता,
कुछ और बला होती है, वह दिल नहीं होता।
विस्मय^४ तो हुए सैकड़ों ही सड़ वडप कर,
ठंडा भरे काविल का मगर दिल नहीं होता।
दिल मुमसे लिया है तो बरा योलिये हंसिये,
चुटकी में मसलने के लिये दिल नहीं होता।
कहते हैं इस आदने में हुस्न अपना न देखे,
अच्छी कही, मायोंको के क्या दिल नहीं होता ?
आदिक के पहले जानें को देना भी है काफ़ी,
गम दिल का जो देला है, अगर दिल नहीं होता।
कहिदार कसे दिल के खाने की वसी से,
रागी मगर इस पर भी मीरा दिल नहीं होता।
कहते हैं कि दिल दे के बड़पते हैं जो आदिक,
दोला है कहीं दूढ़, अगर दिल नहीं होता।
दोहर का निकला, नहीं इसकी कोई पहलू,
मायसे^५ भी कखल मीरा दिल नहीं होता।

X X X

१—युक्तिमान, २—बुधाल, ३—माया, ४—दृढ़दिल, ५—मायसे

कहिए सब को 'दरवाजा' दिल गया।
 बोले वह सोने से भरे रख के द्या, X

X X X

—'दया' देलवा

आपका इसमें डकारा तो नहीं दिल अपना।
 हाक में उसको भिलापने, न दूने देरगिना,
 बाय से छूटते ही छूट गया दिल अपना।
 बाय में फसले खिजा और नशेमान बीरान,
 एक दोकर कमी बनाका है कमी दिल अपना।
 ऐसी-इसतरा में धर है तो मुसीबत है धर

X X X

—'अमीर' लखनवा

वहपने, वहपने के लिए दिल नहीं होता।
 तुम और कोई काम 'अमीर' इसको सिखा दो,
 हर आजाद में, हर जोड़ में क्या दिल नहीं होता।
 जब पूर्व-मुहब्बत में यह लज्जत है तो धारव,
 वहपन है वह क्या जाने धर दिल नहीं होता।
 और उसने लगाया वह पढ़ा आके जिन पर,

नावक' नाम से मिरकल है बचाना दिल का,
 दूरे वर के बचाना है ठिकाना दिल का ।
 कहे है क्या मैं कहे सिन के फसाना^२ दिल का,
 कहे भाड़ा कहे दुखड़ा है पुराना दिल का ।
 होय वर पहली मुलाकाल में मरा ककना,
 और उसका वर बगाना दिल का ।
 सीना छलनी किये देवी है निगाहें बनकी,
 देवे फिरते है यह तीर ठिकाना दिल का ।
 जी जाने आपका ऐसा, कि कमी जी न मरे,
 दिल बगाना कर जो सिन आप फसाना दिल का ।

x

x

x

--'दया' देवता

क्या दिलावर है कोई उसका कलेशा देवे,
 जिसने बेबाब मुहंवर में मरा दिल देला ।
 बसने जब हुकम दिया था मुझे मर जाना था,
 'दया' तू दे न सका जान तेरा दिल देला ।

x

x

x

--'अमीर' लखना

जमा है सीने में पैकां तीर के,
 सेकड़ी दिल है अगर एक दिल गया ।

दूर-दिल

जिहां दिशाओं को होजाय फूसला दिल का,
 अब आ चुका है लंबों पर मोआमला दिल का ।
 किसी से क्या हो लपटा 'मं मुकामिला दिल का,
 जिनार को आँख दिखाता है, आबला दिल का ।
 खिदा के वास्ते कर लो मोआमला दिल का,
 फि पर के पर ही मं हो जाय फूसला दिल का ।
 गुम अपने साथ ही वसवोर अपनी से आओ,
 निकाल लो कोई और मरगला दिल का ।
 न जान देते बन आय, न जिनदा रहते बन,
 बिगड़ गया है यह कैसा मोआमला दिल का ।
 भिलो भी है कभी आदिक को दाद दुनिया मं,
 हुआ भी है कभी कम्बख्त फूसला दिल का ।
 निगाहें मस्त को गुम होशिवार कर देना,
 यह कोई खेज नहीं है मुकामिला दिल का ।

X X X

'अमीर' खिलना

दिल मं लो लोके दिवा ली मुके मुठी खाली,
 फिर कहा देख लिया होय से जाना दिल का ।
 धीर पर धीर लोगा कर वह कहा करते हैं,
 क्यों लो गुम खेज सम्मले से लोमाना दिल का ।

'अमीर' भूलभुलैया है कबसे भैस,
तथाह क्यों न फिरे इसमें काफिला दिलका।

—'अमीर' लखनवी

X

X

X

वह मैं इस वज्र-हेली में, अजीब अदले महकिल हूँ,
हेजारी जान की एक जान, लाखों दिल का एक दिल हूँ।

भगा है गुमनाम क्या ऐ सीजे-बलकव^३ बाह कायल हूँ,
जिगर भी लोटता है इस लमजा^४ में कि मैं दिल हूँ।

छिपाया था बहल कन्वल को दुजा^५ दीवा नजारी में,
एकार बटी भरे पहलू में, जो होशियार हूँ, मैं दिल हूँ।

वामाना क्या सताया, फलक^६ आगार^७ क्या देगा,
मुसीबत इससे बट कर और क्या होगी कि धोखे हूँ।

जरा से जलते राम पर यह शिकायत होने लगी हूँ,
युक्त जिस तरह बाहे रख तेरा कौरी, तेरा दिल हूँ ?

न रोके से कके वह चलते चलते कहे गये यह भी,
ठहर जाऊं जो ठहराने से, क्या मैं आपका दिल हूँ।

—'दीपा' हैदराबादी

X

X

X

ठटक पड़ी उस शोख का पहलू से अब पहलू मिलाना,
गोया किसी ने रख दिया संदल का फाहा दिल के पास।

१—शोख, क्या २—संसार की सभा, ३—शैम की आग ४—जाना-
दिया, ५—जुगई हुई शोख, ६—आकाश, ७—आकलक ।

श्रीं कहा 'कस' हूँ मैं, बोले हमें देते हो 'दम,

हसरत हमारी है अभी बाकी, गुम्हारें दिल के पास।

धीरे लगा है नाच ने बाका कभी दिल को थार,

जाने 'अमीर' नाचवा, पहुँचो बड़प कर दिल के पास।

—'अमीर' खसना

X X X

एक तेरे ही न रहने से रहा क्या क्या खूब

कोई हसरत न रही, अब से रहा तू दिल में।

साथ हर सांस के आजावा है फूलों की महक,

बस गई है सुले आरिज की जो खूबसूरत दिल में।

जोफर इस दरजा बड़ा है, कि इलाही" गोवा,

दरु भी अब भी बदलना नहीं पहलू दिल में।

धीरे की तरह से खलती है निगाहें दिल पर,

तेरा की तरह बरत जाते हैं 'अबक' दिल में

अब वह आते हैं, निकलने के लिए हो तेरा

आरज धीरे रही छिपके कहीं तू दिल में

X X X

अरुंधिर्षा तेरी है नजारी में मेरी तू दिल में,

तेर है, आंखों में परियाँ हैं परीक- दिल में।

1—साधार, 2—कमजोर, 3—दुखों की तरह सुलगा, 4—
गौर, 5—दुख, 6—तलवार, 7—भी, 8—परी की तरह सुलगा।

और इस गम से युक्त बातें उन्हें जानूँ दिला में ।
 और भी तो जो समझता है उन्हें नूँ दिला में ।

X X X

—'दया' देलवती

नहीं एक दिना, सब सुनिकल यही है,
 कि वह दिला वही और यह दिला यही है ।
 छुपाते हो मुझे मैं क्यों देखा पाया,
 यही है, यही है, यही दिला यही है ।
 बहपन से जिसके बसलगी हो तुमको,
 मेरी जान इस काम का दिला यही है ।

X X X

—'अमीर' ललनती

जोक देना है कि आया मुझे यही जब आया,
 कई पहलू के बदलने का भी पहलूँ दिला में ।
 दिख में होना नहीं, सब नहीं, सब नहीं,
 वर भी ये दूँ दिला, अब क्यों है पड़ा नूँ दिला में ।
 फरते हैं तीरो फर्मा दोनो है मेरे, मेरे पास,
 औरी बात है न सिजना है न अयक दिला में ।
 आज इस आज से देखो न मुकादिल हो "अमीर",
 इसी लिडकी से वर आता है आरूँ दिला में ।

विमान शिखरों किण्वं शं. फिस दिल से ।
 मिट गये हम तो सब यह जमाने करी,
 वीर वीरा खटक गया दिल से ।
 अब इधर करे तो मैं जाऊँ,
 आँख मिन्नती है परावर दिल से ।
 वरं गया कलवपुं समाशापी,
 जो हुआं निकल गई दिल से ।
 अब जुबा से वरं फिर नहीं सकती,
 किस वुरी आँख, किस वुरे दिल से ।
 मेरी बसवोर भी वरं देखते हैं,
 हमको जीना पड़ा मरे दिल से ।
 बेगई आसः अहं-भाविलः से,
 दिल बदल लीजाए मरे दिल से ।
 नाचो आवां' वरंगा मुदिकल से,

X X X

—'अमीर' लखनवा

ही चुका हकती अरमां का तो खून से काविल,
 फिस पर अब लीखे है छुरियां तेरे अवरु दिल में

दर-दिल

कैसे उलफत में पड़े जान के लाले दिल को,
 इस मुसीबत से अब अल्लाह निकाले दिल को।
 हूँ मैं बेकस, कोई हम दम है न यमज्वार में,
 दर्द ही वठके समझले तो समझले दिल को।
 दूर कर आबले नामूर हुए जाते हैं,
 हाथ छलनी किये देते हैं यह छाले दिल को।
 कोई पमाल भी करने को नहीं खेला है,
 मुझको दुःख है, कहे किसके हवालें दिल को।
 हो गया सदैव तड़प कर तो वह बोले है है,
 क्या हुआ आज में बाढ़ने वाले दिल को।
 दिल किया नख जो मैंने, तो कहा उकरा कर,
 जान अपनी जिस दुःख हो वह पाले दिल को।
 अपने मतलब को इन्हे जाती है क्या क्या बातें,
 नाज से मांगते हैं, नाजों के पाले दिल को।
 सब युका खूब, मुहब्बत के मन्ने दिल देकर,
 लाली, जाऊँ मैं, करो में हवालें दिल को।

X

X

X

—'दया' देलवनी

आतिये' इरेक में मजा क्या है,
 पहिले खसको "दया" के दिल से।

दर्द दिल

सबल मायां है कि माला है वह पर्वों के तले,
कुछ भी समझें तो फलेले से जाग ले दिल को।
फलेले है शौक से आयें मेरी महकिल में 'अमीर',
साथ जाएं न मगर लोटने वाले दिल को।

—'अमीर' लखनऊ

X X X

वह हम नहीं, तो रही कौन से हिसाब में दिल
कहां से लायें जो था आलमों शायद में दिल
हमारे शौक शायदों की याँ लिये ससरी
इधर जगह में खंजर चपर जगह में दिल
उठे जो सुबह को सोने वं हिय रखे लु
उड़पवा लोटला देखा है कोई खगल में दिल
उसे नहीं वह दिल-आजारे चाक करता।
को देख लेता है लिक्ला किसी फिदाव में दिल
वह पजामें नाज है, जाना वहां संभल कर 'दा' में दिल
गार-नर हिय से जायेगा इजंतार' में दिल

X X X

हसरत आई यह वन्दे देख के विस्मिल मुमको,
बुलबुला देखा ही मिल जाय कोई दिल मुमको।

१—जगदीश शर्मा, २—इकबाल खाना, ३—दिल इकबाल
४—महीनी, ५—देवीनी।

निकालूँ किस तरह खारे तमना सख्त मुद्रिकल है,
 वह इस दर से नहीं छूँते कि यह कांटों भरा दिल है ।

X X X

—'अमीर' खलनावा

कौन जाने नहीं देता है भरा दिल मुझको ।
 याद उस शोख की बड़पाती है इसको जो 'अमीर'
 निकली मैं आँस से बाहर वो भिला दिल मुझको ।
 वह निहाह कहेती है किस घर में नहीं भरी जाह,
 मुद्रिया देता है असमान भरा दिल मुझको ।
 बन सँवर कर जो निकलते हैं इधर से वह कभी,
 कहीं खँचे लिये जाता है भरा दिल मुझको ।
 कुछ खबर मुझको नहीं है कि कहाँ जाता है,
 कभी रो लेता हूँ मैं दिल को कभी दिल मुझको ।
 शाये राम कौन तरस खाके है रोने वाला,
 खार दिन को भी जो मिल जाय तेरा दिल मुझको ।
 फिर मजां तुझको खला हूँ मैं दिल आजारी का,
 दिलखार बन के सताता है भरा दिल मुझको ।
 बुदकियां लेता है पहलूँ में भरे आठ पहर,
 दिल भरा तुझको मिले और तेरा दिल मुझको ।
 तू ही कुछ दई से आगाह, मैं बेदर्दी से,

यों आके बैठे आदिके कर्मिण के समाने
आंख आंख के ही समाने, दिल दिल के समाने।

X X X

—'दाग' देहलकी

करीने से अजब आरास्ता काजिल की आदिल है।
बाहों सर बाहिप सर है, जहाँ दिल बाहिप दिल है।
मुझे तुमसे ककवाट, और तू मुझे से माया है।
मेरा दिल अब तेरा दिल है तेरा दिल अब मेरा दिल है।
यह क्यों तेरा आदा से मुजाविर? मानिन्द विस्मिल है।
इलाही क्या कलिले के भी आन्दर दूसरा दिल है।
अला देखे तो बाजी कौन ले जाये मुहब्बत में।
दुमि अपने नाम के दिलवर, यह अपने नाम का दिल है।
यह ए सेवाद? एक परख निकल आया रिहाई का,
आसरीरों में तेरे जो छुट जाये यह मेरा दिल है।
जगदरस्ती तो देखो हाथ रख कर मेरे सीने पर,
यह किस दावे से कहते हैं हमारा ही तो यह दिल है।
कभी कहता है उसकी सी कभी कहता है मेरी सी,
यह उसका है मेरे परख में याद या मेरा दिल है।
मेरे शौके साहबल पर जरा तू देख कर काजिल,
तेरी लजवार में दम है तेरे पैकान में दिल है।

दूरे-दिल

भीरे निगाहे नाच जय आया है इस तरह,
 'दीवार ही गया है जिगर' दिल के सामने।
 'दिलो वो सैर माहिए बेआव' की तरह,
 'रख कर मेरे सड़पते हुए दिल के सामने।
 'गर्द है जुर्म इस्क की आन्जाम' की सजा,
 'आया है ख अर का किया दिल के सामने।
 'कमल माना ही नहीं इसको क्या करूँ,
 मैं होय जोड़ता हूँ बहल दिल के सामने।

—'दया' देहलवा

X

X

X

है इसीर यह सैर काजिल के,
 आया अरमा निकाल दूँ दिल के।
 दिले दिल बरदा दया से पूछो,
 यह बहं रागादर" हूँ दिल के।
 वीर आते ही दिल को ख निकले।
 अच्छे आये यह सुदहं दिल के,
 —'आमीर' खलनावी

X

X

X

इस भी नाराज, खका हम भी है, क्या सुनिकल है,
 न हमारा न तुम्हारा वो यह किसका दिल है।

१—कबला, २—मखली पिना पानी के, ३—अन, ४—तलवार,
 ५—भूदया, ६—दावा करेवाला।

मित्रता से भी न वर हेरे- मित्रता से आया,
 किस जगह जाँच लड़ी, वर कर्ता दिल आया ।

X

X

X

—'अमीर' लखनऊ

न वरदा रहे खीनरे इतक रस ही
 मही का जो वर देससे दिल धरी है
 कली फूल की मल के लटकी से बसने
 कही मुकसे कर्ता आपका दिल धरी है
 मरे दिल को तुम्हारा के मुकसे वर वर
 यही वरस किसकी थी वर दिल धरी है ।

X

X

X

—'दाग' देहली

जान दिल में तो हुआ करती है सब के, लेकिन-
 व जो है जान मेरी, जान में मेरा दिल है ।
 व-करती ने किया है सहीगाला, ऐसा,
 कि कभी दिल में जिगर है, तो जिगर पर दिल है ।
 वसने बाग़ार में जो रक्खा है कदम,
 यही आवाज बनी है दिल है, दिल है ।
 वर इस आदरा से परहे में मेरे आ देता,
 मैं न समझा वसे दिलपर है कि मेरा दिल है ।

वर्द-दिल

X X X

—'दाग' देहलवा

जब वरुण देहल है उसकी वह मायल होकर,
 लोहित आप भी जी चाहता है दिल होकर ।

X X X

—'अमीर' ललनवा

वह कहते हैं कि लो फिर आगया क्या बेहया दिल है ।
 मुझे तो दर्द है तेरा मुझे है क्या यह बेदर्दी,
 मेरे पहलू में भी दिल है तेरे पहलू में भी दिल है ।
 कलज से लगा, आँखों से मल, इतना न दुआ कर,
 इसे ललितों से मलता है अरे यह तो मेरा दिल है ।

X X X

—'दाग' देहलवा

मन कहते थे न कर डरक पर्योर्मा' होना,
 भी किया तेने वह आगे तेरे से दिल आया ।
 दीनो दुनिया से गया तो यह समझ ले से 'दाग'
 पणव आया अगर उस युव पे तेरा दिल आया ।

क्या मातृ-द्वय-कर्म, वह शोभा? जान है दास्य मा, जल कर कफालि पदं गये जय दाय आया दिल के पास । करवान जाऊँ पास? के, यह क्या मित्री दूनिया मित्री, एक दौलत आवेद? है, एक सलतत है दिल के पास । है तुमको दाद इन्तहा, क्या दम चुराने का गुप्त, यह दिल से अपने दूर रख, रक्खा नहीं कुछ दिल के पास ।

x

x

x

—'अमीर' लखनऊ

पूरी धराने बीरे कालि । मयादे? हो रहे है क्या दिल से । हो चुके दिल हो हैस के परमाणु । प्यार अब कीजियेगा किस दिल से । यह जो व-परदा समाने है । परदे सब वर गये मेरे दिल से । दिल जो सज्जिया से गेने मन दाल, यह हुआ किस तरह मेरे दिल से । मेरे परदे से न वर से दूरे । प्यार करता हूँ से मुझे दिल से । यह फलिया परदे के वीर गये । आह निकली नहीं आती दिल से ।

देवी है इस बात ने उसे सजला की अलक, धरती किया है इतनी, आदना रखकर दिल के पास।

—'दाग' देहली

दिल से दिल किस लिये नहीं मिलता,

और ही कुछ है आपके दिल में।

वह सुनो न हम कहें 'कमाल',

आरजू है इस कर दिल में।

क्या बलि फिर दिलकषा पर अजतिवार,

अपने ही काँव में अपना दिल नहीं।

आह न आसमान से मिल के,

धूम उड़ाए धुँ में दिल के।

हाथ रखने से भी न जब उठे,

बोले कुरवान आपके दिल के।

मैं आवत है छिप के रहने की,

न निकली परदे दिल से।

फूलों पर है यह कोई वीर के जाने से बल,
 या रहे वर भरे दिल में या भरी दिल निके जाय ।

X X X

मिले दो बार धाम अथ भी यह छुट्टी मुश्किल से,
 जो दिल को डरक है यम से, तो यम को डरक है दिल से ।

X X X

—'कमाल' ललना

“कमाल” अपना दुई अपने ही दिल के आगे ।

कई सुनने वाला नहीं करते हैं हम,

खिजाँ है भरे बालों दिल के आगे ।

कड़क खिजाँ की गरज बादलों की,

दिल आगे जिगर के जिगर दिल के आगे ।

शबहिसा कहता है दुई अपना अपना,

X X X

करी जाती है डरते दिल से ।

रू ही से बेकसी मना ले जाय,

दो आकर निकल गये दिल से ।

आप कब आयें है कि अब अरमान-

वठ रहे है धुँ भरे दिल से ।

जल के निकला हूँ उसकी महफिल से,

दुई-दिल

राय करदही भजत, अब किसी से दिल नहीं मिलता।
 लोको^३ इरक में मुझको कोई कामिल नहीं मिलता,
 × × ×

—'दाग' देहलवा

अकसोस है कि दिल की न हो दिल को इतलाअ,
 इस शौक की नहीं वुत कातिल को इतलाअ,
 × × ×

—'अकबर' देहाहावादी

हिनेजा^३ एक शौला यादे रफतगा^३ में दिल से उठता है।
 हुई सुख कि दुनिया से मेरा दिल उठ गया लेकिन,
 × × ×

धारी का जनको दाला है, तो मुझको नाश है दिल पर।
 वही अलकाम^३ विजरेरह^३ है वही मानी है संजिल पर,
 × × ×

—'शौक' लखनवा

राह से पलटा के मुझको फिर वही दिल लेके जाय।
 उसके घर से अब न पलद, और अगर पलदें भी में,

क्या और से मुश्किल हो सकती है दिल को,
जब आप ही ने कुछ न खबर ली है दिल को।
मेहमान है जिस राज से सीने में बेरी याद,
आप ही है जहाँ है वही है दिल को।
या इसकी खबर भी नहीं लेते कभी अब तो,
या फिर उन्हें रूनी भी कितनी है दिल को।
दिलला के मजक और भी बढ़पा गये इसकी,
की याद दवा आपने अच्छी है दिल को।
जब कौले बका होर युका में तो फिर अब क्या,
जो है हुए है आप तो बागी है दिल को।

X

X

X

इन निगाहों के इशारों से बचोपब बढ़पी,
इन इशारों के मशगली को भोरा दिल समझा।
हुन ने राज किये इशक की तकलील' हुई,
न खबर आपकी समझी, न भोरा दिल समझा।

X

X

X

यह हुसनी इशक ही का काम है एक हम कर किस पर,
मिथान उनका नहीं मिलता, हमारा दिल नहीं मिलता।

चार दिन पहले जो तर्कदीर में था अब वह नहीं,
 इस नहीं, तुम ही नहीं, शोक नहीं, दिल है नहीं।

X X X

जबव इस बात का उस शील को क्या है सके कोई,
 जो दिल लेकर कहे कन्वल तो किस दिल से मिलता है।

X X X

निकली फलक^३ से कब किसी मायल को आर्य,
 फिर वसप आर्य भी भरे दिल की आर्य।
 दुनिया सरयें तंग है, मरुतर^४ है जाय^५ तंग,
 आशिक कहां निकाल सके दिल की आर्य।

X X X

— 'अकबर' इलाहाबादी

वह तिरछी निगाहों से मुझे देख रहे हैं,
 इस वक्त में ही और इलाही^६ भरे दिल की।
 तसकी^२ के लिये रहते थे सोने पे जो हर हम,
 अब है इन्हीं हाथों से खराबी भरे दिल की।
 कहना तो बहुत कुछ है मगर क्या कहूँ "अकबर"
 अकसोस कि सुनना नहीं कोई भरे दिल की।

एवं गंगा सेरीं लहे, उनको जो आते देखा,
खुद न पहचान सका मैं कि मेरा दिल है यही।

—'दाग' देखा—

X
X
X
X

जो गंगा पर्यटकर लोड देते हैं, सुदृश्यत दृश्यात्मक,
मैं तो जब यह कन्दर करता हूँ मचल जाता है दिल।

X
X
X
X

रहे बलकत, वह कंचा है कंचा भी जिससे टरती है,
कदम रखता है दिल इसमें निघरि, हिम्मत दिल हूँ।
जो यों ही लहेगा लहेगा दंग हसरत की तरफी है,
आज क्या रकता रकता मैं सदाया सुते दिल हूँ।
वह दंगो आरजू है जिससे दिल दंगल बचता है,
कोई परहेज नहीं मिलता जिसे दुनिया में वह दिल हूँ।

—'अकबर' देखादेखा—

X
X
X

गिरह जो पड़ गई रंजिशा में वह सुदिकल से निकलोगी,
न वनकं दिलसे निकलोगी न भरे दिल से निकलोगी,
मुफ्त आता है वुम पर रदम मेरा यह न खुलवाओ,
कलिया लोड देगी वह दोगी जो दिल से निकलोगी।

वासीरें देखक यह है तेरे अहंते" हुस्न में,
मिठी का भी वनाये तो हो बेकरार दिल ।

X

X

X

हैं "दया" वनसे और कहे माजराय दिल ।
कहे न हो यह सुनके घुरा मान जायों,
पों हम गिरे पड़े तो बहिन हूँ लोय दिल ।
गया न वस गली में दिल अपना किसी जगह,
एक एक दिन में ऐसे हजारों सवाये दिल ।
क्या अब भी मरके ज़ुलम के असमान रहे गये,
फेरे हुए को दाय कहे तक मनाए दिल ।
खिला है दम खका भरे सीने में हर वर्षी,
मिन सुन के दाय दाय बिगार दाय दिल ।
पवरा के वज्म' नाज से आखिर पड़े उठ गये,
अच्छी कही कि हम से कहे माजराय दिल ।
ग्यों कहे के दिल का हाल करे दाय दाय दिल,

X

X

X

—'दया' देहेलकी

न करना कल्ल हमको बरना देसरा 'दया' बन बन कर,
गुहारे दिल में बँधिगी हमारे दिल से निकलेगी ।

देहे-दिल

लहू वन कर मिले हैं आँसुओं में कैसे पहचानूँ,
 खुदा जाने, जिगर के टुकड़े हैं या दिल के टुकड़े हैं।
 वही सूरत, वही रंगत है मिलती जुलती ऐ क्रांतिल,
 तेरे पैरों के टुकड़े हैं, कि मेरे दिल के टुकड़े हैं।
 उड़ी फिरती हैं लेकर धुलधुलें मिनकार^१ में जिनको,
 वता गुलची^२ यह गुब्बे^३ या किसी के दिल के टुकड़े हैं।
 उधर चुटकी में नावक और कमां है हाथ में उनके,
 इधर सीना सिपर^४ है, और मेरे दिल के टुकड़े हैं।
 न पूछ ये नावक^५ अफगान क्यों धरे हूँ हाथ सीने पर,
 वताऊँ क्या जहाँ दिल था, वहाँ अब दिल के टुकड़े हैं।
 पड़े हैं तीर जिसकी चुटकियों से मेरे सीने पर,
 वह गिन ले उंगलियों पर अपना कितने दिल के टुकड़े हैं।

—“शफ़क़” अमादपुरी

×

×

×

अमादश जब हुई यह रौनको महफिल पसन्द आया,
 प्रज़ल^६ के दिन से खुद हुस्ने अज़ल^७ को दिल पसन्द आया।
 तारा यह इन्तखाब^८ उसकी निगाहे नाज़ का देखो,
 के आँसू धन रहा था जो वह खूने दिल पसन्द आया।

×

×

×

१—चोंच, २—फूल चुननेवाला, ३—कली ४—पंजने को ढाल बनाना, ५—तीर चलानेवाला, ६—आदि, ७—ईश्वर, ८—चुनाव।

दर्द-दिल

यह शोखिये^१ निगाह सरे वज्र^२ ता
चाकी किसी के सीने में अब दिल नहीं^३

×

×

×

क्या सोचना तश्ल्लुके पिनहाँ^४ का वाद^५ दफ्न,
जो कुछ था उसके दिल में मेरे दिल में रह गया।
जब वज्रा^६ एहतियात से नाता^७ रुका कोई,
तसवीर ज़ब्त बन के मेरे दिल में रह गया।

×

×

×

बहारे गुल को, कब वह सैर के क़ाबिल समझते हैं।
हर एक दूटे हुए गुल्ले को मेरा दिल समझते हैं।
सितम^८ यह है, कि मुझको जौर के क़ाबिल समझते हैं।
गज़ब यह है पराए दिल को वह कब दिल समझते हैं।
हमारी खातिरें होती हैं, बहलाते हैं बातों में,
उदू^९ को वज्र में हमको वह अपना दिल समझते हैं।
फहे देती हैं यह तिरछी निगाहें वक्ते आराइश^{१०},
वह अपने आइने को भी हमारा दिल समझते हैं।

१—घंघकटा, २—सभा में, ३—कब तक, ४—दुपा हुआ, ५—
दफ्न होने के बाद, ६—तरोजा, ७—पराहना, ८—जुझ, ९—दुश्मन,
१०—संवरने के समय।

नहीं मखसूस^१ अब कोई दिले वेताब का पहलू,
 जहाँ हो दर्द सीने में वही हम दिल समझते हैं।
 वह तसवीरें उदू होगी, यह पैकाने सितम होगा,
 जिसे तुम जान कहते हो, जिसे हम दिल समझते हैं।
 शहीदाने मुहब्बत^२ को कभी मरते नहीं देखा,
 यह वइ राजे^३ अजल^४ है जिसको जिन्दा दिल समझते हैं।
 मेरे पहलू में खारे आरजू जब से नज़र आया,
 जहाँ काँटा उन्हें मिलता है मेरा दिल समझते हैं।

—'बेखुद' देहलवी

× × ×

भी सुन ले अरे ओ साज़े-इशरत^५ छेड़ने वाले,
 जब आवाज़ आती है मेरे टूटे हुए दिल से।

—“जोश” मलीहारवादी

× × ×

अजल^६ के दिन जिन्हें लेकर चले थे तेरी महफ़िल से,
 वह शोले आभ तक लिपटे हुए हैं दामने दिल से।
 फ़लक पर डूबते जाते हैं तारे भी शबे-फुरकत^७,
 मगर निस्वत कहाँ उनको मेरे डूबे हुए दिल से।

१—ख़ासतौर से, २—प्रेम के शहीद, ३—भेद, ४—मौत, ५—
 आनन्द वीणा, ६—आदि, ७—बिरह की रात।

ददें-दिल

समझ कर फूंकना इसको जरा ये दागे ना
 बहुत से घर भी हैं आवाद इस उजड़े हुए दिल से
 कहीं का मैकदा^१ रुख तक न करते इस तरफ मैक
 जो मिल जाती कभी एक बूंद भी मैखानये दिल से
 —“जिगर” मुरादावत^२

× × ×

खुदा महफूज रखे इरक के जज़वाते^३ कामिल से,
 ज़मी गरदूं^४ से टकराई, जहाँ दिल मिल गया दिल से।
 ठहर जा तेरी महवीयत^५ की एक तसवीर तो ले लूं,
 अरे खिलवत^६ में वार्ते करने वाले मुज़तरिव^७ दिल से।
 अभी पैवस्त^८ है काफ़िर निगाहें शोख अदा उनकी,
 किसी दिन देखना बिजली गिराऊंगा इसी दिल से।
 यह क्या था यों तो वह देखा किये दम तोड़ना मेरा,
 मगर अंगड़ाई ली एक रूह निकली जब मेरे दिल से।
 “अज़ीज़” एज़ाले^९ हुस्ने रूह^{१०} परवर की कोई हद है,
 हज़ारों दिल बना डाले मेरे टूटे हुए दिल से।

—‘अज़ीज़’ लखनवी

× × ×

१—मधुराला, २—शराबी, ३—भाव, ४—आकाश, ५—लक
 लीन रहना, ६—एकान्त, ७—बेतरार, ८—मिले हुए, ९—अद्भुत
 १०—आत्मा को सुरक्षित देने वाला।

जो आये हो दिले पुर आरजू में सरत मुश्किल से,
 उन्हें मैं दिल से जाने की इजाजत दूँ तो किस दिल से ।
 सुनेगा शिकवै गम जी लगा कर कोई मुश्किल से,
 मेरे हसरत भरे दिल का, मेरे हसरत भरे दिल से ।
 कोई पहलू रहा थाकी न अब इज़हारे^१ उलफ़त का,
 वह दिल लेकर यह कहते हैं हमें चाहोगे किस दिल से ।
 मोहब्बत का फ़साना^२ कुछ न होने पर भी सब कुछ है,
 सुनो मेरी ज़वां से, इसको तुम समझो मेरे दिल से ।
 गुदाज़े-इश्क^३ ने नशतर को शरमिन्दा किया क्या क्या,
 न निकली खून की दो चार वूँदें भी रगे दिल से ।

—‘नूह’ नारवी

×

×

×

वह लड़ते हैं लड़ें हमको नहीं गम इस लड़ाई का,
 असर होगा मोहब्बत में तो दिल मिल जायगा दिल से ।
 जो तुम मुझसे मिलो तो कुछ यकीं आये मोहब्बत का,
 वह क्योंकर मैं समझ लूँ दिल में अब दिल मिल गया दिल से ।

—‘विस्मिल’ इलाहाबादी

×

×

×

१—प्रेम जताना, २—क्रिस्ता, ३—प्रेम लगान ।

विजलियां टूट पड़ीं जब वह मुक़ाबिल से
मिल के पलटी थीं निगाहें कि धुंआ दिल से उठा

×

×

×

मुज़दये^१ तसक्की^२ से बेताबो के क़ाबिल होगया,
दिल पे जब तेरी निगाहें जम गईं दिल होगया ।
कर के दिल का खून क्या बेनाबियां^३ कम होगईं,
जो लहू आंखों से दामन पर गिरा दिल होगया ।
तूर^४ ने जल कर, हज़ारों तूर पैदा कर दिये,
ज़र्रा ज़र्रा मेरे दिल की खाक का दिल होगया ।

×

×

×

तेरी तिरछी नज़र का तीर है मुश्किल से निकलेगा
दिल इसके साथ निकलेगा अगर यह दिल से निकलेगा
तसब्बर^५ क्या तेरा आया क़यामत आगईं दिल ;
कि अब हर बलबला बाहर मज़ारे दिल से निकलेगा

×

×

×

तूने फिराक़े^६ दिल हमें दीवाना कर दिया,
फिरते हैं पूछते ख़धरे दिल जगह जगह ।

१—मुशफ़्फ़री, २—तसक्की, ३—बेबनियां, ४—एक पहाड़
नाम है जिस पर हज़रत मूसा ईश्वर का दर्शन करने गये थे, ५—बलबल
६—फिराक़े ।

सरगुज़स्त^१ दर्द है हर ज़र्रा खाक का,
धी है दास्ताने यमें दिल जगह जगह ।

x x x

दिल खोये हुए वषों गुज़रे हैं मगर : अब भी,
आंसू निकल आते हैं जब दिल नज़र आता है ।
रूदाद^२ मोहब्बत की तसवीर है हर आंसू,
हर कतरये खूनी में एक दिल नज़र आता है ।

—'फ़ानी' बदायूनी

x x x

खाकें किसको मैं ऐ इश्क ताक़त जज्व कामिल की;
बचे बैठे हैं वह, यां टूटी जाती हैं रंगें दिल की ।
ही एक परदये तसवीर बुतखाने के क़ाविल था,
क आंसू गिरते ही दामन पे सूरत खिंच गई दिल की ।

—'अज़ोज़' लखनवी

x x x

जाकर कोई जो यौर की महफ़िल में रह गया,
सब हौसला वह दिल का मेरे दिल में रह गया ।
यह सरगुज़स्त है मेरे दर्दें फिराक की,
दिल में पला, वह दिल में बढ़ा, दिल में रह गया ।

निकला न आज तक कभी अरमां वि-
 पहलू बदल बदल के मेरे दिल में रह^१
 यों तो हज़ारों आये हज़ारों निरुल^२
 अरमान है वही जो मेरे दिल में रह गवा^३
 ऐ हमनशी^२ न हालते सोज़े-दुरू^३ को
 दिल का बुखार घुट के मेरे दिल में रह^४
 गो "दाग़े" देहलवी न ज़माने में रह^५
 ऐ "नूह" उनका दाग़ मेरे दिल में रह गवा^६

×

×

×

हज़ारों वहम होते हैं निगाहे नाज़ कातिल पर,
 कभी है वह मेरे सर पर, कभी है वह मेरे दिल पर।
 यहीं मज़लूम की फ़रियाद क्या बेकार जायगी,
 पड़ेगा मेरे दिल का सत्र एक दिन आपके दिल पर।
 चढ़ाया ज़ब्त उलफ़त ने मेरे सोज़े मोहब्बत को,
 जो निघली थाह दिल से वन के बिजली गिर पड़ी दिल पर।
 वहाँ भी सोज़े-फ़ुरक़त^४ है, वहाँ भी दर्द उलफ़त है,
 उठाता हूँ ज़िगर से हाथ तो रखता हूँ मैं दिल पर।
 जिसे फल तुम सरामें नाज़ से पामाल^५ करते थे,
 ज़माने की नज़र है आज उस हसरत भरें दिल पर।

१—मिखन, २—साथी, ३—दिल की जलन, ४—गिरह की ज़ब्त,
 ५—साथ से फ़ुषजना ।

बैठाया तो है हमने उनको अपने दहने पहलू में,
मगर चाई तरफ़ फिर भी निगाहे नाज़ है दिल पर ।

×

×

×

यह हमारा शरल ठहरा दिख^१ में दिन रात का,
देख लेना यास से हसरत भरे दिल की तरफ़ ।
कुछ लगावट, कुछ तगाफुल^२, कुछ शरारत, कुछ हया,
देखता है वह कनखियों से मेरे दिल की तरफ़ ।
वह जो इसके वास्ते तो यह है उसके वास्ते,
अपनी सुरत की तरफ़ देखो, मेरे दिल की तरफ़ ।
उनका आना तो ज़रा आगोश^३ में दुश्वार है,
तीर भी उनके नहीं आते मेरे दिल की तरफ़ ।
गर नहीं मिलती जगह तीरे निगाहे नाज़ को,
बायें पहलू में वह आ बैठे मेरे दिल की तरफ़ ।
क्या कहूँ ऐ "नूह" हाले कसरते दाये फिराक,
कुछ कलोजे की तरफ़ है कुछ मेरे दिल की तरफ़ ।

—'नूह' नारबी

×

×

×

जहाँ^४ की खाक छानी, खाक उड़ाई खाक हो होकर,
अगर याद आगया मिट्टी में मिल जाना मेरे दिल का ।

दर्द-दिल

[1]

मज्जा सुनने का जब है, दिल से सुनिये, दिल की बातों को,
फ्रसाना^१ वेदिली से सुन रहे हैं आप, क्यों दिल का।

—‘विस्मिल’ इलाहाबादी

×

×

×

दोनों का हाल इश्क में शामिल नहीं
में होश में रहा तो मेरा दिल नहीं रहा।

×

×

×

बराबर की खलिश,^२ खूनावा अफ्रशानी^३ मुक्काविल की,
मोहब्बत ने बना दी एक हालत, दीदओ^४ दिल की।
न तोड़ ए दस्त-गुलची^५ बाग में फूलों की कलियों को,
कि उनमें कुछ शवाहत^६, पाई जाती है मेरे दिल की।
“जिगर” मैंने छुपाया लाख दर्द-इश्क को लेकिन,
बयां कर दी मेरी सूरत ने सब कैफियतें दिल की।

×

×

×

आज क्या हाल है यारब सरे महफिल मेरा,
कि निकाले लिये जाता है कोई दिल मेरा।
सोजे-यम^७ देख न बरवाद हो हासिल मेरा,
दिल की तसवीर है हर आवलये दिल मेरा।

१—त्रिस्ता, २—खटक, ३—खून बरसाना, ४—आँसू, ५—माँकी
का हाथ, ६—रंग-रूप, ७—दुख की जलन ।

यों मिले इश्क में मिट कर मुझे हासिल मेरा,
 ज़र्रा ज़र्रा तेरे कूच का बने दिल मेरा ।
 सुबह तक हिअ^१ में क्या जानिये क्या होता है,
 शाम ही से मेरे क्रावू में नहीं दिल मेरा ।
 मिल गई इश्क में ईजातलवी^२ से राहत^३,
 गम है अब जरत मेरी, दर्द है अब दिल मेरा ।
 पाया जाता है तेरी शोखीये^४ रफतार का रंग,
 काश पहलू में धड़कता ही रहे दिल मेरा ।
 दौड़ता फिरता है रग रग में लहू के हमराह^५,
 अब मिलेगा न तुम्हें दिल की जगह दिल मेरा ।
 हाय उस दर्द की क्रिस्मत जो हुआ दिल का शरीक,
 हाय उस दिल का मुक्कदर^६ जो बना दिल मेरा ।

—‘जिगर’ सुरादावादी

×

×

×

जो दिल नहीं रखता, कोई मुश्किल नहीं रखता,
 मुश्किल नहीं रखता, जो कोई दिल नहीं रखता ।
 क्यों “यास” क़फस^७ में भी वही ज़मज़मा^८ सनजी,
 ऐसा तो ज़माने में कोई दिल नहीं रखता ।

—‘यास’ अज़ीमावादी

×

×

×

१—बिरह, २—दुख को इच्छा करना, ३—आराम, ४—चालाकी
 धंधलता, ५—साथ, ६—क्रिस्मत, ७—पिंजड़ा, ८—राग अलापना ।

जो खुल जायगा राजे^१ इरको उलफत अहले^२ महकिल पर
तो हसरत सब को आयेगी, मेरे हसरत भरे दिल पर।
कफ़स में देख कर मुझको तबीयत उसकी भर आई
नहीं मालूम क्या गुज़री मेरे सैयाद^३ के दिल पर।

—‘विस्मिल’ इलाहाबादी

×

×

×

मैंने माना कि तड़पना नहीं मुश्किल कोई,
कहीं ऐसा न हो खुल जाये रंगे दिल कोई।
शोखियों ने, किसी आलम में ठहरने न दिया,
जब कहीं सीनये बेदिल में बना दिल कोई।

—‘अज़ीज़’ लखनवी

×

×

×

हंसी देखा जिसे आशिक़ हुआ दिल,
नेहायत है हमारा चुलबुला दिल।
न तो दिल लेके मेरा ग़ैर का दिल,
कि जैसे एक वैसे दूसरा दिल।
न रोए जो वह है किस काम की आंख,
न तड़पे जो वह है किस काम का दिल।

१—भेद, २—सभावाजे, ३—महलिया।

न दंगे ले के वह ऐ हज़ते "नूह",
किसी का दिल फिर उस पर आपका दिल ।

—'नूह' नारवी

×

×

×

दोस्त कोई इसके मुक़ाबिल नहीं होता,
। आपसे मिल कर भी मेरा दिल नहीं होता ।
ते धे मलक^१ रोज़े-अजल^२ इश्क़ ग़जब है,
दर्द वहाँ जाय जहाँ दिल नहीं होता ।
छेड़ कि पहलू में रक़ीबों को बैठा कर,
इते हैं कि तू मुझसे तो वेदिल नहीं होता ।
ती है जो यह दर्द में लज्जत तो इलाही,
इलू में हर एक जोड़ के क्यों दिल नहीं होता ।

×

×

×

आराम कब मलाल^३ के शामिल नहीं रहा,
में उबाव में भी मौत से ग़ाफ़िल नहीं रहा ।

×

×

×

पाने उलफ़त^४ का छुपाता किस क़दर मुश्किल हुआ,
जब किसी को हमने चाहा जब किसी पर दिल हुआ ।

—'बख़ुद' देहलवी

×

×

×

दर्द-दिल

साहबे महफ़िल हुआ किस दिन भरी
तुम हमारे दिल में ठहरो, क्यों रहो तुम दिल से।

× × ×

खून रो देता है अकसर खूने हसरत देख कर,
पूछते क्या हो तुम अपने गमज़दे^१ के दिल का रंग।
एक सूरत, एक पहलू पर कभी रहता नहीं,
आज कुछ है और कल कुछ है हमारे दिल का रंग।

× × ×

इसको देंगे गम उठाने के लिये मुश्किल से।
दिल न होगा, तो तुम्हें चाहेंगे फिर किस दिल से,
दिल नहीं मिलता जो दिल से, तो यह मिलना कुछ
आप भी उस दिल से मिलिये, मिलते हैं जिससे
आज इश्क़ो हुस्न में फिर इनक़जाव^२ आने को
आज दिल को फिर मिला फर देखते हैं दिल से
दिल से वह बातें किसी के दिल की जब सुनते हैं
उनसे हाले दिल फहें भी तो फहें किस दिल से
देखने में चार तिनकों के संवा कुछ भी
अपने होते आशिया^३ को फूँकें किस दिल से।

—'विस्मिल' इब्नायत

× × ×

१—दुश्मन, २—परिपतन, ३—पोंगळा।

३ कयामत की कशिश यह जज़्बये कामिल में है,
 उनके हाथ में, पैकां हमारे दिल में है।
 तलातुम^१ सा तो बरपा सीनये धिस्मिल में है,
 न जाने तू है खुद या दर्द तेरा दिल में है।
 न का हर रंग पिनहाँ^२ मेरी आबो^३ गिल^४ में है,
 ३^५ मेरे सीने में, फ़रहाद^६ मेरे दिल में है।
 १ यह एजाजे^७ मोहब्बत नावके कातिल में है,
 ती वह भी दिल है, जो क़तरा लहू का दिल में है।
 त्ला अल्ला यह मेरी मशक़े तसव्वर^८ का कमाल,
 हूँ इस महफ़िल में, और महफ़िल की महफ़िल दिल में है।
 क में गुम गश्त^९ गीये शौक़ रास आई मुझे,
 जो मेरे दिल में हसरत, अब वह उनके दिल में है।
 १ वहारें उस पे सदके^{१०}, लाख गुल उस पर निसार^{११},
 १ लहू का एक क़तरा जो हमारे दिल में है।
 १ तड़प के साथ आजाती है मुझमें ताज़ा रूह,
 क है, इतना असर तो इज़तराबे^{१२} दिल में है।

—'जिगर' सुरादाबादी

×

×

×

१—जोश, २—छुपा हुआ, ३—पानी, ४—मिट्टी, ५—मजनुं जो
 तला पर आशिक़ था उसका असली नाम है, ६—यह शोरों पर आशिक़
 १, ७—अद्भुत, ८—ध्यान, ९—सो जाना, १०—मिछावर,
 ११—निछावर, १२—बेकरार।

दर्द-दिल

(कौन कहता है कि लैला परदये महमिल^१
कौस को हसरत है जिसकी वह तो उसके
काम क्या करना है कोई काम अब करना
क्या मेरे दिल में है, अब मरने की हसरत दिल में
तुमने करने को जुवां से कर लिया एकदारे
वह भी है दिल में हमारे, जो तुम्हारे दिल में
दूढ़ने वाली निगाहों का पता मिलता
इसके दिल में, उसके दिल में, कोई किसके दिल में
आप हैं मेरी नज़र में, आप मेरे दिल में
कौन है किसकी नज़र में, कौन किस के दिल में
आज खुश तकदीर मुझसा कौन है, कोई
दिल मेरे पहलू में, वह दिलबर^२ भी मेरे दिल में
कोई आया भी, मिला भी, अपने घर भी चल
जो मेरे दिल में तमन्ना थी, वह अब तक दिल
—'तूह'^३

×

×

×

इस तरफ भी हो निगाहे लुत्फ़ ऐ आलम नवाज़^३,
एक जहाने आरजू, आवाद मेरे दिल में है।

१—परदा (यह अरथ फी तरफ़ जनानी सवारी के लिए ब्य
घना है) २—मियतन, ३—संसार के मालिक ।

करता मैं तो होता और भी रुसवाये खल्क^१,
 पनीमत है कि दिल का राज मेरे दिल में है ।
 तरफ़ ज़ौक्रे^२ परसतिश, एक तरफ़ शौक्रे^३ सजूद,
 कावे के सनम खाना^४ हमारे दिल में है ।
 के आगे न पूछो, इसमें है एक खास राज,
 वता दंगे तुम्हें, जो कुछ हमारे दिल में है ।

—‘बिस्मिल’ इलाहावादी

×

×

×

मुझको वह लज्जत मिली एहसास^५ मुश्किल होगया,
 रहते रहते दिल में तेरा दर्द भी दिल होगया ।
 ऐ निगाहे यास^६ यह क्या रंग महफिल होगया,
 मैंने जिस दिल की तरफ़ देखा मेरा दिल होगया ।
 हिज्र की शब^७ का गुज़रना सख्त मुश्किल होगया,
 एक एक तारा मेरा डूबा हुआ दिल हो गया ।
 इश्क वनसे करके गम सहने के काबिल हो गया,
 पहले दिल ही दिल था, अब दिल बन गया, दिल हो गया ।
 इश्क में गम के सेवा क्या मुझको हासिल हो गया,
 दिल इधर आया, उधर आया गया दिल हो गया ।

१—संसार में बदनाम होना, २—इन्द्रना करना (पूजा करना),
 ३—सर झुकावना (साधा घिसना), ४—मंदिर, ५—खयाल, ६—
 नेराशा, ७—बिरेह की रात ।

दर्द-दिल

हमने माना दिल नहीं लेकिन कमी दिल की
तीर पहलू में जो आ बैठा वही दिल हो
हमने क्या देखा, यह देखा उनका जलवा देखा
सुबतिलाये^१ दर्दों गम अच्छा भला दिल हो
में कहूँ मेरा है, तो इसको न मानेगा
आपकी मुट्ठी में जाकर आपका दिल हो
वह निगाहे नाज़ से देखें न देखें इस
तीर इतने आगये तरकश मेरा दिल होगा
चार रातें, चार दिन, और इस कदर
दूसरे तुम होगये, अब दूसरा दिल होगा
कूये-जानाँ^२ से उड़े थे चन्द ज़रें खाक
बन गया कोई जिगर उनमें कोई दिल होगा
हुस्न का जलवा देखाता और क्या अपना
अत्र^३ में विजली बना आगोश^४ में दिल होगा।
दिल निकाले पर निकलवाये कोई मुमकिन
दिल में रहते रहते तीरे नाज़ भी दिल हो गया।
सैफ़ड़ों तूफ़ान उट्टें इश्क में कुछ गम नहीं
“नूह” का दिल भी जनावे नूह का दिल हो गया।

—‘नूह’ नारदी

×

×

×

१—बला में, २—प्रियतम की गली, ३—बदली, ४—गोद।

१ आज़ार से यह फैज़ हासिल हो गया,
 २ यम रपता रपता अब मेरा दिल हो गया ।
 कर, या क़हर^४ कर, इससे मुझे मतलब नहीं,
 तुम्हको दे दिया दिल अब तेरा दिल हो गया ।
 अदा से जो चुभा था आपका तीरे नज़र,
 रहते अब वही दिल में रगे दिल हो गया ।
 १ उलफ़त ने देखाया ऐ "ज़या" उल्टा असर,
 मेरा दिल, वह मुझसे और बढ़दिल हो गया ।

—'ज़या' देवानन्दपुरी

× × ×

बसअते^५ दुनिया ए ददों यम में कामिल हो गया,
 बढ़ते बढ़ते एक क़तरा खून का दिल हो गया ।
 रसको घर बैठे कमाले इश्क़ हासिल हो गया,
 दिल से तुमने कह दिया जिस दिल को वह दिल होगया ।
 हुस्न की दुनिया में फैली है इसी की रोशनी,
 आसमाने इश्क़ का तारा मेरा दिल हो गया ।

—'विस्मिल' इलाहाबादी

× × ×

१ दृष्ट के अब खंजरे कातिल नहीं मिलता,
 इल मिलते हैं मेरा सा मगर दिल नहीं मिलता ।

दर्द-दिल

अब लुफ़ गमो शिकवये^१ बातिल नहीं मिलता,
वह आँख नहीं मिलती है वह दिल नहीं मिलता ।
वे गानगोओ इश्क में बस फर्क है इतना,
जब दर्द नहीं मिलता था अब दिल नहीं मिलता ।

—‘जिगर’ मुयद्दत

×

×

×

किस गज़ब की यास बुर्रिश^२ खंजरे काविल^३
साथ दिल के ज़ख्म खाती है जो हसरत दिल में
जामे जम भी आइना था कोई काविल नाब
जिसमें वह मुँह देख ले वह आइना इस दिल में

—‘यास’ in^१

×

×

×

या रब कोई किसी से न अपना लगाये दिल,
किस दिल से मैं बयान करूँ मानराय^३ दिल
हम क्यों फिन्तूल इसको दिफाज़त किया करें,
आता हो आये दिल, कहीं जाता हो जाये दिल ।
दिल का लगाव आप समझते हैं दिल्लीगी,
अब क्यों है हाय हाय जिगर, हाय हाय दिल ।

१—हरा गिजा, २—चट, ३—हा.ज ।

धिया में दिल्लीगी का भजा दिल्लीगी से है,
ये न जो किसी पे वह दोज़ख में जाये दिल ।

—'नूह' नारवी

×

×

×

जो कहें वह कर देखायें इसके हम आमिल^१ नहीं
दो ज़वाने क्यों नहीं, किस वास्ते दो दिल नहीं ।
ज़र्रा ज़र्रा मेरे हस्ती का बना खुरशीदे^२ इश्क,
हुस्न की दुनिया में फिर भी एहतारामे^३ दिल नहीं ।
क्या करूँ ऐ खंजरे गम, क्या करूँ ऐ तीरे इश्क,
हैं तो दो पहलू, मगर दोनों में एक एक दिल नहीं ।
ज़िन्दगी गुज़रे जो बेलुकी में वह क्या ज़िन्दगी,
मुझको एक एक सांस पर हासिल सुकूने दिल नहीं ।
दिल से निकले, लव तक आये, लव से पहुँचे अर्श^४ तक,
दिल ही दिल में जो रहे छुट कर वह आड़े दिल नहीं ।

—'बिस्मिल' इलाहावादी

×

×

×

वह ज़माना और था, अब दिल था, दिल में इश्क था,
अब न वह दिल है, न अब वह चक्करारी दिल में है ।
उनके इस कहने ने, मुझको मार डाला वक्त क़त्ल,
और भी कोई तमना, अब हमारे दिल में है ।

१—धमल करना, २—सुरज, ३—आदर, ४—आकाश ।

दर्द-दिल

चोट खाये हमनशी^१ यों तो जमाना होगया,
दर्द लेकिन पेशतर से, अब ज्यादा दिल में है।

—‘आविद’ शाहजहाँ

×

×

×

निशां कामिल यही है नामावर^२ हैं क्यूे^३ कानि^४
कहीं टुकड़े गरेबां के कहीं टुकड़े मेरे दिल के
जमाने से जुदा कानून है सरकारे उलफ्त^५
लड़ीं आँखें किसी से और टुकड़े हो गये दिल के

—‘खलिश’ गजर

×

×

×

“गिरह कैसी पड़ी है, इस तरफ आओ ज़रा देखो,
तुम्हारी जुल्फ में वेशक मेरा खोया हुआ दिल है।
किसी पहलू, किसो करवट नहीं मैं चैन लेता हूँ,
“नज़र” उस शोख पर जब से मेरा आया हुआ दिल है।

—‘नज़र’ गोरखपुर

×

×

×

क्या खबर उनको पड़ी किस किस जगह मेरी निज़र^६
मह एसे आज वह पामालिये^७ दिल में रहे।

—‘फ़साइत’ लखनऊ

×

×

×

१—झापी, २—रूत, ३—प्रियतम की गली, ४—गॉब से मन्ना।

को डर है कि सांस लेने में
जायें न आबले दिल के।

—‘आज़म’ फरेवी

×

×

×

जो वाकिफ़कार हैं, वह सख्त मुश्किल इसको कहते हैं,
दिल आज़ारों^१ को हम ने दिल दिया, दिल इसको कहते हैं।
चुरा ले जाओ सीने से, उड़ा ले जाओ पहलू से,
मगर यह जान लो हसरत भरा दिल इसको कहते हैं।

×

×

×

यों वह नज़र लड़ा के तगाफ़ूल^२ से काम लें,
यों दिल के साथ साथ मिटे दिल की आरजू।
निया में अब तुम्हें यही क्या काम रह गया,
स-दिल की आरजू, कभी उस दिल की आरजू।
रते नहीं वह क़त्ल मुझे इस ख्याल से,
कले न दम के साथ कहीं दिल की आरजू।
आँगा फिर न मैं कभी इसको निकाल कर,
देर फिर के दिल ही दिल में रहे, दिल की आरजू।
मको तमाम उम्र यह अरमान ही रहा,
यों कर निकालता है कोई दिल की आरजू।

१—दिल दुस्ताना, २—ग़क़लत।

दर्द-दिल

ऐसा कोई नहीं जिसे हसरत कोई न हो,
वह दिलरुवा हैं उनको भी है दिल की आरजू।
ऐसा न हो कि पूछ के वह शरमिसार^१ हों,
में क्या बताऊं, क्या है मेरे दिल की आरजू।
घर चाहिए कोई इसे रहने के वास्ते,
क्यों आरजू को हो न मेरे दिल की आरजू।
जिस खूबरू को रुबाव में आना मुहाल^२ था,
पहलू में उसको लाई मेरे दिल की आरजू।

—'नूह' काल

×

×

×

रो रहे हैं थाम कर अपना कलेजा अहले रूह
हुस्न की दुनिया में खो बैठे हैं अपना दिल धर
उनका दिल मिल जाय, मेरे दिल से यह दुरगार
आज तक मिलते हुए देखे किसी ने दिल धर
दिल से अहले दिल यह कहते हैं मेरा दिल देख
दिल तो है पहलू में सब के, लेकिन ऐसा दिल धर

×

×

×

फंसेगी रूह ज़हमत में, पड़ेगी जान मुश्किल में,
तुम्हारा तीरे नाज़, अब फरवटें लेने लगा दिल में।

। अखिर अजब आलम रहो बीमारे उलफ़त का,
हारी शकल आँखों में, तुम्हारी याद थी दिल में ।

—‘बिस्मिल’ इलाहाबादी

x

x

x

इस तरह आसान करनी अपनी मुश्किल चाहिए,
घुट के मर जाना, तुम्हें ऐ हसरते दिल चाहिए ।
एक से हैं एक बढ़ चढ़ कर ज़माने में हसी,
किस को ऐ दिल चाहिए, किसको न ऐ दिल चाहिए ।
दिल जो माँगा मैंने तो उसने कहा लाखों तो हैं,
कौन सा दिल माँगते हो, कौन सा दिल चाहिए ।
कोई कहता है कि दिल उलफ़त में हमने दे दिया,
कोई कहता है कि उलफ़त के लिये दिल चाहिए ।
हम बतायें आप क्या जाने अभी आदावे^१ इश्क,
इश्क में पासे वफ़ा ऐ हश्ते दिल चाहिए ।
कुछ दिनों से कोई बड़ाहीं^२ हो गया है जान का,
कुछ दिनों से कोई कहता है हमें दिल चाहिए ।
कह रहे हैं वह कि हम तुम्हसे मिलेंगे हश्^३ में,
हश् उठाना अब तुम्हें ऐ नालये दिल चाहिए ।
हम तो देते हैं यही इश्को मोहब्बत में सलाह,
जो न चाहे आपको, उसको न ऐ दिल चाहिए ।

कम से कम अच्छी तरह रखियेगा रखने की
 लोजिये दिल लीजिये, हाँ चाहिये, दिल चाहिये
 "सोग" हम से वह न पूछे सोगवारी का
 इसके सुनने को फलेजा चाहिए, दिल चाहिये
 —'सोग' बन्दूक

×

×

×

यह देखा रंग मैंने जाके उस क्रातिल की महफिल का,
 न दिल को होश है सर का, न सर को होश है दिल का।
 मिले वह दिलरुबा तन्नाज़^२ ऐ "सिद्दीक" मुश्किल है
 नहीं मिलता है जब आपस में एक एक हर्फ भी दिल का।

—'सिद्दीक' नाम

×

×

×

कोई हाले ज़ार में शामिल नहीं
 आज अपना दिल भी, अपना दिल नहीं।
 यह किसी लायक, किसी काबिल नहीं।
 पहले दिल, दिल था मगर अब दिल नहीं।
 दिल जिसे कहते थे पहले पहले नहीं।
 अब वह कतरा है लहू का दिल नहीं।
 ध्यान है दोनों को अपनी बात नहीं।
 आज या हसरत नहीं, या दिल नहीं।

दर्द-दिल

देखते हैं आप लाखों दागे इश्क,
है यह गुलदस्ता हमारा दिल नहीं।

—'विस्मिल' इलाहाबादी

× × ×

हो कि हसरत खुद बखुद मुश्किल से निकलेगी,
गुम दिल से निकालोगे, सां मेरे दिल से निकलेगी।
यह निकले तो दो उम्मीद उसके भी निकलने की,
दिल पहलू से निकलेगा न हसरत दिल से निकलेगी।

× × ×

क्यों न हम इसको कलेजे से लगाये रखें,
जिस पर उनका भी दिल आया है यह दिल वह दिल है।
दो घड़ी एक जगह चैन से रहती ही नहीं,
वर्क^१ कहते हैं जिसे सब वह किसी का दिल है।

× × ×

हसी में दूसरा गम करने वाला कौन है,
मेरे दिल को रो रहा हूँ बैठ कर मैं दिल के पास।
मेरे इसको पास रखते, लेकिन इसका पास^२ है,
हमारे दिल में है तू है हमारे दिल के पास।
म जो घबराये, तो इतमीनाने खातिर के लिये,
तब के दिल दोस्त आ बैठा हमारे दिल के पास।

दर्द-दिल

हम तेरे लुफ़ो इनायत के हों कायल किस तरह,
दिल की हसरत दिल में है, दिल की तमन्ना दिल के पास।

×

×

×

रह गया वस अब इसी पर ज़िन्दगी का झल
हम करें पहलू से दिल को अपने किस दिल से
—'दूर' है

×

×

×

निगाहे नाज़ से यों मुसकुरा कर देखने वाले,
कभी यह चीज़ तेरी थी, मगर अब तो मेरा दिल है।

—'दौर' है

×

×

×

हमी पर मेहरबां तीरे निगाहे नाज़ काजिल
यह जिक्र वस वक्त का है, जब हमारे पास भी दिल था
सलामे शौक पर, वो बेख़त्री से देखने वाले
कभी थे हम भी दिल वाले, हमारे पास भी दिल था

—'कदौर' लगने

×

×

×

इसको अपने दिल में लाए हैं बड़ी सुरिखल से हम,
अब करें दिल से सुरा बिलकत तो किस दिल से हम।

1]
 ज गया हीला उन्हें, यह तर्क^१ रस्मो राह का,
 दिल बोले बढ़ायें रक्त क्या वे दिल से हम ।
 1 तरफ उसकी फुगां^२, इस सिम्त अपनी रोक थाम,
 ल बहुत आजिज़ है हम से और आजिज़ दिल से हम ।
 3 में जलवा आप का, इसमें है मस्कन^३ आपका,
 4 पने पहलू से जुदा दिल को, करें किस दिल से हम ।
 5 गये पहलू से तुम लेकिन हो फिर भी बदगुमां^४,
 6 र को चाहेंगे तो चाहेंगे अब किस दिल से हम ।

—'कुरता' गयावी

× × ×

वसादारी^५ की कलक भी इश्क कामिल में रहे,
 जो रहा अब तक मेरे दिल में वही दिल में रहे ।

× × ×

मुझे चलना रहे इश्को वफा में सख्त मुश्किल है,
 इधर देखो इधर दिल है, उधर देखो उधर दिल है ।

× × ×

निफलना सख्त मुश्किल, फंस गये हम सख्त मुश्किल में,
 तेरी महकिल में यों हैं, जिस तरह अरमान हों दिल में ।

१—घोड़ना, २—कराइना, ३—रहने की जाह, ४—बुरे भाव,
 ५—सम्पत्ता ।

दर्द-दिल

अगर आगोश^१ में तुम चैन से रहने नहीं
तुम्हारी याद क्यों रहती है हिर फिर कर मेरे दिवस

×

×

×

एक बेकस^२ पर हजारों जुल्म हों, लाखों सितम,
है शिकायत आप से और आपके दिल से मुझे।
वह यह कहते हैं कि वापस इसको दे सकता नहीं,
अब तो उलफत हो गई, कुछ आपके दिल से मुझे।
वे खुदीए शौक में इससे भी हूँ मैं बेखबर,
कहते हैं वह दिल से या वह ऊपरी दिल से मुझे।

×

×

×

क्या कहा अहले मोहब्बत रद्म के काविल^३
सहत दिल जैसा तुम्हारा है किसी का दिल नहीं
वह हमारा दिल था, जो सहता रहा जुल्मो तिरद
आपकी बातें सुनें दुरमन का ऐसा दिल नहीं।

×

×

×

'यनी' में यह समझता हूँ तो उनका तीर क्यों खींचूँ,
फलेजे में समायेगा, जो निकलेगा मेरे दिल से।

—'यनी' इलाहाबादी

×

×

×

पूछना जो कुछ हो तुमको वह इसी कामिल से पूछ,
 दिल की बातें दिल से सुन, दिल की हकीकत दिल से पूछ।
 हम से वह कहता है ले जाने को हम तैयार हैं,
 दिल न जायगा कि जायगा, यह पहले दिल से पूछ।
 यह तगाफुल^१ है बुरा, यह बेरुखी अच्छी नहीं,
 रंज दिल का, दर्द दिल का, हाल दिल का दिल से पूछ।
 "नूह" क्यों उल्फत में तू लेता है औरों को सलाह,
 राय जो कुछ पूछनी हो तुमको अपने दिल से पूछ।

—'नूह' नारवी

×

×

×

म कभी आकर जो देखो तो तुन्हें मालूम हो,
 भय वह दुनियाये तमजा^२ क्या मेरे दिल में नहीं।

×

×

×

वचेगा फिर बसद^३ मुश्किल किसी से,
 लगाओ तो किसी दिन दिल किसी से।
 लड़ा करती हैं आँखों से तो आँखें,
 नहीं मिलता किसी का दिल किसी से।

दर्द-दिल

यह खुल जाता है सब पर वे कद
नहीं छुपता है हाले दिल कितो
—'विस्मिल'

×

×

×

हर हसीं एक शमां है, हर जा है एक महफिल मुके,
दे दिया 'कुदरत' ने परवाने का शायद दिल मुके।
मिल गया क्रिस्मत से एक हमदम^२ हमें मुश्किल मुके,
में शवे राम दिल को देता हूँ तसल्ली दिल मुके।
—'बर्क'

×

×

×

रक्खी मुदाम^३ खारे तमन्ना ने छेड़ बरक
इसके मजे को आवलाये दिल से पूद्विरे।
क्या आप में है बात उसे जानता हूँ मैं
क्या गुल में वस्फ^४ है यह अनादिल^५ से पूद्विरे।
ररके-रकीव^६, जोरे-बुतां^७, दाये आर
चाहत में जो मजे हैं मेरे दिल से पूद्विरे।
—'अस्तर' नगीनके

×

×

×

१—ईश्वर, २—साथी, ३—हमेशा, ४—गुन, ५—डुबड़,
६—दुरामन की जलन, ७—मायूशों के तुफन।

खूंखार चल कर अब नई मुश्किल में है,
 तुम्हारे हाथ में है कुछ हमारे दिल में है।
 तरह और उस तरह, दम हर तरह मुश्किल में है,
 में दिल है मेरा, या तीर मेरे दिल में है।
 के वेदाद शायद ले गया हो अपने साथ,
 अरजू का जिक्र कैसा, वहस अब तो दिल में है।
 सको चाहें किस तरह हम किसको देखें किस तरह,
 आलम है नज़र में, एक दुनिया दिल में है।
 ता^१ रपता मिट गये वह सब हमारे जौको शौक,
 तहा यह है कि अब हसरत की हसरत दिल में है।
 रसिशे^२ ददें मोहब्बत से, मोहब्बत खुल गई,
 रे ही दिल में नहीं, यह आपके भी दिल में है।
 तिल्ला अल्ला, दास्ताने आरजू का सिलसिला,
 ह चुका सब कुछ, मगर फिर भी बहुत कुछ दिल में है,
 युक्त^३ करता हूँ कि मेरी हसरतें निकली नहीं।
 जिस क़दर थी दिल की पूंजी वह अभी तक दिल में है।
 खारे^४ सहरा खुद कफ़ेपा^५ से अलग हो जायेंगे,
 आप वह कांटा निकालें, जो हमारे दिल में है।

१—धीरे-धीरे, २—पूछगड़, ३—धन्यवाद, ४—जंगली कांटा,
 ५—तलुवा।

दर्द-दिल

क्या न तूफाने सखुन^१ से शाद हों अहले^२ सखुन,
एक नया पहलू जनावे "नूह" के हर दिल में है।

—नूह^३

X

X

X

क्या गिला क्रातिल से, क्या शमशीरे^३ क्रातिल से
रंज जो पहुँचा, वह पहुँचा, इश्क में दिल से
आज बरसों में मिला मौका यह मुश्किल से
दिल के बस दो हफ्तों कहने हैं, तेरे दिल से
उनका जलवा कह रहा है, मैं तो हूँ चारों
देखने वाला जो देखे दीदये^४ दिल से
वह यह कहते हैं अगर पहलू में तेरे दिल
दिल में क्या रखेगा तू चाहेगा किस दिल से
जान जब मैंने कहा, उसको तो वह कहने
होगई अथ खास निस्वत आपके दिल से
कर दिया "विस्मिल" को उस क्रातिल ने विस्मिल
इस कदर कह कर, नहीं तुम चाहते दिल से

X

X

X

कशमकश^५ में फँस गये, जहमत में मुश्किल में रहे,
आप वे समझे हुये क्यों गौर के दिल में रहे।

१—कविता, २—कविगण, ३—तलवार, ४—दिल से
५—भंडा।

तो अपना शरीरके हाल मुश्किल में रहे,
 नहीं रहते, तुम्हारी याद ही दिल में रहे।
 कही यह बात तूने ऐ गिरफ्तारे कफ़स^१,
 न हो तो क्या ख्याले आशियाँ^२ दिल में रहे।
 ही तिनके में तिनके, जो बनायें आशियाँ,
 वही गुल है जो मिनकारे^३ अनादिल^४ में रहे।
 बुतों की आरजू, इश्क़े खुदा के साथ साथ,
 बुतखाना^५ भी अपने क़ाबये दिल में रहे।

—‘विस्मिल’ इलाहाबादी

×

×

×

क्या फ़ायदा रोने धोने से, जब इसका कुछ हासिल ही नहीं,
 क्या दर्द सुनायें अपना जब, सीने में तुम्हारे दिल ही नहीं।
 आँखों को रंग नहीं भाते, कानों को राग नहीं भाते,
 पीते थे जिसके सहारे हम सीने में अब वह दिल ही नहीं।

—‘जिगर’ वरैलवी

×

×

×

तस्मां नज़रों में यों लायेगा मुश्किल से मुझे,
 तम लेना ही पड़ेगा नालये दिल से मुझे।

१—पक्षी जो फ़ैद में हो, २—घोंसला, ३—फूल, ४—चोंच,
 ५—पुत्रपुत्र, ६—नेंदर।

दर्द-दिल

उनके दिल को मैं दोआयें देके खुश करता हूँ रोज,
देखना है अब कि वह कोसेंगे किस दिल से मुझे।
आसमां को दे दिये तारे बनाने के लिये,
जिस कदर ज़रें मिले खाकिसतरे^१ दिल से मुझे।
खो दिया दुनिया से 'अफ़सर'^२ आखिर इस कमबख्त ने,
और क्या इसके सेवा उम्मीद थी दिल से मुझे।

—'अफ़सर'—

X

X

X

जिसे कहते हैं वारे इश्क वह मुश्किल से उठ
हमारे दिल से उट्टेगा, हमारे दिल से उठ
यह क्या तुम ज़न्ते सोजे^२ इश्क की ताक़ीद इतने
जो दिल में आग लगती है धुआँ भी दिल से उठ
यह हैरत हमको आती है तुम्हारे नाते बंध
जो दुनिया से नहीं उठता वह क्योंकर दिल से उठ

X

X

X

क्या जाने कोई और मोहब्यत के वाक़यात,
इनको जो पूछिये, तो मेरे दिल से पूछिये।
इसको भी याद है गमे फुरक़त^३ का माजरा,
मुझसे न पूछिये तो मेरे दिल से पूछिये।

१—गण, २—नेम को फिंगरी, ३—विरह।

दर्द-दिल

पुरसिरो मिज्ञाज तगाकुत^१ के साथ है,
दिल से पूछते थे उसी दिल से पूछिये ।

× × ×

किसी से वे वसीला कोई दुनिया में नहीं मिलता,
मिलाने से किसी का दिल किसी के दिल से मिलता है ।
हमें बावर^२ नहीं आता, हमें बावर नहीं होता,
जो सुनते हैं किसी का दिल किसी के दिल से मिलता है ।
वह आयें, या मुझे बोलवायें, तो मैं उनको समझा दूँ,
नज़र से यों नज़र मिलती है, दिल यों दिल से मिलता है ।
तुम्ही से तेरी आँखें अक्सर आईने में लड़ती हैं,
जो मिलता है तेरा दिल तो तेरे ही दिल से मिलता है ।

× × ×

लाये^३ रंजो घम होना ज़रा मुश्किल भी है,
या दिल जिसने तुमको यह उसी का दिल भी है ।
खे पहलू में आये किस तरफ़ वह तीरे नाज़,
ने जानिय है जिगर भी, आयें जानिय दिल भी है ।
निगाहे नाज़ का मफ़हूम^४ कुछ खुलता नहीं,
दली भी दिल से है और आरजूये दिल भी है ।

—'नूह' नारवी

× × ×

१—गुरुकुत, २—यक़ीन, ३—पज़ा में, ४—समझ ।

दर्द-दिल

इस तरफ कुछ और सूरत उस तरफ कुछ और हाल,
एक दिल का लुक क्या, हम तुम अगर एक दिल नहीं ।
रोजो^१ शब इसके तड़पने लोटने से काम है,
'वर्क'^२ मिस्ले वर्क^३ काचू में हमारा दिल नहीं ।
—'वर्क' बयापुरी

× × ×
हीं वह सर, कि सौदा हो तुम्हारी जुल्फ का,
जो जो फिदा तुम पर हो, ऐसा दिल नहीं ।
—'अलिश' गयावी

× × ×
काम होना चाहिये वार्दों से कुछ हासिल नहीं,
अब मेरी उम्मीद भी, बजहे सुकूने^३ दिल नहीं ।
—'सीमाब' अकबराबादी

× × ×
लगा कर, तुमसे हमने किस कदर सद्मे सहे,
कहें अब हाले दिल, काचू में अपना दिल नहीं ।
—'कमर' बनारसी

× × ×
थे किसी काबिल कभी हम, अब किसी काबिल नहीं,
वह जवानी, वह समंगें, वह जिगर, वह दिल नहीं ।
—'दासिद' अजीमाबादी

× × ×

दर्द-दिल

हैं बहुत नादिम^१ जमाने पर भरोसा करके हम,
अब खुला हर एक के सीने में हमारा दिल नहीं।

—'नातिक' गुलाब

×

×

×

बेवफा से मिलके यह भी बेवफा हो जायगा
यह खबर होती, तो करते एतवारे दिल नहीं।

—'अखतर' नागपुरी

×

×

×

हम वही हैं देख लो दिल भी हमारा है वही,
तुम वही हो देख लो, अब वह तुम्हारा दिल नहीं।
खुद ही गुम हूँ क्या बताऊँ मैं तुम्हें ऐ वे खुदी,
दूढ़ कर तूही बता, पहलू में है, या दिल नहीं।
दिल सितानी^२ हो चुकी, अच्छा दिल-आजारी^३ सही,
दर्द ही तेरा रहे, पहलू में जिसके दिल नहीं।

—'शफ़क' आमामदपुरी

×

×

×

एखतलाफे^४ रंग से, वह रौनके महफ़िल नहीं,
दिल तो है पहलू में सब के, एक सब का दिल नहीं।
बसमें^५ हस्ती में ठहर कर, हमने देखा हर तरह
और तो सच कुछ है, लेकिन इमविसाते^६ दिल नहीं।

१—शरामन्दा, २—दिल खोना, ३—दिल दुखाना, ४—बद-भाव,
५—संसार को समझना, ६—आनंद।

बात बन बन कर बिगड़ती है, तो है इसमें यह बात,
 डालते थे जो असर दिल पर, वह अहले दिल नहीं ।
 एक के दम से, जहाँ में दूसरे की है नमूद^१,
 दिल नहीं, तो हम नहीं, इसरत नहीं तो दिल नहीं ।
 खींचिये आकर ज़रा पहलू से तो खुल जाय राज^२,
 आप कहते हैं कि मेरा तीर जुज़वे^३ दिल नहीं ।
 अपनी हाजत^४ पर करे, औरों की हाजत का लेहाज़,
 यों हमारा, यों तुम्हारा, यों किसी का दिल नहीं ।
 आपके गमज़ों^५ को भी आते हैं क्या क्या जोड़ तोड़,
 दिल नहीं पहलू में, लेकिन फिर भी मैं बे दिल नहीं ।
 —‘नूह’ नारवी

× × ×

शिकवये गम पर हमारे हँस रहे हैं दोस्त भी,
 हो गया मालूम, अब दुनिया में अहले दिल नहीं ।

—‘मदनी’ कलफत्तवी

× × ×

खून की लहरों में रह रह के चमक उठता है कुझ,
 एक विजली है, मेरे सीने में शायद दिल नहीं ।

—‘आगाज़’ बरारी

× × ×

दर्द-दिल

जो आंसुओं से बुझ नहीं सकती किसी तरह,
 मड़की हुई वह आग मेरे दिल के पास है।
 अब मुझको दूर रहने का शिकवा नहीं रहा,
 दिल उसके पास है, वह मेरे दिल के पास है।
 उट्टा जो हाथ जोक़' से, सौ मुश्किलों के बाद,
 वह यासो^१ यम के साथ मेरे दिल के पास है।

×

×

×

तमाशा दिखाये जो दोनों जहाँ का,
 ज़रा आप देखें तो, वह दिल यही है।
 —'बिस्मिल' इलाहाबादी

×

×

×

जो तेरे नाज़ का बिस्मिल नहीं है,
 हमारी राय में वह दिल नहीं है।
 कभी उनकी झलक देखी थी मैंने,
 मेरे फ़ावू में अब तक दिल नहीं है।
 जिसे नफ़रत हो अच्छी सूरतों से,
 नहीं है, वह नहीं है, दिल नहीं है।
 यह खोज़ाये, कि रह जाये, तुम्हें क्या,
 हमारा है, तुम्हारा दिल नहीं है।

तहोवाला' किया उल्फत ने ऐसा,
 जहां था, उस जगह अब दिल नहीं है।
 गुजरती है बड़े आराम के साथ,
 मेरे पहलू में जब से दिल नहीं है।
 जरा आँखें मिलाकर फिर तो कहिए,
 हमारे पास तेरा दिल नहीं है।
 कभो तुम जिसको खुश होकर निकालो,
 वह मेरी आरजूये, दिल नहीं है।

—'नूह' नारवी

×

×

×

इसी ने मेरी यह हालत बना दी,
 यह मारे^२ आसर्ती है, दिल नहीं है।
 सताता तू है क्यों "राना" को इतना,
 तेरे सीने में शायद दिल नहीं है।

—'राना' ग्वालियरी

×

×

×

वह है सुट्टी में, क्या कहते हो, यह क्यों,
 नहीं है, दिल नहीं है, दिल नहीं है।

—'शाकिर' ग्वालियरी

×

×

×

जो तेरे^१ यार के काबिल नहीं है
कलेजा वह नहीं है, दिल नहीं है।
हम अपने दिल को, दिल समझे हुए हैं
हमारा दिल, तो कोई दिल नहीं है।
अगर दिल है, तो दिल में है मोहब्बत,
मोहब्बत फिर कहां, जब दिल नहीं है।

—'विस्मिल' इलाहाबादी

×

×

×

हयाते^२ चन्द-रोज़ा^३ के, सवानेह^४ मुखतसिर यह हैं,
न देखा जिसने दुनिया को, नज़र भर के वह मैं दिल हूँ।
उबल आये न दरिया आँसुओं का चश्म गिरियाँ^५ से।
न छेड़ए हमनफ़स^६, लिल्लाह^७ मैं दुखता हुआ दिल हूँ,

—'महशर' लखनवी

×

×

×

तुमने देखा था इस अन्दाज़ से क्यों मेरी तरफ़,
अब संभलता है, संभाले से कहीं दिल मेरा ?
लाऊँ मैं इश्क़ में, फिर और कहीं से गर्मी,
तू भी गर साथ न दे, ऐ तपिशो^८ दिल मेरा।

१—तज्जवार, २—जिन्दगी, ३—भोके दिन, ४—इतिहास, ५—घाँस
रोने वाली, ६—साथी, ७—तुदा के वास्ते, ८—तप

घुट के उस अंजुमने^१ नाज से अफसोस 'जलील',
अब बहलता किसी महफिल में नहीं दिल मेरा ।

—'जलील' क़िदवाई

×

×

×

मुरादें बेकसों की भी, कभी बर आती हैं यारब^२,
यह मुमकिन है तो नाकामे^३ तमन्ना क्यों मेरा दिल है ।
मघाज़^४ अल्ला, गुसोबत और वह भी शामे हिजरां^५ की,
न देखलाए खोदा दुश्मन को भी वह हालते दिल है ।

—'महवी' लखनवी

×

×

×

शिकस्ता^६ शीशों को भी मल न आये वे दर्द तलुओं से,
समक हर टुकड़े को, टुकड़ा किसी टूटे हुए दिल का ।

—'खुरशीद' लखनवी

×

×

×

गर असर, कुछ मेरी फ़रियाद को हासिल होजाय,
मेरी हर आहें शिकस्ता भी मेरा दिल होजाय ।

—'इशरत' देहलवी

×

×

×

१—सभा, २—ईश्वर, ३—जिसकी इच्छा न पूरी हो, ४—सुदा
की पनाह, ५—बिरह को शाम, ६—टूटे हुए ।

आवरु इशक में पाये, किसी काविल होजाय,
दिल से जिस दिल को, वह दिल कहदें, वही दिल होजाय।
लज्जते जख्में सितम, यों मुझे हासिल होजाय,
हो जिधर तीर तेरा, दिल से उधर दिल होजाय।
जर्राये कूचये गम को है यों ही वेताबी,
तुम जो रख दो कदम उस पर, हमातन^२ दिल होजाय।

×

×

×

क़यामत है कि नक़शे^३ मुद्दआ जमने नहीं पाता,
वह मेरे दिल में मेहमां रह के मालिक बन गये दिल के।
यह सूरत हो, तो मुझको एतबारे ज़िन्दगी क्यों हो,
बदलते रहते हैं, दम भर में सौ नक़शे मेरे दिल के।

—'विस्मिल' इलाहाबादी

×

×

×

जान कर महवे^४ रुखे^५ काविल मुझे
और तड़पाता है, मेरा दिल मुझे।
दिस^६ की शय और क्या है मशयला,
दिल को मैं रोता हूँ, मेरा दिल मुझे।
शिकवये लुफ़ोश्नायत^७ है कुतूल,
फेर देंगे क्या वह मेरा दिल मुझे।

१—बेदीनी, २—तारा बदन, ३—मतख़ब वर निरान, ४—मगन,
५—मिपतम वर चेहरा, ६—विरह को रात, ७—हूज ।

उस तरफ़ है दिल को मेरी जुस्तजू^१,
 इस तरफ़ है जुस्तजूये दिल मुझे ।
 क्या खबर थी, पहले क्या मालूम था,
 लेके दे देंगे वह दागे दिल मुझे ।
 जान भी सफ़े तमन्ना हो गई,
 कर गया वरवाद मेरा दिल मुझे ।
 जो न कहना था वह मुंह पर कह गया,
 दिल्लगी ही दिल्लगी में दिल मुझे ।
 लेने वाला, उसको लेकर चल दिया,
 देने वाले ने दिया था दिल मुझे ।
 यम जो देना था तो देना ही न था,
 किस तरह का, इस तरह का दिल मुझे ।

—‘नूह’ नारवी

×

×

×

हाथ पहलू पर धरा है करते हैं दिलबर^२ की फिक्र,
 पूछते फिरते हैं गलियों में किसे दिल चाहिये ।

—‘रशीद’ लखनवी

×

×

×

कोई पुरसां सरे महफिल नही है
हमारे पास जैसे दिल नही है।

—'हसरत' लखनवा

X X X

अस्ल फ़ितना^१ है क़यामत में व्हारे फिरदौस^२,
जुज़ तेरे कुञ्ज भी न चाहे वह मुझे दिल देना।

X X X

दूढ़ते फिरते हैं खोये हुए दिल को अपने,
हमने जिस दिन से सुना घर है तुम्हारा दिल में।

—'असी' रासीपुरी :

X X X

निकालूं मैं तो अब उनका निकलना सगत मुश्किल है,
वह रहते रहते दिल में हो गये मालिफ मेरे दिल के।
मिला कर वह नहीं लिखता कभी इन दोनों हफ़ौ को,
फ़ितायत^३ में भी उसने, डुफ़ड़े कर डाले मेरे दिल के।
मरा जाता हूँ मैं येमौत मरने की तमज़ा में,
रहे जाते हैं मेरे दिल में सारे होसले दिल के।
न निकजेगी कोई हसरत, न निकलेंगे कभी अरमा,
मेरे दिल से, मेरे दिज़ की, मेरे दिज़ से मेरे दिज़ के।

१—फ़ियद, २—वेड्डेड का खान्द, ३—खिलना ।

दर्द-दिल

उफ़ रे नखवत' खँचते हैं किस कदर दूर आपको
दिल में रह कर भी नहीं रहते वह मेरे दिल के पास।
एक दिल था मेरे पहलू में वह तुम ले ही चुके
अब नज़र किस पर है अब रक्खा है क्या वेदिल के पास।
उस तरफ़ की नज़र तो इस तरफ़ भी देख लो,
एक जिगर भी है तमनाईं तुम्हारा दिल के पास।
शक्त आती है नज़र इसमें किसी की या नहीं,
देख तो लूँ मैं ज़रा आइना रख कर दिल के पास।

—'मेहर' ग्वालियारी

चलाते हो अगर तीरे नज़र तो तुमको लाज़िम है,
कलेजा किस तरफ़ है, किस तरफ़ दिल देखते जाओ।

—'बिरियां' इलाहाबादी

मुझे अफ़सोस अपनी मौत का है गर तो इतना है,
कि मिट्टी में मिलेंगे सैफ़ड़ों डुफ़ड़े मेरे दिल के।

—'फ़रयाज़' हरियानवी

खाफ़ में मिलवा दिया, मिलवा के काविल से मुझे,
हमते दिल का है शिक़या, हमते दिल से मुझे।

या हो उम्मीदे' करम उस मीरे महफ़िल से मुझे,
 दिल जो लेकर यह कहे नफ़रत है वेदिल से मुझे।
 यह समझ कर वह किसी का दिल कभी लेता नहीं,
 दिल न होगा पास तो चाहेगा क्या दिल से मुझे।
 अब ख्याल उसका करें तो वह करें, मैं क्या कहूँ,
 देके दिल, एक वेदिली सी हो गई दिल से मुझे।
 यह चलत है, मेरी यातों में असर कुछ भी नहीं,
 सुनिये दिल से आप, कहने दीजिये दिल से मुझे।
 किस तरह तरगीब दी जाती है तर्कें इश्क की,
 वह यह कहते हैं कि चाहो गैर के दिल से मुझे।
 दिल में तो है उनके मिल जाय किसी सूरत से दिल,
 और लव पर यह है, क्या मतलब तेरे दिल से मुझे।
 मैंने आखों से अगर आंखें मिलाई भी तो क्या,
 दिल मिलाना चाहिये, उस शोख के दिल से मुझे।
 कोई फ़दता है विगड़ कर दिल तो पहलू में है एक,
 यह चलत है चाहते हैं आप सौ दिल से मुझे।
 मैंने यह माना कि तर्कें इश्क है आसान काम,
 क्या कहूँ आता नहीं जीना मरे दिल से मुझे।
 ऊपरो दिल से अगर चाहा तो क्या वह चाहना,
 चाहना यह है कि चाहो तुम वहे दिल से मुझे।

दर्द-दिल

मैं बहुत चाहूँ मगर मालूम हो सकती नहीं,
आपके दिल की हकीकत, आपके दिल से मुझे।
वह यह कहते हैं निकालो दर्मियां से वाव को,
सएत नफ़रत हो गई अब “नूह” के दिल से मुझे।

—‘नूह’ नावों

X

X

X

नाज़िरो^१ सरमाअये^२ आलम था नज़रों में वही,
हम^३ नवा आख़िर मेरे पहलू से वह दिल क्या हुआ।

—‘ग़ालिब’ देहलवी

X

X

X

मेरे ही सामने लेकर पटक देना मेरे दिल को,
मुझी से डुकड़े चुनवाना मेरे टूटे हुए दिल के।
ख़ुदा मालूम किस्मत किसकी जागे वक्ते आराइश^४,
सजे हैं आइने ख़ाने में इसने आइने दिल के।
दमे अरज़े तमन्ना बेरुख़ी से फेर लीं आख़ें,
किसी ने ऐ ‘जवान’ इस तरह तोड़े आसरे दिल के।

—‘जवान’ संदेलवी

X

X

X

जो दिल था मेरे पहलू में वह अब है उनकी मुट्ठी में,
इसी वायस^५ से शायद वह मुझे घेंदिल समझते हैं।

१—नाज़ करने योग्य, २—संसार की पूंजी, ३—घनने संघरने के समय, ४—सख्य ।

हमारी फ़हमे^१ नाकिस में घुरी है यह गलतफ़हमी,
 परायों के भी दिल को आप अपना दिल समझते हैं।
 —'इन्साफ़' रंगूनी

x

x

x

चरम क्राविल घात में थी एकदम ग्राफ़िल न थी,
 बच गया क्रिस्मत से तेरी ख़ैर ही ऐ दिल न थी।

—'धर्क' देहलवी

x

x

x

किसी बे दर्द को इस सैइये^२ लाहासिल^३ से क्या मतलब,
 नहीं जब मुझसे कुछ मतलब तो मेरे दिल से क्या मतलब।
 वह बज़मे^४ नाज़ में बैठे हुए बिजली गिराते हैं,
 बला से दिल पे जो गुज़रे उन्हें श्व दिल से क्या मतलब।

x

x

x

हुए वह मुतमइन, क्यों सिर्फ़ मेरे दम निकलने पर,
 अभी तो एक दुनियाये तमन्ना दिल में बाक़ी है।
 वह मुझसे दूर खिंचते हैं, खिंचें कुछ गम नहीं इसका,
 कि दिल पहलू में बाक़ी है, कशिश भी दिल में बाक़ी है।
 कहां फुरसत हुजूमें^५ रंजोगम से हम जो यह जानें,
 कि निकली क्या तमन्ना, क्या तमन्ना दिल में बाक़ी है।

१—तुच्छ बुद्धि, २—कोशिश, ३—बेकार, ४—सम्ब।

समझते हैं कि मिलना हर तरह उनका है नामुमकिन,
तमन्ना फिर भी मिलने की हमारे दिल में बाकी है।

—'विस्मिल' इलाहाबादी

× × ×

बिगड़ना यों भरो महफ़िल में क्या था,
वह क्या समझे हमारे दिल में क्या था।

—'सफ़ी' लखनवी

× × ×

न अब कहने की हाज़त है न कुछ लिखने से हासिल है,
इलाही तुम्ह पे बस रौशन है जो भी हालते दिल है।
अबस शेखो वरहमन में है लफ़ज़ी बहेस का भगड़ा,
मकां उस ला मकां^१ का है अगर कोई तो बस दिल है।

—'नब्बाब' जूनागढ़ी

× × ×

कहे जाते वह सुनते या न सुनते,
जवां तक हाले दिल आया तो होता।

× × ×

नाफ़िस^२ है दोस्तरदारी^३ में कामिल नहीं है नू,
दुरामन से भी गुवार अगर दिल में रह गया।

× × ×

१—जिदायत मर्याद न हो, २—येब, ३—मित्रता।

मुशताक जो होता हूँ काने की जयारत^१ का,
 आँखें फिरी जाती हैं तौफ़^२ हरमे^३ दिल को ।

—‘आतिश’ लखनवी

× × ×

‘नैयर’ से क्यों करे फोड़ कीमत की बातचीत,
 मिलते हैं सुक़ दूटे हुए दिल जगह जगह ।

—‘नैयर’ काकोरवी

× × ×

न्यामतों को देखता है और हंस देता है दिल,
 मह हैरत हूँ कि आखिर क्या है मेरे दिल के पास ।

—‘अखतर’ एम० ए०

× × ×

फूल सैदने, बोसतां^४ में, आइना महफ़िल में है,
 एक तेरी तस्वीर दो सूरत से मेरे दिल में है ।
 अक्स^५ आइने में जैसा है तुम्हारा दिलफरेब,
 एक ऐसी ही परी सूरत हमारे दिल में है ।
 हम लिये फिरते हैं आबादी में कुछ वारानियाँ^६,
 एम की एक उजड़ी हुई दुनिया हमारे दिल में है ।

१—दर्शन-अभिलाशा, २—परिष्कार, ३—झाडा, ४—दाग का आंगन,
 ५—शरदाई, ६—शरबादो ।

दर्द-दिल

[१०]

दर्द-दिल का पूछने वाला नहीं कोई "जमाल",
दर्द-दिल किससे कहूँ मैं, हाय दिल की, दिल में है।

—'जमाल' सवरी

✓ न दो राहत^१ किसी पहलू भी इस नक्रशे मोहबत ने,
मिसाले दिल था बैठा, दर्द बन कर, दिल से उठता है।

—'बर्ग' बांदवी

✓ अब वह अगले हौसले, वह सइये लाहासिल^२ नहीं,
जब से पहलू में मेरे आफत का मारा दिल नहीं।

—'अहसान' बांदवी

✓ एक हजूमे यासो^३ यम एक बेकली एक इज़तराब^४
क्या बतायें हमनशी^५ क्या क्या हमारे दिल में है।

—'महजूर' मांटगमरी

✓ खैर समझा तो किसी काबिल मुझे,
छाफ में मिलवा के मेरा दिल मुझे।
जिसको थे मालूम हालाते अबद^६,
मिल गया रोजे^७ अज़ल वह दिल मुझे।

१—घाराम, २—बेकार कोशिया, ३—निराशा की भंड, ४—बेकली,
५—साथी, ६—घंत, ७—घादि।

उनकी बर्बादी पे मैं रोया किया,
मिल गये जब ज़र्राहाए दिल मुझे ।

—‘विस्मिल’ इलाहाबादी

×

×

×

हम वह दिल रखते हैं जो रखता नहीं अपना जवाब,
आप क्या समझे कि हम वेदिल हैं हम वेदिल नहीं ।

—‘राम’ काश्मीरी

×

×

×

पूरी भी हो कहीं मेरे क्राविल की आरजू,
मिल जाय खाको खूं में मेरे दिल की आरजू ।
रह रह के तेरा फेरिये, रुक रुक के निकले दम,
थम थम के निकले दिल से, मेरे दिल की आरजू ।
हसरत है इसको छिड़के लबे ज़ख्म पर नमक,
क्राविल की आरजू है, मेरे दिल की आरजू ।

—‘कौकब’ मुरादाबादी

×

×

×

बही बारे^२ गरां कांधा चोराया जिससे गरदूँ^३ ने,
उसे हमने उठाया देखिये इस हिम्मतें दिल को ।

मुझे उल्फत में यों गुम^१ गस्तगीये शौक रास आई,
कि अब उनको वह ख्वाहिश है जो थी पहले मेरे दिल को।
—‘सुहेल’ गाजीपुरी

× × ×

है सुदतों से कूचये क्रातिल की आरजू,
निकलेगी जान ले के मेरे दिल की आरजू।
भरे हुए हैं रंज रामो यास हिज^२ में,
आफत में फंस गई है मेरे दिल की आरजू।
तड़पा भी, तिलमिलाया भी, लोटा भी वजम^३ में,
पूछी न तुमने दर्द भरे दिल की आरजू।

—‘आयाज’ मुरहानपुरी

× × ×

बेखुदी में, होश तब आया है मुश्किल से मुझे,
जब पुकारा है किसी ने पर्देये दिज से मुझे।
यह हुआ जाहिर निगाहे नाज क्रातिल से मुझे,
हाथ धो लेना पड़ेगा एक दिन दिल से मुझे।

—‘अहसन’ फरतपुरी

× × ×

लड़कपन है नहीं मालूम इसकी कदर कुछ उनको,
कन्हें एक खेल है, वह एक खिलौना दिल समझते हैं।

नज़र आता है जब टूटा हुआ सागर^१ कोई "शोहरत",
हम उसको कूचये साकी में अपना दिल समझते हैं।

—'शोहरत' कानपुरी

×

×

×

शौके दीवार में सब ताबो-तवां^२ खो बैठे,
रह गई एक तमन्ना ही तमन्ना दिल में।

—'अवहर' गुरवारवी

×

×

×

निगाहे नाज़ से फिर देखले कोई मुझको,
फिर कोई राह-ज़ने^३ काफ़िलये दिल होजाय।

—'उफुक' अमरोहवी

×

×

×

फ़स्तल गुल^४ में यह मसरत^५ मुझे हासिल होजाय,
खिलने वाला हो जो गुब्बा^६ वह मेरा दिल होजाय।
फेर दें आप यह दुख दर्द का साथी मुझको,
मेरे पहलू में तड़पने के लिये दिल होजाय,
चल सरेराह^७ ज़रा देख कर वह मस्ते अदा।
कोई पामाल^८ न अरमान भरा दिल होजाय,

—'ताज़' अमरोहवी

×

×

×

१—प्याला, २—ताक़्त, ३—मह, ४—ख़लत शब्द, ५—आनन्द,
६—कली, ७—मार्ग में, ८—पांव से नलना।

सांस लेता हूँ तो आती है सदाये^१ गिरियाँ,
रोते रोते कहीं पानी न मेरा दिल होजाय ।

—‘फ़रियाज’ मेरठी

× × ×

लुफ़ जब नाले का है दौरे खज़ां^२ में बुलबुल,
जो शिगूफ़ा खिले गुलशन में वही दिल होजाय ।
दौरे आलम में मेरे दिल की हकीकत क्या है,
वह जिसे कह दें कि यह दिल है वही दिल होजाय ।

—‘ज़ार’ मेरठी

× × ×

फूल चुनने के लिये जाओ जो तुम गुलशन^३ में,
हर कली शौक में अरमान भरा दिल होजाय ।
फिर तो एक आदमी हो जाऊँ मज़े का मैं “शबाब”,
मेरे क़ाबू में जो क़िस्मत से मेरा दिल होजाय ।

—‘शबाब’ ग्वालियारी

× × ×

या मेरे सोज़े दुख^४ का कोई कायल होजाय,
या तो बस मैं मेरे अल्लाह मेरा दिल होजाय ।

—‘आलम’ फारामीरी

× × ×

१—फ़रियाज, २—फ़तक़ह की शयु, ३—बाग, ४—दिल की शयु ।

लज्जते, द मोहब्बत वह मिली है कि न पूछ,
 अब या, हसरत है कि हर अज़ब' मेरा दिल होजाय ।
 अब तुज्जमे रामो आफ़त से यह खटका है "फ़हीम",
 कहीं पामाल न अरमान भरा दिल हो जाय ।

—'फ़हीम' गोरखपुरी

× × ×

✓ तू भी होजाय वफ़ादार कहीं मेरी तरह,
 लुप्त आजाय जो मेरा सा तेरा दिल होजाय ।

—'ख़बर' साहब

× × ×

यही दिल है अगर मेरा तसल्ली हो चुकी मुझको,
 यही तुम हो तो बस हसरत मेरा निकली मेरे दिल से ।
 वह साइत भी कोई होगी कि वह मेहमां मेरे होंगे,
 तमन्ना कब इलाही दिल की निकलेगी मेरे दिल से ।
 यह शोखी तो कोई देखे, वह फ़मति हैं दिल लेकर,
 हमें तुम चाहते हो, वह यही दिल है, इसी दिल से ।
 तमन्ना पूछते क्या हो हमारी यह तमन्ना है,
 हमारे दिल में आजाओ, निकल कर रौं के दिल से ।

दर्द दिल

[1]

यह क्या हर बार कहते हो हमें अब कोजिये रखसत^१;
इजाजत दे तुम्हें जाने की "रहमत" कौन से दिल से।

—'रहमत' बुलन्दशहर

× × ×

नावक अफगन^२ तेरे तीरों का तसद्क^३ कुछ दि
खूब रौनक रही भगड़े जिगरो दिल में रहे
कभी कहता हूँ कि उस शोख पे जाहिर कर दूँ
कभी कहता हूँ जो दिल की है वही दिल में रहे।

—'मुरताक' बटालवा

× × ×

कुछ भी हो इसका यकी आयेगा मुरिकल से मुझे,
दिल उड़ा कर क्या करोगे प्यार तुम दिल से मुझे।
गम दिये इसने हज़ारों मिल के काविल से मुझे,
क्या तबक्का^४ हो वफ़ा की देवफ़ा दिल से मुझे।
वज्म-जानां^५ में है कितनी भीड़, कैसी कशमकश,
चल गया इसका पता हसरत भरे दिल से मुझे।
यों तो मैं इश्क़ो वफ़ा को तर्क कर सकता नहीं,
दिल बदलना चाहिये अयियार^६ के दिल से मुझे।

१—दिया, २—तीर चलानेवाला, ३—निदावर, ४—घात,
५—प्रियतम की सभा, ६—तीर।

जब वह कहते हैं, क मैं निकलूं तो निकलूं किस तरह,
 दिल में रहते रहते उलफ़त होगई दिल से मुझे ।
 कभी क्रायल न था फूटी हुई तकदीर का,
 जानना इसको पड़ा टूटे हुए दिल से मुझे ।
 उन्हें उलफ़त पर बिगड़ना उनका वह कुछ सोच कर,
 और यह कहना कि फिर चाहो उसी दिल से मुझे ।
 जान पर जब आ बने तो जान दूं मैं या न दूं,
 मशवरा! करना है इसका हज़रते दिल से मुझे ।
 देखते हैं आप लेकिन यह पता चलता नहीं
 किस नज़र से मेरे दिल को और किस दिल से मुझे ।
 होते होते यह हुआ सोजे मोहब्बत का मञ्जाल,
 रपता रपता हाथ उठाना ही पड़ा दिल से मुझे ।
 जब कहा तुमने हमें मतलब है तो उसने कहा,
 मुझसे मतलब आपको है आपके दिल से मुझे ।
 'नूह' भी रोकें तो रुकने का नहीं तूफ़ाने अरक^२,
 काम लेना चाहिये अब कश्तिये दिल से मुझे ।

—'नूह' नारखी

×

×

×

सर पटकती है बेकसी दिल की,
 तूने ज़ालिम खबर न ली दिल की ।

चीखना सर को पीटना रोक
सारी बातें हैं यह इसी दिल की
वह भी पहचानते नहीं अफसोस
क्या बुरी शक्ल हो गई दिल की।
देके छीटे न तुमने ऐ अफसोस
न बुझाई गई लगी दिल की।
दर्द उठ उठ के कह रहा है 'सुरुर',
मुझसे उठती नहीं कड़ी दिल की।

—'सुरुर' जहानाबादी

×

×

×

बार बार उसको देखता हूँ मैं,
उफ़ वे ताबियां मेरे दिल की।
'कुञ्ज तवस्सुम' था यार के लब पर,
खत्म जब दास्तां हुई दिल की।
निगहे देर आशाना ने 'क़मर',
आस खो दी रही सही दिल की।

×

×

'क़मर' साहब

'तजस्सुस' और कोशिश से कभी उसको न पायेगा,
मिटायेगा खुदी को तो खुदा मिल जायगा दिल में।

—'अहमद' साहब

x

x

x

भी हम ये कि रौनक थी हमीं से उनकी महफिल में,
नी है अब, कि कांटा सा खटकते हैं हर एक दिल में।

—'अमीन' देहलवी

x

x

x

न देखे और कोई तुमको दुनिया में सेवा मेरे,
तक़ाज़ा है यह उल्फ़त का रहो पिनहां^२ मेरे दिल में।
करो बड़ काम जिससे दीनों दुनिया में भलाई हो,
'समर' अब बक़ पीरी^३ है समझ लो सोच लो दिल में।

—'समर' देहलवी

x

x

x

'अता' जिसके लिए इतना ज़लीलो उवार फिरते हो,
तय सोचो तो दुनिया क्या कहेगी देखकर दिल में।

—'अता' बिसवानी

x

x

x

✓ मोक़दर की यह खूबी है जो यों दर दर भटकते हैं
 वग़रना हम भी घर करते 'नज़र' जाकर किसी दिल में
 —'नज़र' रदौलत

× × ×

असर इतना तो पैदा हो गया है जज़बे क़ामिल में,
 मैं उनके दिल में रहता हूँ वह रहते हैं मेरे दिल में।
 मिलाया खाक में हसरत को इसकी इसके अरमां को,
 अरे बेदर्द तूने क़द्र क्या की 'क़द्र' की दिल में।

—'क़द्र' साह

× × ×

✓ मोहबत उनको मुझसे इस तरह ऐ काश हो जाए
 वह नज़रों में मुझे रक्खें मैं रक्खूँ पर्दे दिल में
 ✓ बचके ज़बहू जी भर कर नहीं देखा था क़ातिल के
 हमारी हस्तें यों ही तड़पती रह गई दिल में

—'मुस्ताक़' साह

× × ×

फ़ना होकर हकीकत में सुला ऐ 'अर्श' यह ओक़दा',
 कि जिसकी जुस्त जू थी वह निहां^२ था पर्दे दिल में।

—'अर्श' साह

× × ×

✓ मोहब्बत का असर ज़ालिम छुपाये से नहीं छुपता,
किसी का इश्क़ पिनहा रह नहीं सकता कभी दिल में।
—'अनवर' साहब

×

×

×

पूछो नामुरादे इश्क़ से हाले दिले अबतर,
'राके' यार ने डाले हैं लाखों आबले दिल में।

—'हसन' जायसी

×

×

×

मुझे रह रह के तड़पाती है याद उनकी निगाहों की,
खटकते रहते हैं हर वक्त यह नशतर मेरे दिल में।
जो उसको राह पर लाऊँ तो किस सूरत से ऐ हम दम,
दिल अपना डाल दूँ किस तरह मैं उस शोख के दिल में।
अज़ल से मैं हूँ ऐ 'सरदार' दिल दादा हसीनों का,
मोहब्बत कूट कर भर दी है खालिक ने मेरे दिल में।

—'सरदार' देहलवी

×

×

×

इश्क़ में अब फ़ैसला होना ज़रा मुश्किल भी है,
जिस तरफ़ बढ़ है उसी जानिव हमारा दिल भी है।
तुमको मेरे इश्क़ पर कुछ गौर करना चाहिए,
बेतलब देता हूँ दिल ऐसा किसी का दिल भी है।

देखना यह है कि पहले दौड़कर मिलता है कौन,
तीर दिल के सामने नावक के आगे दिल भी है।

—'विस्मिल' इलाहाबाद

×

×

×

कभी दुनिया में वह उल्फत के क्राविल हो नहीं सक
कि जिसका दिल कभी हसरत भरा दिल हो नहीं सक
तुम्हें यैरों की उल्फत है हमें उल्फत तुम्हारी
तुम्हारा दिल हमारा दिल तो एक दिल हो नहीं सक
✓ तुम्हीं को हमने चाहा है तुम्हीं को हम तो चाहें
फिदा यह और पर दिल हो यह न्ह दिल हो नहीं सक
बहुत आसान है वादे पर उनके सप्र कर लेने
मगर तुमसे तो इतना भी मेरे दिल हो नहीं सक
✓ जो कहता हूँ यही दिल है इसी में आप रहते हैं
तो कहते हैं नहीं हरगिज़ यह वह दिल हो नहीं सक
अदा पर जान दी किसने अदा पर जान दी मैंने,
यह मेरा दिल है ऐसा यैर का दिल हो नहीं सक
✓ जफायें जिस पे होती हैं बलायें जिस पे आती हैं,
वह खुश दिल रह नहीं सकता वह खुश दिल हो नहीं सक
✓ पहुँचता है जो सदमा, तो यह शीशा टूट जाता है,
तुम्हीं नाजूक हो क्या नाजूक मेरा दिल हो नहीं सक

×

×

×

—'शफ़क' इलाहाबादी

(1) रि जाना किस लिये तकलीफो मुश्किल में रहे,
 (2) ल में आये दिल में आ बैठे मेरे दिल में रहे।
 (3) आप सुनते हैं तो सुनिये मेरे दिल का राज़ इश्क,
 (4) किन इतनी अज्ञे है ये आपके दिल में रहे।
 (5) मुझको इससे क्या गरज़ मेरी तबीयत साफ़ है,
 (6) आपके दिल की कुदूरत आपके दिल में रहे।
 (7) पौर क्या है यह जो ऐ ज़ालिम नहीं तासीरे इश्क,
 (8) हम बुरे बन कर सही लेकिन तेरे दिल में रहे।

x

x

—'दुआ' डुवाइवी

x

(1) क्या करें उन पर तसद्क हम कि मुश्किल एक है,
 (2) कहने सुनने को हैं दो पहलू मगर दिल एक है।
 (3) मुझको वैठी हैं हज़ारों आरजूयें घंर कर,
 (4) किस तरह दिल में जगह में दूँ मेरा दिल एक है।

x

x

x

(1) बादये इमरोज़^१ तो लेने नहीं देता करार,
 (2) बादये फरदा^२ से हो क्यों कर सुझने दिल मुझे।
 (3) इसी हसी की आरजू है उस हसी की जुस्तजू,
 (4) चैन देने का नहीं मेरा मज़ाके दिल मुझे।

x

x

x

१—घाज़ का वादा, २—क़ज़ का वादा।

जो तेरे यार के काविल नहीं है
फलेजा वह नहीं है दिल नहीं है।
हम अपने दिल को दिल समझे हुये हैं
हमारा दिल तो कोई दिल नहीं है
अगर दिल है तो दिल में है मोहब्बत
मोहब्बत फिर कहाँ जब दिल नहीं है।
करे अफ़्शा^१ तुम्हारे इश्क का राम,
हमारा दिल तो ऐसा दिल नहीं है।

—'विस्मिल' इलाहाबादी

×

×

×

वेदिली पर क्यों हेरासां^२ हूँ कि है मुझको खबर,
खुद निगाहे नाज़ ही एक दिन वनेगी दिल मेरा।
थी हरीमें नाज़ के पदों में भी जुम्बिश^३ तमाम,
एक रंगे खाक से जब मुज़तरिव था दिल मेरा।

—'जिगर' मुरादाबादी

×

×

×

✓ सुवाने मौज^४ ने तूफ़ान जोड़ा आशनाओं^५ पर,
हुबाबे-बहरे तू^६ भी तोड़ अपना आबला दिल का।

—'नसीम' लखनवी

×

×

×

१—जाहिर, २—हर, ३—दिल जाना, ४—लहर, ५—साथी,
६—समुंदर के आवले।

यहाँ जलवा है सब अपने ही दम का,
यह आलम^१ जिस्म है, तो दिल हमीं हैं।

—‘वहीद’ इलाहाबादी

×

×

×

जमाना मुझसे बदज़न^२ है, जमाना मेरा दुश्मन है,
सबक लें अहले दिल अन्जामे-उल्फ़त^३ का मेरे दिल से।
इलाही इस निज़ामे^४ ज़िन्दगी से फ़ायदा क्या है,
कि जीते जी है दिल मुझसे जुदा, मैं हूँ जुदा दिल से।
जमाने की शिकायत क्या जमाना फिर जमाना है,
यहाँ तो बदगुमां हम से है दिल, हम बदगुमां दिल से।

—‘अफ़कर’ मोहानी

×

×

×

लगाये जाओ तुम तिरछी नज़र से तीर बे गिनती,
इसे तो हम हिसाबे दोस्तां^५ दर्द दिल समझते हैं।

×

×

×

उठा कर आइना पूछो ज़रा मद्दे मुक़ाबिल^६ से,
कभी वाक़िफ़ नहीं तुम भी मेरी बेताबिये^७ दिल से।

१—संसार, २—संकेत रहना, ३—मुद्दियत का नतीजा, ४—६

५—मित्रों का हिसाब दिल में, ६—जो सामने हो ७—बेचैनी।

✓ तुम्हारे इशक में रुसवाये आलम हो गये फिर भी,
न निकली है, न निकलेगी तुम्हारी आरजू दिल से।
—'बर्क' देहलवां

×

×

×

✓ चिरागां का यह आलम है, कि यह तारों की महफिल है,
तबीयत बुझ गई अपनी, न वह हम हैं, न वह दिल है।
—'बेताब' बरैलवां

×

×

×

✓ क़त्र में जाकर सुकूने^१ क़लब^२ हासिल होगया,
ख़तम जय अफ़सानये^३ बेताविये दिल होगया
—'बेदिल' देहलवां

×

×

×

✓ लखते-जिगर^४ से मुझको ज़यादा अज़ीज़ है,
दूटा हुआ जो तीर तेरा दिल में रह गया।
—'जोश' मलसिया...

×

×

×

✓ आइना जिसको आप कहते हैं,
एक टुकड़ा है वह मेरे दिल का।
—'ख़लिश' गयाबी

×

×

×

रुदाह-मोहबवत^१ की क्या तुमसे कहें क्या थी,
आगाज़^२ गमे दिल था, अन्जाम^३ गमे दिल था ।

—'रवां' उन्नावी

X

X

X

वात ही जब मेरी नहीं सुनते,
फिर कहूँ खाक सुदआ^४ दिल का ।

—'सअद' बिज्रनौरी

X

X

X

तीरे निगाहे नाज़ का अन्दाज़ देखना,
आँखों से उनकी चल के मेरे दिल में रह गया ।

—'शफ़ीक' भरतपुरी

X

X

X

✓ 'सवा' हमने तो हरगिज़ कुछ न देखा ज़यव-उल्फ़त^५ में,
गलत यह बात कहते हैं, कि दिल को राह है दिल से ।

—'सवा' फ़िरोज़ावादी

X

X

X

-ज़िक्र हर जा है तेरी बेदाद^६ का,
ज़ुल्म से खाली किसी का दिल नहीं ।

—'इशरत' लखनवी

X

X

X

१—प्रेम की बातें, २—आदि, ३—अंत, ४—मतलब, ५—प्रेम
आकर्षण, ६—ज़ुल्म ।

गो मेरे पहलू से वह होजाय ऐ कातिल जुदा,
तेरे पैकां से जुदा होने का मेरा दिल नहीं।

—'फिराक़' गोरखपुरी

× × ×

आगया उठ के उनकी महफ़िल से,
ऐसी उम्मीद थी किसे दिल से।
यह फ़ैसाना तो मेरे दिल का था,
आपने क्यों नहीं सुना दिल से।

—'कैस' जालन्धरी

× × ×

✓ माल मुफ़लिस समझ के ऐ 'कुरता',
कोई गाइक नहीं मेरे दिल का।

× × ×

✓ जो तेरी निगाहों का बिस्मिल नहीं है,
वह कहने को दिल है, मगर दिल नहीं है।

—'कुरता' गयात्री

× × ×

✓ घटा सोजे यमे^१ पिनहाँ,^२ मगर आँसू नहीं रुकते,
कोई उम्मीद टूटी है, कि टूटा आबला दिल का।

—'कैफ़ी' शाहाबादी

× × ×

हेरत' ज़दा मैं उनके मुक़ाबिल में रह गया,
जो दिल का मुद्दआ था, मेरे दिल में रह गया ।

—'महरूम' मियावाली

× × ×

दो घड़ी के वास्ते मिल जाय याराये^२ सखुन,
आज कहना है किसी से माजराये^३ दिल मुझे ।

—'मोहसिन' इमरितसरी

× × ×

काफ़िर निगाहे हुस्न से फिर बिजलियां गिरीं,
पहलू से फिर तड़प के मेरा दिल निकल गया ।

—'मूनिस' सिबहारवी

× × ×

मुझको उल्फ़त में किसी से, क्या शिकायत, क्या गिला,
तुम तो तुम हो, अब तो अपना दिल भी, अपना दिल नहीं ।
मोख़तसिर^४ रुदाह ऐ "नश्तर" यह सोजे गम की है,
दिल जहाँ था, अब वहाँ एक आवला है दिल नहीं ।

—'नश्तर' मेरठी

× × ×

मुसोबत में किसी का कोई भी साथी नहीं होता,
शमे फुरक़व में ज़ालिम सत्र तक रहता नहीं दिल में ।

कहीं अरमां, कहीं हसरत, कहीं यह दागो^१ नाकामी,
नई दुनिया बसाई है मोहब्बत ने मेरे दिल में।

—'बफा' शाहजहाँपुरी

X X X

हक्रीकत मेरे रोने की, न पूछ ऐ हमनशी^२ मुक से,
मेरा एक एक आंसू, हासिले अफसानये दिल है।

—'हुनर' अनवरी

X X X

सिर्फ इसको तने ज़ार^३ के क़ाबिलं न समझना,
पैमानये-उल्फ़त^४ है, फ़क़त दिल न समझना।
क्यों दिल पे मेरे पड़ती हैं तहकीर^५ की नज़रें,
हासिल है ग़मो दर्द का, तुम दिल न समझना।
तुम तोड़ना दिल को न मेरे संगे^६ ज़फ़ा से,
जज़्बात^७ की दुनिया है इसे दिल न समझना।

—'बेहोश' उतरौलबी

X X X

तसब्बर,^८ भी तेरा, कौनयन^९ की दौलत से बढ़कर है,
कि तुमको दूर रहने पर भी कुरवत^{१०} है मेरे दिल से।

—'मुजतर' देहलीवी

X X X

१—निराशा के चिन्ह, २—साथी, ३—दुपला बदन, ४—प्रेम प्याज़,
५—खुरख समझना, ६—खुलम का पत्थर, ७—भाव, ८—खान, ९—संसार,
१०—नज़दीकी ।

पूछते क्या हो, तमन्नाये^१ दिले पुर^२ आरजू,
जो चदू^३ के दिल से बाहर हैं, वह मेरे दिल में है।
तीर^४ को दूँ दाद या दिल को सराहूँ तीर जन,
तीर में है दिल मेरा या तीर तेरा दिल में है।

—'सायल' देहलवी

× × ×

✓ सानना क्रातिल का है, आशिक बड़ी मुश्किल में है,
कुछ शिकायत है जुवां पर, कुछ शिकायत दिल में है।

—'शफीक' लखनवी

× × ×

कोई दम में धुक्ने वाला है चिराये जिन्दगी,
अब नज़र आता है कुछ हमदर्द दर्द दिल मुझे।
✓ अलविदा^५ ऐ इजतिरावे कल्वे^६ मुज़तर^७ अलविदा,
आज कहना है किसी से आरजूये दिल मुझे।

—'हामिद' इटावी

× × ×

✓ लुल्क दुनिया मुझको हासिल, अब रहा दुनिया में क्या,
यानी एक उसकी तमन्ना, सो वह मेरे दिल में है।

१—इच्छा, २—बहुत सी कामनाएँ, ३—दुश्मन, ४—विदा
होना, ५—दिल, ६—वेत्रारर।

दर्द-दिल

[१२२]

कुछ न कुछ है जौक^१ "नातिक" सब की दर्दें इस्क से
या किसी की गुरूगू में, या किसी के दिल में है
—'नातिक' गुलाब

×

×

×

गम उठाये जाऊंगा मुझको खुशी से क्या गरज,
गम उठाने के लिए, तूने दिया है दिल मुझे।

—'राज' सहस्रनामी

×

×

×

✓ गुरुरे हुस्न तुमको है, कमाले इस्क मुझको है,
कहो तुम मेरे दिल की, या कहूँ मैं आपके दिल की।

—'अमीर' लखनवी

×

×

×

कह रहे हैं मुझको मकतल^२ में वह विस्मिल देख कर,
मैं न कहता था लगाना चाहिए दिल देख कर।
इब्तदाये^३ इस्को उल्फत से कहीं घबरा न जाये,
दिल पे तुम दाओ सितम, लेकिन मेरा दिल देख कर।
मिट गई वह अब गुले दाये मुद्ब्वत की बहार,
घर भी रोते हैं, पजमुदा^४ मेरा दिल देख कर।

१—मजा, २—यखिवेदी, ३—गुरू, ४—फाहलाया हुआ।

मैं भी सौ दिल से फ़िदा, वह भी है सौ जी से निसार,^१
मेरी सूरत देखते हो क्या मेरा दिल देख कर ।

—‘शफ़क़’ इलाहाबादी

× × ×

जाहिरी लुत्फ़ो^२ इनायात का हासिल क्या है,
दिल से देखो, तो खुले दर्द भरा दिल क्या है ।
आप कह दें तो अभी सब को तसद्दुक^३ कर दूँ,
यह मेरी जान है क्या, और मेरा दिल क्या है ।
नाम को इसमें कुदूरत^४ रहे मुमकिन ही नहीं,
आइना है तेरी उल्फ़ान का, मेरा दिल क्या है ।
दिल से जब कद्र करो, दिल की, तो दिल है सब कुछ,
दिल से जब कद्र नहीं दिल की, तो फिर दिल क्या है ।

—‘विस्मिल’ इलाहाबादी

× × ×

भेजता है यह पयामे^५ दिलबरी^६ कातिल मुझे,
चाहिए जुल्मो सितम के वास्ते एक दिल मुझे ।

—‘आरजू’ जुबाइवी

× × ×

१—निछावर, २—कृपा, ३—निहावर, ४—मैद, ५—पैग़ाम,
६—दिल ले जाने का ।

दर्द-दिल

फिर मोक़द़र^१ में लिखी हैं ज़िल्लतें^२ रुसवाइयां,
ले चली फिर सूयजाना आरजूये दिल मुझे।
पहले तो वेसोचे समझे खातमा ही कर दिया,
दूढ़ता फिरता है अब दुनिया में दर्द दिल मुझे।
सच है दुनिया ही में मिलती है मका फ़ाते^३ अमल^४,
मैंने दिल को खो दिया, खोकर रहेगा दिल मुझे।

—'अन्जुम' भरतपुर

× × ×
तेरे कूचे में, अभी क्रिस्मत में हैं रुसवाइयां
खँच लाई है यहीं फिर आरजूये दिल मुझे

—'अहक़र' शेरकोटी

× × ×
क्या अज़ल^५ ही से न समझा रहूँ के काबिल मुझे,
मेरे मालिक दे दिया एक हथ्र-सामां^६ दिल मुझे।
दो नसीमे^७ साज़े-ग़म^८ ने किस मज़े की लोरियां,
कर गये मसरूफ़ ख़वाबे-वास^९ आहे दिल मुझे।

—'आशुफ़ता' लखनवी

× × ×

१—तक्रदीर, २—इदनामी, ३—बदला, ४—काम, ५—माँरे,
६—क्यामत का सामान ७—इया, ८—दुख की आग, ९—निराश
की नींद।

इन्को क़ातिल था बनाना और जो विस्मिल मुझे,
मेरा दिल देना था उनको, और उनका दिल मुझे।
काम का तेरे नहीं तो फेर दे क़ातिल मुझे,
फेर दे अच्छा बुरा, जैसा है मेरा दिल मुझे।
जैसा मेरे पास है इस सोज़ का, इस साज़ का,
कोई दिखला दे तो लाकर और ऐसा दिल मुझे।
—'बर्क' काफ़ोरवी

X

X

X

आरजू क्या है तेरे विस्मिल के पास,
दिल हो पहलू में वह क़ातिल दिल के पास।
दर्द उठ उठ कर बताता है मुझे,
चुटकियां लेता है कोई दिल के पास।
जानता है दिल्लगी अच्छी नहीं,
क्यों "शफ़क़" तुमको बिठाये दिल के पास।

—'शफ़क़' इलाहाबादी

X

X

X

इस तपिश^१ का है मज़ा दिल ही को हासिल होता,
काश,^२ मैं इश्क़ में सरता-बक़दम^३ दिल होता।
आसमां दर्द मोदब्बत के जो क़ाविल होता,
तो किसी सोदता^४ का आबलये दिल होता।

१—तप, २—अगर, ३—सर से पाँव तक, ४—जला हुआ।

दिल-गिरफ्तों^१ की अगर खाक चमन में होती,
तो जहाँ देखते हो गुञ्जा^२, वहाँ दिल होता।
—'जौक' देहलवी

× × ×
बबक्ते ज़वह^३ जौहर मैंने देखे तेरे क्रातिल में,
लहू के चन्द कतरे बन गये शोले^४ मेरे दिल में।
✓ तमन्ना, यासो^५, हसरत आरजू हिरमानो,^६ वेतावी,
मैं क्याँ कर रख लूँ दुनिया भर के अरमानों को एक दिल में।
—'अरशद' जालन्यरी

× × ×
✓ साहवे महफ़िल हुआ किस दिन भरी महफ़िल से दूर,
तुम हमारे दिल में ठहरो, क्यों रहो तुम दिल से दूर।
मेरो नज़रों से तो हो जाने को बढ़ हो जायेंगे,
हो नहीं सकते, मगर दम भर को हरगिज़ दिल से दूर।

× × ×
आज इश्को हुस्न में फिर इनक़लाब आने को है,
आज दिल को फिर मिला कर देखते हैं दिल से हम।
दिल से बढ़ बातें किसी के दिल की जब सुनते नहीं,
उनसे हाले दिल कहें भी, तो कहें किस दिल से हम।

१—दिल धामे हुए, २—कल्लो, ३—दुरी चलाउं समय, ४—संगठ,
५—निराशा, ६—शुत्र।

देखने में चार तिनकों के सिवा कुछ भी नहीं,
अपने होते आशियां^१ को फूंक दें किस दिल से हम ।

—‘विस्मिल’ इलाहाबादी

X X X
 ↙ कौन से दिन आके यारव^२ वह मिलेंगे मुझसे ईद,
 कौन सी राय^३ होगी दिल की आरजू दिल से अलग ।

—‘शफ़क़’ इलाहाबादी

X X X
 कौन था किसकी अदाये शोख^४ दिल को ले गई,
 कौन था, किस शोख ने, यारव किया बेदिल मुझे ।
 इब्तिदाये^५ इश्क़ में इस दर्जा यह बेताबियां,
 देखिये दिखलायेगा क्या क्या अभी यह दिल मुझे ।
 इस क़दर बेताबियां^६ होतीं, न होता इज़तराव^७,
 खूबियां सारो अता^८ होतीं, न मिलता दिल मुझे ।

—‘वशीर’ फर्रुखावादी

X X X
 मैं वही पर्दा हूँ, जिसमें उनका जलवा है नेहां,^९
 दर बदर^{१०} नाहक़ लिए फिरता है मेरा दिल मुझे ।

—‘बेखुद’ डुबाइवी

१—घोंसला, २—ईश्वर, ३—रात, ४—चंचल भाव, ५—आरंभ,
६—बेचैनी, ७—बेकरारी, ८—मिलतीं, ९—छिपीहुई, १०—दरवाजे दरवाजे ।

दर्द-दिल

बहरे-गम^१ में है सफीना^२ दूर है साहिल^३ मुझे,
 दे तुही आकर सहारा नाखुदाये^४ दिल मुझे।
 मिल के एक वेदादगर^५ से, यह हुआ हासिल मुझे,
 दिल को मैं रोता हूँ, औ रोता है मेरा दिल मुझे।

—'वेदिल' बरलदबी

× × ×
 फिर सरे^६ महशर मेरा मुँह को कलेजा आगया,
 फिर से दोहरानी पड़ेगी दास्ताने^७ दिल मुझे।
 टूटते ही दिल के टूटा है तिलिसमे^८ आरजू,
 फर गई आजाद आवाजे शिकस्ते^९ दिल मुझे।
 गिरते पड़ते ही पहुँच जाऊँ हरीमे^{१०} नाज़ तक,
 तुम्हसे इतनी आरजू है इज़तरावे दिल - मुझे।

—'ताज' मेरठी

× × ×
 तुमको भी मालूम होती लज्जते दर्दे फिराक,^{११}
 जब कि मेरा दिल तुम्हें मिलता तुम्हारा दिल मुझे।

—'तायब' फ़रखाबादी

१—दुख-सागर, २—नौका, ३—किनारा, ४—केवट, ५—हासिल,
 ६—प्रलय में, ७—कहानी, ८—हृच्छाओं का जाड़, ९—दृष्ट इच्छा,
 १०—पदे, ११—पिरह ।

अब क़िधर जाऊँ यता ऐ आरजूए फामिल मुम्मे,
हर तरफ़ से आज आती है सदाये^१ दिल मुम्मे ।
अब जुवां भी दे अदाये^२ शुक्र के क़ाविल मुम्मे,
दर्द बढशा है अगर तूने बजाये^३ दिल मुम्मे ।
रोक सकती है तो बढ कर रोक ले मंज़िल मुम्मे,
ले उड़ी है एक मौजे बंकरारे दिल मुम्मे ।
हर इशारे पर है फिर भी गर्दने तसलीम ख़म,
जानता हूँ साफ़ धोके दे रहा है दिल मुम्मे ।
—‘जिगर’ मुरादाबादी

X

X

X

तीर का तुम क्या करोगे तीर को रहने भी दो,
ताकि कुछ मालूम हो अन्दाज़े^४ ज़ख़्मे दिल मुम्मे

—‘हामिद’ इटावी

X

X

X

जलबये माज़ी,^५ हमारे हालो^६ मुस्तक़विल^७ में है,
आरजू दिल में रहेगी, दिल में थी, और दिल में है ।
आह कर, और आरजूये मासेवा^८ को फूंक दे,
काम ले उस सोज़ से, जो सोज़ तेरे दिल में है ।

—‘आसी’ लखनवी

X

X

X

१—आवाज़, २—कृतार्थ होना, ३—दिल की जगह पर, ४—ढंग,
५—भूल, ६—वर्तमान, ७—भविष्य, ८—कामनाएँ ।

वह भी क्या दिन थे कि लुत्फ़े-ज़ीस्त^१ था हासिल मुझे,
हर नफ़स^२ था एक पयामे इज़तरावे दिल मुझे।
रप्रता रप्रता होगई तकमीले^३ तामीरे-इयात^४,
मेरी फ़ितरत^५ ने बना डाला सरापा दिल मुझे।
नज़ाअ^६ कुछ कहते कहते रुक चली है क्यों ज़वां,
उनसे कहना है अभी तो दास्ताने दिल मुझे।

—'हफ़ीज़' फ़रुखाबारी

×

×

×

मुतरिबे^७ जोशे जुनू खैंचता है तार इसकें,
लै का पावन्द जो ये साजे रगे दिल न रहा।

×

×

×

फ़ग़्र में जाकर सुकूने क़त्व हासिल होगया,
ख़त्म जब अफ़सनाये^८ वेताविये^९ दिल होगया।

×

×

×

इलाही ख़ैर होजाने हज़ी^{१०} की सख़्त मुरिकल है
वही आते हैं क़ावू में न क़ावू में मेरा दिल है

—'रिन्द' बनारस

×

×

×

१—जीवन का आनन्द, २—सांस, ३—कमाल को पहुँचने
४—ज़िन्दगी की पुनियाद, ५—प्रकृति, ६—अंतिम समय, ७—अर्थ
८—विस्ता, ९—वेधनी, १०—दुखी।

हमारे कत्ल से बाज़ आया है यह सोच कर क्रांतिल,
 दहाने^१ जल्म शायद कह उठें कुछ मुद्दआ दिल का ।
 रोज़ो शव है एक हुजूमे बेखुदी,
 दिल का आना क्या था गोया दिल गया ।

x

x

x

✓ बात ही जब मेरी नहीं सुनते,
 फिर कहूँ खाक मुद्दआ दिल का ।

—‘सअद’ विजनौरी

x

x

x

आस^२ की किशती फँसी है बहरे^३ गम में आज कल,
 यास^४ की सूरत दिखाये क्यों न चश्मे दिल मुझे ।
 कूचये दिलदार तक अपना पहुँचना है मुहाल,
 खींच कर ‘रज्जाक’ लाया मुझको मेरा दिल मुझे ।

—‘रज्जाक’ शेखूपुरी

x

x

x

मैं यह समझा दोनों आलम होगये हासिल मुझे,
 उनकी खुदवीनी^५ का सदका मिल गया अब दिल मुझे ।

१—मुँह, २—आशा, ३—समुद, ४—निराशा, ५—अपने को देखना ।

हर सुकूं^१ हर इजतिरावे मौज है साहिल मुझे,
जिस जगह चाहे डुवो दे इश्क दरिया दिल मुझे।

—'रज़म' रुदौल्वी

×

×

×

जान एक पर्दानशीं के इश्क से मुश्किल में है,
ला नहीं सकते जुवाँ पर जो हमारे दिल में है।
इस क्रूर जुल्म और ऐसे आशिके जांवाज़^२ पर,
साफ़ मुझ से क्यों न कह दो क्या तुम्हारे दिल में है,
तुमको शय आवारगाने इश्क कुछ भी है खबर।
ढूँढ़ते फिरते हो जिसको वह तुम्हारे दिल में है।

—'असबक' युलन्दशहरी

×

×

×

चली आती हैं नज़रें धूम से, दर्बारे क्रातिल है,
किसी का सर हथेली पर किसी के हाथ में दिल है।
वह कहते हैं मेरा पयकाँ, मैं कहता हूँ मेरा अरमाँ,
वह कहते हैं मेरा मसकन^३ मैं कहता हूँ मेरा दिल है।

—'बयाँ' मेरठी

×

×

×

तीर लेकर पयामे मौत आये,
होगई खत्म ज़िन्दगी दिल की।

भर गिरीं का जिहा रहा काये,
 वृत्र छोड़े गौ वन गईं दिल को ।
 सो वद जटो दे मेरे वदनु मे,
 छाम होंगे हे अर गुणों दिल को ।
 फिर गरुडार हागवा इनका,
 देख जिया आन होंस्वो दिल का ।
 भिग जमी पर भा इनका नकमे प्ररम,
 अब परी वृत्र वन गईं दिल को ।
 हमने वाला था आस्त्रोंन में गाँव,
 हो गईं उद्दर होंस्वो दिल को ।

—'दीवार' दीरावारी

× × ×

सार ये नसरुट ये भित पणु तक विस्मिल न था,
 तिनरुगानी का सहारा था हमारा दिल न था ।

—'द्विद्वार' सखनवी

× × ×

देखिये गूढ़ दुस्ते आलम सात को नैरगियां,
 और फिर इन्साफ से प्ररमाइये, दिल क्या करे ।

दिल^१ फरेबीये रुखे^२ रौशन को कुछ कहते नहीं,
दिल ही को बदनाम करते हो मेरा दिल क्या करे ।

—‘जाहिद’ इलाहाबादी

× × ×
खींचे हैं अब तो दामन पर उम्मेदो यास के नक़शो ।
कि हर आँसू के कतरे को माले दिल समझते हैं ।

—‘मुजतर’ शाहजहाँपुरी

× × ×
इज़तिराबे^३ इश्क़ से है ज़िन्दगी मुशकिल मुझे,
कोई ला दे मांग कर उनसे सुक़ूने^४ दिल मुझे ।
खून क्या रुलवायेगी नयरंगिये महफ़िल मुझे,
होश में आने न देगी बेखुदीये दिल मुझे ।
क्या हुआ हासिल भिड़क फर सूरते साइल^५ मुझे,
उज्र दिल लेने में क्या था तुम न देते दिल मुझे ।
ले लिया मैंने जो तुमने हाथ उठा फर दे दिया,
दिल के खातिर ग़म दिया या ग़म की खातिर दिल मुझे ।
हिज़्र की तारीक रातें काटने की चीज़ हैं,
मसबिरा मरने का क्यों देता है मेरा दिल मुझे ।

—‘राना’ अकबराबादी

× × ×

१—दिल को धोखा देना, २—चेहता ३—बेज्जारी, ४—झाराम,
५—भिसारी ।

वाद मुदत के फिर उभरी खंजरे कातिल की चोट,
 फिर बहार' आई मज़ा देने लगी फिर दिल की चोट ।
 हां योंही चलती रहे मुझ से मेरे कातिल की चोट,
 वार आंखों से हो आंखों का हो दिल से दिल की चोट ।
 दर्द मन्दों ही से दर्द-दिल का होता है इलाज,
 आप हैं वेदर्द क्या जाने किसी के दिल की चोट ।
 ए उमीदो आरजू अब मैं कहाँ रखूँ तुम्हें ।
 एक तरफ़ जख्म ज़िगर है एक तरफ़ है दिल की चोट
 नालाये पै हमसे अथ 'शातिर' नतीजा क्या हुआ ।
 और उभर आई हवा पाकर तुम्हारे दिल की चोट ।

—'शातिर' इलाहाबादी

× × ×

तूने क्यों कमचलत लुटवाया सरे महफिल मुझे,
 फिर नुमायां कर किसी तरकीब से ऐ दिल मुझे ।
 नज़र करदूँ तेरी नज़रों को दिलों की कायनात,
 सारो दुनिया कास दै दै अपने अपने दिल मुझे ।

—'सागर' अकबराबादी

× × ×

और ही कुछ कह रहा है उनका अन्दाज़े नज़र,
 देख शर्मिदा न करना इज़तिरावे दिल मुझे ।

याद आया है जब थी मेरी हस्ती वे नयाज़,
चाहे अब जो कुछ बना दे धारजूये दिल मुझे।

—'सहर' बिलप्राभी १७

× × ×

एक सफ़ाये क़दल से यह फ़ैज़ हासिल होगया,
जल्वा गाहे दीनो दुनिया अब मेरा दिल होगया।

—'जाहिद' इलाहाबादी

× × ×

लुत्फ़ रहने का सुना है कूचये कातिल में है,
अब वहीं चलकर रहें हम यह इरादा दिल में है।
आप अगर इसको निकालें तो इनायत आप की,
आरजू मचली हुई वैठी हमारे दिल में है।
दम कभी उलभे हुजूम^१ ग़म से यह मुमकिन नहीं,
अब ख्याले यार जब तक तू हमारे दिल में है।
आप को भी ऐसी उल्फ़त^२ हो, तो कैसा लुत्फ़ हो,
आप की सच्ची मुद्बयत जैसी मेरे दिल में है।
साफ़^३ घातिन हमसे बढ़कर कोई दुनिया में नहीं,
वह निफलता है ज़वां से जो हमारे दिल में है। ११

× × ×

कौन उनके तीर नाज़ का काविल नहीं रहा,
 मेरा जिगर नहीं, कि मेरा दिल नहीं रहा ।
 नज़दीक हो कि दूर उसे देखता हूँ मैं,
 अब पर्दा कोई बीच में ऐ दिल नहीं रहा ।
 हम अपने दिल को कह नहीं सकते हम अपना दिल,
 जब अदत्यार ही में कभी दिल नहीं रहा ।
 'विरियाँ' का फौल इश्क में है यह बजा दुरुस्त,
 जब आप ले गये तो मेरा दिल नहीं रहा ।

—'विरियाँ' इलाहावादी

×

×

×



तेरे सीने में जब दिल ही नहीं तो दर्द क्या होगा,
 बला से तेरी गर में दर्द उल्कत से भरा दिल हूँ ।

—'जेबा' लाहौरी

×

×

×

जहाँ बरहम^१ हुए अजज़ा^२ फ़राहम^३ हो नहीं सकते,
 समझ लो सीनये हस्ती में एक टूटा हुआ दिल हूँ ।

—'सफ़ी' लखनवी

×

×

×

१—वितर बितर, २—बदन के हिस्से, ३—इकट्ठा ।

✓ कोई आफत आये मुझ पर इससे कुछ मतलब नहीं,
जैसे अपना दिल भी उस बेदर्द का दिल होगया।
—'शातिर' इलाहाबादी

×

×

×

लुक्ते नज़ारये^१ कातिल दमे विस्मिल आये,
जान जाये तो बला से यह कहीं दिल आये।

—'गालिब' देहलीवादी

×

×

×

इनायत भी नहीं खतरे से खाली खूबरूयों^२ की,
उसी की आ गई शमत उन्हें जो दिल पसन्द आया।
इलाही खैर अब कोई नई आफत फिर आयेगी,
सुना है उनको मेरा इज़तिराये^३ दिल पसन्द आया।

—'सरशार' कसमंडवी

×

×

×

गलत क्यों कर कहे कोई गलत मुशकिल से होती है,
वही तो बात होती है जो सचे दिल होती है।
तराफ़्ती^४ इज़तिराये शौक में मुशकिल से होती है,
बड़ी बकवास मुझ से और मेरे दिल से होती है।
समझ कर इसको अच्छा आप इसे अच्छा नहीं कहते,
बुराई दिल को होती है, मगर किस दिल से होती है।

परायों का तो क्या चर्चा पराये फिर पराये हैं,
 मुहब्बत में अदावत खास अपने दिल से होती है।
 मुहब्बत के मरातिब^१ को बस अहले दिल समझते हैं,
 कि इसकी इब्तिदा^२ भी इन्तिहा^३ भी दिल से होती है।
 जुबां इज़हारें ग्रम से लफजों पूरा कर नहीं सकती,
 जो दिल की बात होती है, अदा भी दिल से होती है।
 तरीका भी नहीं मालूम इतमिनाने खातिर का,
 वही उनकी उचटी बात उचटे दिल से होती है।
 हम उनके ज़ाहिरो बातिन में इतना फ़र्क पाते हैं,
 भलाई मुँह से होती है, बुराई दिल से होती है।
 यही काया मोहब्बत का, वही बुतखाना^४ उल्फ़त का,
 बहुत कुछ अहले दिल में क़द्र दिल को दिल से होता है।
 हसीनों का यह अन्दाज़े तलब^५ भी क्या हसीं निकला,
 खुशामद एक दिल के वास्ते सौ दिल से होती है।
 यह हुसनों इश्क़ में दस्तूर हमने जा बजा^६ देखा,
 जो दिल से चाहता है क़द्र उसकी दिल से होती है।
 वह खाली जा नहीं सकती वह खाली फिर नहीं सकती,
 फ़ुग़ां जो दिल की होती है, दुआ जो दिल से होती है।

—'नूह' नारवी

×

×

×

१—स्तवा, २—आदि, ३—अन्त, ४—मंदिर, ५—मॉंगने का ढंग,
 ६—जगह जगह।

रहा क्या खाक धाकी अब है जिसकी जुस्तजू तुम्हको,
जला कर दिल को अब, खाकिस्तरे दिल देखने वाले ।

—'फर्रुख' बनारसी

×

×

×

आरजूयें तुम पे कुरबाँ, हसरतें तुम पर निसार,^१
हाँ यूँही पूछो ज़रा फिर क्या तुम्हारे दिल में है ।

—'सूफी' नक़बी

×

×

×

इश्को उल्फ़त में नहीं सत्रो सुझूँ हासिल मुझे,
क्यों दिया मेरे खुदा ने इस तरह का दिल मुझे ।
कट रहे हैं दोनों के अय्यामे^२ फुरक़त इस तरह,
दिल को मैं बढ़ला रहा हूँ और मेरा दिल मुझे ।
मेरे अरमानों ने तो दिल को मेरे ग़ारत किया,
देखिये करती है क्या अब आरजूये दिल मुझे ।
जान लेले शौक़ से तुम्हको दिये देता हूँ मैं,
दिल को दे दूँ किस तरह प्यारा है मेरा दिल मुझे ।

—'विरियाँ' इलाहाबादी

×

×

×

जिन्हें जौके^१ हुजूरी ख्वावो^२ वेदारी में हासिल था,
खुदाघन्दा वह आखें कौन सी थीं कौन सा दिल था ।

—‘यास’ अजीमावादी

× × ×

किस मजे का यह इलाका^३ बिस्मिलो कातिल में है,
तीर सतके हाथ में पैकां, हमारे दिल में है ।
नाबके कातिल से कातिल की नज़र कुछ कम नहीं,
फ़र्क इतना है वह दिल के पार है यह दिल में है ।
आँख कातिल से लड़ी थी एक ज़माना हो गया,
लज्जते तीरे नज़र अब तक हमारे दिल में है ।
हर जगह सूरत नई रखता है इसके फितनागर^४,
अश्क^५ आँखों में खटक सीने में सोज़िश^६ दिल में है ।
लोटती हैं आज मेरे घर में दो दो बिजलियाँ,
एक चमक है दाग दिल में, एक दर्द दिल में है ।
अश्क खूं दाग मुहब्बत की अलामत^७ है ‘जलील’,
आँख से होता है जाहिर जो तुम्हारे दिल में है ।

—‘जलील’ मानिकपुरी

× × ×

१—पास रहना, २—सोते जागते, ३—संबन्ध, ४—आड़ा, ५—आँसू, ६—जलन, ७—निशानी ।

हमें तो मार डाला चारासाजों^१ की तसल्ली ने,
हयाते इश्क थी पहलू में जब तक मुजतरिव दिल था ।

—‘दिल’ शाहजहाँपुरी

×

×

×

मेरा सीना किया है चाक ज़ालिम ने यह कह कह कर,
अगर होगी कोई हसरत तो बेशक दिल से निकलेगी ।
हमारे वाद जब होगा हमारा जिक्र यारों में,
दुआयें भगफ़रत, अथ ‘हिज़्र’ सबके दिल से निकलेगी ।

—‘हिज़्र’ शाहजहाँपुरी

×

×

×

हजरते नासेह^२ वजा इरसाद फरमाते हैं आप,
तर्के उल्फत से मगर मज़बूर है दिल क्या करे ।
हथ तक जिसके बर आने की न हो कोई उम्मेद,
वह तमन्ना, वह हवश, वह आरजू दिल क्या करे ।

—‘जौहर’ इलाहाबादी

×

×

×

नीमघाज़^३ आँखों को है शायद किसी का इन्तज़ार,
नींद क्यों आती नहीं अथ इज़तिराबे दिल मुझे ।

—‘सोज़’ मेरठी^४

×

×

×

१—दवा करने वाला, २—नसीहत करने वाला, ३—आधी सुली हुई आँखें ।

जिस जगह जिल्लत से उठवाया सरे महफिल मुझे,
फिर उसी जानिव लिये जाता है मेरा दिल मुझे ।
कैसी फरियादो घुका^१ और नालाओ शेवन^२ कहाँ,
अब तो कुछ करने नहीं देता है ददें दिल मुझे ।
फिर किसी की याद ने तड़पा दिया मानिन्द बर्क^३,
वैठे वैठे हो गया अब इज़तिरावे दिल मुझे ।

—‘सैयद’ मैनपुरी

× × ×

आपने भी कह दिया सौदाइये महफिल मुझे,
अब कहाँ है हिम्मते अज़ें मताये-दिल^४ मुझे ।
जय अज़ल में दिल मिला कौनैन^५ का हासिल मुझे,
शोर बरपा होगया एक दिल मुझे एक दिल मुझे ।
इज़तिरावे दिल से अय ‘सीमाव’, घबराऊँ मैं क्यों,
कुछ समझ कर ही दिया है इज़तिरावे दिल मुझे ।

—‘सीमाव’ अकबरावादी

× × ×

सुनने वाला कौन है नयमा कहीं से छेड़ लें,
साज़े दिल तुम्हको बनाया है सदाये दिल मुझे ।

—‘शाद’ मैनपुरी

× × ×

नावके जानां हुए कुछ इस तरह जुड़ने^१ वतन,
अपने सीने में नज़र आते हैं लाखों दिल मुझे ।

—‘शायक’ फरूखाबादी

× × ×

वेखुदी में कुछ नहीं मालूम है मंज़िल मुझे,
जा रहा हूँ ले चला है जिस तरफ़ को दिल मुझे ।
ज़बह् होने में मज़ा गर्दन कटाने में है लुत्फ़,
कैसे कैसे मशविरे यह दे रहा है दिल मुझे ।

—‘शब्बीर’ छबरामवी

× ✓ × ×

देखते ही तुम्हको यह क्या होगया काविल मुझे,
दिल को मैं रोता हूँ और रोता है मेरा दिल मुझे ।
वनते वनते मौत बन कर रह गईं वेताबियां,
होते होते होगया हासिल सुकूने दिल मुझे ।
एक ही जंज़ीर में जकड़े हुए हैं हुस्नो इश्क़,
उनको करते हैं उदू^२ घदनाम मेरा दिल मुझे ।
वच रहे कुछ तीर तरकश में सितम^३ ईजाद के,
फोड़ें ऐसे में बना जाए सरापा^४ दिल मुझे ।

—‘शमीम’ जल्लेसरी

× × ×

कसरते रंजो अलम से सखत मुशकिल में रहे,
मेरे दिल के हौसले घुट कर मेरे दिल में रहे ।
चश्मे ज़ाहिर भी जो उनको देखती तो किस तरह,
दर्द की सूरत निहां हरदम मेरे दिल में रहे ।

—'शातिर' इलाहाबादी

× × ×

तड़प कर रंग क्या अपना जसायेगी मेरे आगे,
अदायें कुछ दिनों सीखे अभी बिजली मेरे दिल की ।

—'फ़रहत' बनारसी

× × ×

सुन के मक़तल में यह आवाज़ कातिल आया,
जान में जान पड़ी दिल में मेरा दिल आया ।

× × ×

हां आतिशे जां शोज़ मोहब्बज की हरारत,
पूछे कोई उस दिल से कि जिस दिल से लगी है ।
वेसोज़े दुरुं आँख से आता नहीं रोना,
अशक़ों ने बुझाई है जहाँ दिल से लगी है ।
पुरज़े मेरे उड़ते हैं कि टुकड़े मेरे पहिले,
आपस में यह बाज़ी जिगरो दिल से लगी है ।

—'हिज़्र' लखनवी

× × ×

तमनाओं को मिलते खाक में तुमने नहीं देखा,
इधर आओ माले^१ हसरते दिल देखते जाओ ।

—'शौक' साहब^२

X X X

मैं भी नाजां हूँ कि समझा भी किसी काविल मुझे,
मुतमइन^३ है हुस्न देकर इज़तिरावे दिल मुझे ।
देखने दे अय मेरी उम्मीद धोका तो नहीं,
फिसके क़दमों की हुई आहट करीबे दिल मुझे ।
बाग़ में जाकर जिगर के ज़रम ताज़ा होगये,
थी चटक कलियों की एलाने^४ शिकस्ते दिल मुझे ।

—'सबा' अकदरापादी

X X X

आतिसे सोज़े दुरुं भड़की है तो भड़के कुछ और,
झोंकना है आज जलती आग में यह दिल मुझे ।
उफ़ वह पिछली सरगुजश्ते^५ हाय वह आगाज़े^६ इश्क़,
दिल को मैं रोता हूँ बरसों और बरसों दिल मुझे ।
रात भर में उड़ गये सब एक एक नाले के साथ,
सुवह को बिखरे मिले कुछ पारहाये^६ दिल मुझे ।

१—नतीजा, २—इतमोन्नान, ३—सूचना, ४—हालात, ५—आदि,
६—डुकदें ।

खुल गई लो नीची नज़रों की शरारत खुल गई,
 मिल गया लो इन तड़पती विजलियों में दिल मुझे ।
 फिर सम्भल कर अथ ज़बां तस्वीरे इवरत खींच दे,
 फिर वह कहते हैं सुना दे दास्ताने दिल मुझे ।
 इस्क की रंगीनियों का जग्न तो देखे कोई,
 एक लहू की धूँद को कहना पड़ा है दिल मुझे ।
 इस्क का घर यह सज़ा देंगे बहुत अच्छी तरह,
 एक हसरत है फ़कत, दरकार और एक दिल मुझे ।
 आख़िरी मंज़िल में उल्फ़त की कदम रखते हैं 'तैश',
 छोड़ दूंगा दिल को मैं और छोड़ देगा दिल मुझे ।

—'तैश' मारहरवी

× × ×

। अन्न यह आलम है की दे देकर फ़रेवे लुत्फ़ यार,
 मैं शवे गम दिल को तसकी दे रहा हूँ दिल मुझे ।

—'जफ़र' वदायून्ती

× × ×

। लड़कपन में भी था ऐसा मिजाज़ उस सख्त क़ातिल का,
 किया करता था बदला संग-रेज़ों से मेरे दिल का ।

वह आयें नब्ज देखें नब्ज जां नज़राने में ले लें,
ठहरता है इलाज इस शर्त पर वेतायिये दिल का।

—‘तबीब’ मेरठी

×

×

×

पुँव फिर बाहर न निकलेंगे यह मंज़िल देखकर,
तुम चमन को भूल जाओगे मेरा दिल देखकर।

—‘आज़ाद’ अज़ीमावादी

×

×

×

होने दे तेरे अदा का वार कातिल देख कर,
देखकर हाँ देखकर सर देखकर दिल देखकर।

—‘दातिन’ साहब

×

×

×

मुशकिलों में चारागर थे मेरी मुशकिल देखकर,
उनको भी हैरत थी मेरी हालते दिल देखकर।
लाखों ही दिल हैं वहाँ हाज़िर मगर हसरत यह है,
कहते हैं बेचैन हैं हम तो तेरा दिल देखकर।

—‘हफीज़’ अज़ीमावादी

×

×

×

कहरे-तसकी^१ हाथ रख देते हैं सीने पर मेरे,
रह्म आ जाता है उनको हालते दिल देखकर।

—‘साकित’ साहब

×

×

×

चारागर तो खैर हमदम थे मेरे गमखवार थे,
 मौत भी चिल्ला उठी वेताबिये दिल देखकर ।
 वह भी क्या दिन थे कि जब बस्ती थी एक दुनियाये इश्क,
 हुस्न भी हैरान है धरबादिये दिल देखकर ।
 हम समझते थे जफा पेशा हम हैं खुश हो जायेंगे,
 और बरहम हो गये वह पारये^१ दिल देखकर ।
 मैं तो खुद कदता हूँ वह वेदर्द है जल्लाद हैं,
 हाँ मगर चुप लग गई है हालते दिल देखकर ।

—‘सरशार’ कसमंडवी

×

×

×

एक दो दिन और जीने का सहारा हो गया,
 हाथ उसने रख दिया वेताबिये दिल देखकर ।

—‘शम्स’ मालीगामी

×

×

×

✓ मुन्तखिब किसको करे वह चश्मे कातिल देखकर,
 पड़ रही हैं जान पर नजरें मेरा दिल देखकर ।

—‘शैदा’ इटावी

×

×

×

पहले तो मजरूह^१ कर डाला निगाहे नाज़ से,
फेरने आये हैं अब हसरत भरा दिल देखकर ।

—‘महजु’ देहलवी

×

×

×

रंजो गम दर्दों अलम^२ अन्दोह^३ हिर्मा^४ हिन्न में,
सब के सब मेहमां हुए खाली मेरा दिल देखकर ।

—‘मुजतर’ मालीगामी

×

×

×

कौन समझा मुद्आ^५ क्या है निगाहे नाज़ का,
कुछ किया इरशाद उसने जानिवे दिल देखकर ।

—‘वदशत’ कलकतवी

×

×

×

हमारे दोनों बाजू तोड़कर सैयाद^६ ने ज़िद से,
फहा अब तो रिहाई^७ की तमन्ना दिल से निकलेगी ।
कलेजा थाम कर रह जाश्रोगे आगोशे^८ दुशमन में,
किसी शय कोई ऐसी आह भी इस दिल से निकलेगी ।

—‘जिगर’ विसवानी

×

×

×

कर चुका बरवाद तू अय दीदये-गिरयां^९ इसे,
इरक का शरमाया जो कुछ भी हमारे दिल में था ।

१—ज़रमी, २—३-४—दुख, ५—मतलब, ६—घातक, ७—दुदयारा,
८—गोध, ९—रोनेवाली आर्ये ।

हम लगी लिपटी हुई 'अक़दस' कभी कहते नहीं,
कह दिया सब उनके मुँह पर जो हमारे दिल में था ।

—'अक़दस' हैदराबादी

× × ×

✓ बेकरारी जीते जी जाती तो क्या जाती मेरी,
दर्द एक बेदर्द को उल्फ़त का मेरे दिल में था ।

—'द्वोर' रुड़की

× × ×

तुम सरासर रंज देने पर ज़ब्र आमादा हुए,
मैं सरापा दर्द सहने के लिये दिल हो गया ।

—'यास' अज़ीमाबादी

× × ×

जिसे कहते हैं नाकामे तमन्ना हसरते मुर्दा दम आखिर,
वह बन कर आह मेरे दिल से निकलेगी ।
शवे गम घर से जायेगी मगर जब कोई चाहेगा,
किसी के दिल में आयेगी तो हसरत दिल से निकलेगी ।
सितम वह किस पे ढायेंगे सितम दिल पे ढायेंगे,
दुआ किस दिल से निकलेगी हमारे दिल से निकलेगी ।

—'फ़िकरी' साहब

× × ×

दिल की शव और क्या हो इससे अच्छा मशयिला,
दिल को मैं समझा रहा हूँ और मेरा दिल मुझे ।

जानता हूँ मैं कि मौत आयेगी शामे रामे है आज,
किस लिये तस्कीन देना चाहता है दिल मुझे।

—‘ज़हीर’ फरुखावादी

×

×

×

जान देकर इश्क़ का रुतबा हुआ हासिल मुझे,
क्या कहेगा बेवफ़ा अब भी तुम्हारा दिल मुझे।
चाहता हूँ मैं न जाऊँ कूचये दिलदार में,
चैन भी लेने दे लेकिन इज़तिराबे दिल मुझे।
जान तक भी मैं नज़र करने के लिये तैयार हूँ,
आप से बढ़ कर नहीं प्यारा यह मेरा दिल मुझे।

—‘आज़िज़’ अतार्दपुरी

×

×

×

मिट गई वह हसरतो अरमां की दुनिया मिट गई,
वह समां अब हाथ आने का नहीं अब दिल मुझे।

—‘आज़िज़’ मैनपुरी

×

×

×

तू ने अब तेरो फिराक़ ऐसा किया विस्मिल मुझे,
आज दामन पर नज़र आते हैं लगते-दिल^१ मुझे।
मुझको नालों से मुद्ब्यत न आहों से है इश्क़,
बैठने देता नहीं ख़ामोश मेरा दिल मुझे।

इस मेरी फ़रियाद का होगा नतीजा और क्या,
 खाक में एक दिन मिलायेगा यह दर्दे दिल मुझे।
 बहसते दिल की खता क्या दर्दे दिल का क्या कसूर,
 दस्त^१ की जानिव लिये जाता है मेरा दिल मुझे।

—‘अजीज’ शेखपुरी

×

×

×

इश्क़ो उल्फ़त का मज़ा यों कभी हासिल होता,
 लुत्फ़ जब था तेरे पहलू में मेरा दिल होता।
 यह कभी तेरो मुद्बवत से न बिस्मिल होता,
 आप के दिल की तरह काश मेरा दिल होता।
 दिल लगाने का मज़ा जब था दिल आज़ारों^२ से,
 ‘होश’ पहलू में मेरे एक नया दिल होता।

—‘होश’ साहब

×

×

×

गिरह कैसी पड़ी है इस तरफ़ आओ ज़रा देखो,
 तुम्हारी जुल्म में बेशक मेरा खोया हुआ दिल है।
 मज़ा क्या मय-कसो^३ का हिज्र जाना में मुझे आये,
 इधर फूटे हुए सागर^४ उधर टूटा हुआ दिल है।

१—जंगल, २—दिल दुखाने वाला, ३—सद्विरासन करना,
 ४—प्याला।

किसी पहलू किसी करवट नहीं मैं चैन लेता हूँ,
'नज़र' उस शोख पर जब से मेरा आया हुआ दिल है।

—'नज़र' गोरखपुरी

×

×

×

वह सितम किस लिये करते वह जफ़ा क्यों दाते,
मेरे कावू से जो बाहर न मेरा दिल होता।
हो गया इससे यह ज़ाहिर कि है बेदिल तू भी,
कद्र करता मेरे दिल की जो तेरा दिल होता।
इश्क के सदमे जो लिखे थे मेरी किस्मत में,
या खुदा इससे तो बेहतर था बेदिल होता।
इस तरह आप सताते न मेरे दिल को कभी,
आपके दिल की जगह काश मेरा दिल होता।
दिल की लालच से है आज़ार में तख़फ़ीफ़' इतनी,
और वह मुझ पे सितम करते जो बेदिल होता।
ख़ैर से इस तरफ़ उस शोख ने देखा भी नहीं,
न जिगर होता न पहलू में मेरा दिल होता।
लेके दिल मुझसे वह 'आज़म' यह किसी का कहना,
तेरी आघोश में होता जो तेरा दिल होता।

—'आज़म' करबी

×

×

×

मेरी उनकी भरी महफ़िल में होगी,
जुवां पर आयेगी जो दिल में होगी।
वहाँ चुटकी में वह जब तीर लेंगे,
यहाँ एक गुदगुदी सी दिल में होगी।
—'दाय' देहलवी

× × ×

जो कुछ भी खुशी मेरी किस्मत में होती,
तो पहलू में कमबख्त यह दिल न होता।

—'तमन्ना' मुरादावादी

× × ×

मकबूल^१ जो हों शाज़^२ हैं काविल तो बहुत हैं,
आईने के मानिन्द हैं कम दिल तो बहुत हैं।

× × ×

बातिन^३ बहुत हैं ऐसे जो मुशतइल^४ नहीं हैं,
सीने में सब के दिल है सब अहले दिल नहीं हैं।

× × ×

मसरत^५ मुझको अब दुशवार है दुनिया की महफ़िल में,
खुशी की कावलीयत ही नहीं बाक़ी रही दिल में।

× × ×

१—जो पसन्द किया जाय, २—कम, ३—दिल्लो, ४—रौशन,
५—खानन्द ।

शौक विजली से सिवा तेज है कामिल भी तो हो,
दिल की वासीर में क्या शक है मगर दिल भी तो हो ।

× × ×
✓ अथ अल्ल एतराज से कुछ फायदा नहीं,
क्यों करती है जुवान से दिल का मुकाबिला ।

× × ×
यह नजर की नातवानो यह बुतों की जीनतें,
क्या कहूँ 'अकबर' वस अथ अल्लाह मालिक दिल का है ।

× × ×
वयाने मुद्दा से रोक लेता हूँ जवां अपनी,
तमन्ना से है मजबूरीं कि वह गुस्ताख है दिल से ।

× × ×
छुका सकता हूँ मैं सर को जवां को रोक सकता हूँ,
जवाव इसका मगर क्या है कि तू काफिर नहीं दिल से ।

—'अकबर' इलाहावादी

× × ×
वादये फरदा^१ वह कर भी लें तो क्या हासिल मुझे,
आज जीने ही न देगा इजतिरावे दिल मुझे ।
फेर ली आंखें खफा होकर यह क्या गुस्सा हुआ,
मैं तो गुस्सा जब समझता फेर देते दिल मुझे ।

मैं वह हूँ दिल देके तुमको दिलवर^१ कर दिया,
 तुम वद हो दिल लेके मुझसे कर दिया वे दिल मुझे।
 यह वही हालत है कि दुश्मन को भी जिस पर रहम आवे,
 यानी अब करवट बदलवाता है दर्द दिल मुझे।
 जान का दुश्मन कहा मैंने तो फ़रमाने लगे,
 और तुमने क्या समझ कर देदिया था दिल मुझे।
 दिल लगाने का नतीजा और क्या होगा क्रम,
 अब वह मेरे दिल को तड़पायेंगे मेरा दिल मुझे।

—‘क्रम’ वदायूनी

X

X

X

हां तड़प जाये तड़पता देख कर क्रांतिल मुझे,
 बिजलियाँ लादे खुदारा^२ इज़तिरावे दिल मुझे।
 क्यों सताने आये यादे इशरते साहिल मुझे,
 रक़ कर दे काश मौजे इज़तिरावे दिल मुझे।
 ज़िन्दगी को मैं सुकूने फल्व पर कर दूँ निहार,
 चैन लेने दे जो वरबादे तमन्ना दिल मुझे।

—‘कुरता’ क्रादिरा

X

X

X

यह तकाज़ा है देखा दे कूचये कातिल मुझे,
एक बलायेनागहानी^१ हो गया है दिल मुझे ।

—'कलीम' फरुखावादी

× × ×

छुट के मंज़िल ने किया मुस्तग्निये^२ मंज़िल मुझे,
अब यह दिल जाने कहां ले जा रहा है दिल मुझे ।
हां मिटा देता मआले^३ सैये ला हासिल^४ मुझे,
वह तो यह कहिये दरे क्रिस्मत पे लाया दिल मुझे ।

—'मानी' जायसी

× × ×

आखिर आपस की जुदाई का यहो अंजाम^५ है,
दिल को मैं रोता था और अब रो रहा है दिल मुझे ।

—'मायल' मैतपुरी

× × ×

दो घड़ी के वास्ते मिल जाये याराये^६ सखुन,
आज कहना है किसी से माजराये दिल मुझे ।
वाक्रिफे^७ दैरो^८ हरम^९ लाखों मिले तो क्या मिले,
एक ही काफ़ी था मिलता आशनाये दिल मुझे ।

—'मोहसिन' अमृतसरी

× × ×

१—आकस्मिक प्रकोप, २—वेपरवाद, ३—नतोजा, ४—बेखर कोशाय, ५—नतोजा, ६—मियतन, ७—नैदिर, ८—मदा ।

तू भी है दिल में तेरी उलपत भी राम भी दर्द भी,
 क्या कहूँ किस तरह का हक़ ने दिया है दिल मुझे।
 एक दिल में इतने अरमानों की गुञ्जाइश नहीं,
 काश हो जाते अता रोज़े अज़ल दो दिल मुझे।
 मैं वह दिल रखता हूँ जिसमें है तमन्ना आपकी,
 आपकी खाहिश मिले एक बेतमन्ना दिल मुझे।
 अल्ला अल्ला यह निराली दिलबरी की शान है,
 कर गये दिल लेके वह 'महफूज' अहले दिल मुझे।

—'महफूज' साहब

×

×

×

देख कर दुनिया में अपनी ज़ात से गाफिल मुझे,
 कौन यारब दे गया ताज़ीर^१ कदें दिल मुझे।
 ज़िन्दगी आसां थी लेकिन होगई मुशकिल मुझे,
 कौन दुनिया में मिला रम्ज़^२ आशनाये दिल मुझे।
 बैठने देते नहीं 'बहशत' मुझे दम भर फहीं,
 चैन लेने ही नहीं! देता है दर्द-दिल मुझे।

—'बहशत' साहब

×

×

×

नज़्जअ^१ के आलम में यह कहना किसी का वार-वार,
कब्र में क्या चैन लेने देगा ददें दिल मुझे ।

—‘सुरताक़’ मैनपूरबी

×

×

×

वह न आयेंगे न यह बदबख्त^२ पायेगा सूकून^३,
एतबार उनका, न अब है एतबारे दिल मुझे ।
मैं कहीं जाऊँ यह ज़ालिम ले पहुँचता है वहीं,
चैन से रहने नहीं देता है मेरा दिल मुझे ।

—‘मोईन’ फ़रुज़ावादी

×

×

×

तेरे जलवे^४ की इनायत या मेरे दिल का कुसूर,
आज हर ज़र्रा नज़र आया जवाबे दिल मुझे ।

—‘मैक़श’ अकबरावादी

×

×

×

आते हैं वह पहलू में अगर कोई घड़ी को,
तकदीर से क़ाबू में मेरा दिल नहीं होता ।
कह उठता हूँ जो दिल की लगी देख के तुमको,
मैं क्या करूँ क़ाबू में मेरा दिल नहीं होता ।

—‘अफ़सर’ अमरोहवी

×

×

×

यहां तक रोई आंखें दृशते रंगी^१ के तसब्बर^२ में,
 कि जितना खून था वह रफ्तः रफ्तः बह गया दिल का।

—‘अंजुम’ मुरादाबादी

×

×

×

मजमा जहान का तेरी महफिल में रह गया,
 वीराना^३ जो बचा वह मेरे दिल में रह गया।
 वह अपनी आरजू तो इशारों में कह गये,
 अरमान मेरे दिल का मेरे दिल में रह गया।

—‘कलीम’ लखनवी

×

×

×

जवाये खत दिया तो यह दिया कासिद को जालिम ने,
 फहो मानम करें कुछ दिन अभी हसरत भरे दिल का।
 बहार आने से पहिले चारागर तद्बीर लाजिम है,
 कहीं ऐसा न हो नासूर फिर रिसने लगे दिल का।

—‘मशक़’ लखनवी

×

×

×

नज़र मिज़गां^४ की उलफ़त जब से है बेठाव रहता हूँ,
 यह फांटा देखिये कब तक निफ़लता है मेरे दिल का।

—‘नज़र’ अचरानवी

×

×

×

वह अपने आप को समझे अगर कातिल समझते हैं,
 बहरहाल^१ उनको हम धारामे जानो दिल समझते हैं।
 उन्हें लिक्खा है हाले दिल मगर मैं यह समझता हूँ,
 ये वह बातें हैं जिनको सिर्फ़ अहले दिल समझते हैं।
 उन्हें ज़िद से गरज है अर्ज़ मतलब से इलाक़ा क्या,
 वह अपने दिल के आगे कब किसी का दिल समझते हैं।

—'राज़' गनवरी

×

×

×

क्या कहूँ अब अय खुदा है हर तरह मुश्किल मुझे,
 दिल से है कातिल फुजूं^२ कातिल से बढ़कर दिल मुझे।

—'वशीर' कासगंजवी

×

×

×

शौक बेहद चाहिये और ज़त्ने कामिल चाहिये,
 गो बहुत पुरपेच^३ राहे इस्क है दिल चाहिये।
 पासे खुदारी^४ भी नज़रे बेकरारी हो गया,
 एक एक से पूछता फिरता हूँ क्या दिल चाहिये।

—'असर' लखनवी

×

×

×

यह न पत्थर है और न है शीशा,
 अरे सफ़ाक^५ यह मेरा दिल है।

१—हर हालत में, २—ज्यादा, ३—देना मेरा, ४—अरने को ब्याज करना, ५—अतिब।

आरजुओं का था कभी मसकन^१,
अब तो चजड़ा सा खानये दिल है।

—'नैसां' हैदराबादी

× × ×
मुनासिब कब है अपने घर को यों वीरान कर देना,
तुम्हीं आकर रहोगे फिर कभी उजड़े हुए दिल में।

—'रौनक' गयावी

× × ×
वह देखते तो हैं नीची नज़र से दिल की तरफ़,
वह बेवफा ही सही कद्रदां तो हैं दिल के।
यह जीते जी तो नहीं दिलसे अब निकल सकते,
यह तेरे तीर तो अरमान बन गये दिल के।

—'शैदा' इटावी

× × ×
उसी जानिब हमें तर्गीब^२ देकर ले चला है दिल,
लुटा करते हैं जिस मंज़िल में अक्सर काफ़िले दिल के।
सम्हल कर पांव रखना अय सितमगर^३ अपने कूचे में,
पड़े हैं जा वजा रस्ते में टुकड़े शीशये दिल के।

—'अदीब' कलकत्तवी

× × ×

समझ में कुछ नहीं आता कशिस^१ है कैसी मंज़िल में,
वह आते हैं मेरी आँखों से होकर खानये दिल में।

—'गश' असौलबी

× × ×

मोहब्बत में मुसीबत पर मुसीबत पेश आती है,
थभी होता है क्या क्या हज़रते दिल देखते जाओ।

—'आजिज़' मेरठी

× × ×

या इलाही क्या कोई ताजा सितम याद आ गया,
उनके घर अब क्यों लिये जाता है मेरा दिल मुझे।
उनसे क्या 'नाशाद' उनके दिअ का शिकवा करूँ,
जब दया देने लगा कम्बलत मेरा दिल मुझे।

—'नाशाद' सैनपुरी

× × ×

मेरी मुश्किल हो गई यों थौर भी मुश्किल मुझे,
बहत^२ घरगस्ता^३ है लज्जत-कश^४ मिला है दिल मुझे।

× × ×

पहले जिस तीरे नज़र ने कर दिया घायल मुझे,
रह के दिल में अब नज़र आता है वह एक दिल मुझे।

१—खिंपार, २—भाग्य, ३—घिरा हुआ, ४—मज़ा लेना,

आँख ऐसी कर अता अय मुर्शिदे-कामिल^१ मुझे,
जरे जरे में नजर आने लगे एक दिल मुझे।

—'नाजुक' शिकोहावादी

×

×

×

अपने आशिक का न होगा कोई क्रातिल ऐसा,
शक तो चाँद सी है आपको और दिल ऐसा।
'नरम' ने जुलम सहे और कभी उफ़ मुँह से न की,
हमने देखा जिगर ऐसा न कहीं दिल ऐसा।

—'नरम' लखनवी

×

×

×

दे रही है क्यों फ़रेंच सैये ला हासिल मुझे,
हाय मरने भी न देगी आरजूये दिल मुझे।
शौक़े बेहद ने न रक्खा ज़ब्त के क्राविल मुझे,
आज करना ही पड़ा अफ़शाये राजे^२ दिल मुझे।
बदगुमाने इश्क़ होकर यह मिला हासिल मुझे,
अब किसी सूरत नहीं है एतवारें दिल मुझे।
देखना है इन्तिहाये गर्मिये महफ़िल मुझे,
अय मुग़नी^३ छेड़ना है आज साज़े दिल मुझे।

आखिरी मंज़िल पे भी टिकते नहीं तेरे कदम,
अब कहाँ ले जायगा अब इज़तिराबे दिल मुझे ।

—‘नज़ीर’ कायमगंजवी

×

×

×

पी के भी मयखानये दुनिया में अब याफ़िल हुआ,
कर गई हुशियार मेरी हर सदाये^१ दिल मुझे ।

—‘निशात’ साहब

×

×

×

रास^२ क्या आती हवाये कूचये कातिल मुझे,
मैं समझता था जो कुछ समझा रहा था दिल मुझे ।
चैन से जीने नहीं देते ज़माने में कभी,
एक तेरी याद काफ़िर एक मेरा दिल मुझे ।
मंज़िले जाना से भी आगे कोई मंज़िल है क्या,
अब कहाँ लेकर चला है इज़तिराबे दिल मुझे ।
याद आती है वह हुस्नो इश्क की महफ़िल ‘नसीर’,
जिसमें पैगामे अजल^३ देने चला था दिल मुझे ।

—‘नसीर’ फरखावादी

×

×

×

आरहा है फिर ग्याले नावके कादिल मुझे,
 देखिये अब क्या दिखाता है मजाके दिल मुझे।
 आज फिर उठता नज़र आता है हथ्रे इज़तिराब^१,
 आज फिर बढ़ता नज़र आता है दर्द दिल मुझे।
 एक सी दोनों की कैफ़ियत है इसके इश्क में,
 दिल को अब 'नौशाह' में रोता हूँ मेरा दिल मुझे।
 —'नौशाह' मारहरवी

×

×

×

कोई भी मुश्किल न हो महसूस फिर मुश्किल मुझे,
 काश अपने होश में रहने दे मेरा दिल मुझे।

—'नुकीले' मैनपुरी

×

×

×

उनकी नज़रों में बना दे रहूम के कादिल मुझे,
 हां देखा दे एक नई दुनिया निगाहे दिल मुझे।
 पेशदावर^२ जब सरे महशर^३ मचाया मैंने गुल,
 दे दिया चुपके से लाकर बसने मेरा दिल मुझे।
 हर कदम पर खाक के ज़रें उठा लेता हूँ मैं,
 दे रही है सैकड़ों धोके तलारो दिल मुझे।

होगया यासो^१ तमन्ना का भी अब किस्सा तमाम,
दिल को मैं गुम कर चुका हूँ खो चुका है दिल मुझे ।

—'बेकार' डुबाइवी

×

×

×

होता नहीं जुदा कोई मेरे ख्याल में,
आँखों के सामने है कभी दिल के पास है ।
उठ्टा जो हाथ जोफ़ से सौ मुशकिलों के बाद,
वह यासो राम के साथ मेरे दिल के पास है ।
अब मुझको दूर रहने का शिकवा नहीं रहा,
दिल उसके पास है वह मेरे दिल के पास है ।
जो आँसुओं से बुझ नहीं सकती किसी तरह,
भड़की हुई वह आग मेरे दिल के पास है ।
तुम कहते हो कि मुझको नहीं तुम से वास्ता,
तसवीर फिर यह किसकी मेरे दिल के पास है ।

—'विस्मिल' इलाहाबादी

×

×

×

लड़ी थी आँख उनसे उस घड़ी को याद करता हूँ,
कभी फुरसत जो मिलती है मुझे बेताबिये दिल से ।
इसे रहती है एक ताज़ा सितम को आये दिन ख्वाहिश,
ग़ज़ब में जान मेरी पड़ गई ईज़ा^२ तलय दिल से ।

नहीं मालूम इसमें किस गुले राना का जलवा है,
कि हर एक सांस के साथ आ रही है वूये खुश दिल से।
—'असर' रामपुरी

× × ×

उसकी निगाहे नाज़ के क्लाबिल न समझना,
अय वेखवरो दिल को कभी दिल न समझना।
बेकार सी एक हस्तिये वातिल^१ न समझना,
नत्रशे कदमे थार है यह दिल न समझना।
खुद दे के कहा दर्द मुहब्बत यह किसी ने,
अब आज से अपना इसे तुम दिल न समझना।

—'जिगर' मुरादाबादी

× × ×

हम किस पर असर डालें अपना आदावे वफ़ा से दूर हैं सब,
जो दर्द भरे का दर्द करे यों दर्द भरा दिल कोई नहीं।
क्या फ़िक्र मेरी क्या ज़िक्र मेरा, मैं मोरिदे-ग़म^२ पामाले-सितम^३,
इसकी वह किसी दिन जांच करें है कोई कि खुश दिल कोई नहीं।
वह रंग मुहब्बत वूये वफ़ा वह ज़ुलम सितम वह दाग़े अलम,
जितने नज़र आये गुञ्जो^४ गुल इनमें से मेरा दिल कोई नहीं।

—'नूह' नारवी

× × ×

१—नाशकरी जीवन, २—दुःख में रहना, ३—जुलम से कुचबे
जाना, ४—परिचर्या।

अपना हर अंदाज़ क्रांतिल देख लो,
 फिर भी दिल देता हूँ मैं दिल देख लो ।
 ग़ैर दिल देगा तुम्हें अच्छी कहीं,
 पेरतर तुम ग़ैर का दिल देख लो ।
 सब जफ़ाजू' पर 'दुआ' भरता हूँ मैं,
 मेरी हिम्मत देख लो दिल देख लो ।

—'दुआ' हुवाइवी

X

X

X

ग़मे फुरक़त में हर दम सामने रहते हैं मुशकिल के,
 न दिल है मेरे क़ाबू में न तुम क़ाबू में हो दिल के ।
 अरे तेरे अदा अच्छी तरह मैं तुम्ह' से वाकिफ़ हूँ,
 किये तू ने हाँ तो टुकड़े मेरे हसरत भरे दिल के ।
 कभी वह मुझ से मिल जायें कभी वह मेरे घर आयें,
 निकालें हसरतें दिल की निकाले हौसले दिल के ।

—'आजिज़' अताईपुरी

X

X

X

न मिलने दी नज़र ग़ैरों से उनकी इस वधाने से,
 किसी की आंख का क्या देखता दिल देखते जाओ ।
 तुम्हारे हर कदम पर एक नया गुल खाक होता है,
 तुम अपने हर कदम पर एक नया दिल देखते जाओ ।

नमकपाशी^१ ही जब मंजूर है जगमे मुहब्बत पर,
तो फिर तुम मुस्करा कर जानिवे^२ दिल देखते जाओ।

—‘अफसर’ अमरोही

× × ×

मेरे पहलू में कुछ है तो सहो डूबा हुआ खूँ में,
यह पैकां^३ है तुम्हारा या मेरा दिल देखते जाओ।
मेरे पहलू में आकर सीख जाओ अपने पैकां से,
मिला करते हैं यों आपस में दो दिल देखते जाओ।

—‘नूर’ हसनपुरी

× × ×

नहीं देखी जो अरमानों की महफिल देखते जाओ,
मेरे दिल में जमी है तुम मेरा दिल देखते जाओ।
मफां ऐसा मकीं ऐसा नहीं देखा ‘उफक़’ तुमने,
मेरा गम देखते जाओ मेरा दिल देखते जाओ।

—‘उफक़’ अमरोही

× × ×

तड़पने में यह इसका जोमे वातिल देखते जाओ,
जिगर फहता है मैं हूँ दूसरा दिल देखते जाओ।

कोई टूटा हुआ पैमाना तुमने बरमे साक्री में,
न देखा हो तो यह टूटा हुआ दिल देखते जाओ।

—‘अरमान’ ग्वालियारी

×

×

×

तुम्हें हो भी न कुछ दरपेश मुशकिल देखते जाओ,
यहां आओ मेरा दुक्खा हुआ दिल देखते जाओ।
अभी तो और भी सहने पढ़ेंगे जुल्म उल्फत में,
अभी देखा ही क्या है हज़रते दिल देखते जाओ।
शबे गम^१ इलतजाए मौत क्यों अय हज़रते ‘अज़हर’,
अभी क्या है अभी तो हालते दिल देखते जाओ।

—‘अज़हर’ खुर्जवी

×

×

×

ठिकाने तीर के मंज़िल व मंज़िल देखते जाओ,
मेरा पढ़ला, कलेजा, सीनये दिल देखते जाओ।
यह वेनैनी, यह वेतावी, यह आहे सर्द यह नाले,
सुहब्बत के मज़े अय हज़रते दिल देखते जाओ।

—‘रहमत’ बलन्दशहरी

×

×

×

जो दिल तुमको पसंद आयेगा लोगे तो वही लेकिन,
हमारा भी जफ़ाकश^१ वावफ़ा दिल देखते जाओ।

—‘अनवर’ अमरोही

× × ×

ज़रूर आयेंगे अय ‘तसलीम’ उन्हें लेकर ही आयेगा,
असर लेकर गया है नालये दिल देखते जाओ।

—‘तसलीम’ मेरठी

× × ×

निगाहें फेर कर हालाते बिस्मिल देखते जाओ,
फ़िदा होता हूँ मैं तुम पर मेरा दिल देखते जाओ।

कभी-पहलू में दिल दिल था मगर अब गम से छलनी है,
पए इबरत^२ नज़र डालो मेरा दिल देखते जाओ।

—‘चिरती’ देहलवी

× × ×

जो आए हो तो बैठो भी घड़ी भर मेरे पहलू में,
तुम अपनी आंख से खुद हालते दिल देखते जाओ।

—‘चमन’ हापुड़ा

× × ×

मेरी खामोशियों की कद्र शायद तुमको हो जाये,
मेरे दिल में हुजूमे नालये दिल देखते जाओ।

अभी टुकड़े किये हैं मैंने अपने ही गरेबां के,
 अभी करती है क्या क्या बहसते दिल देखते जाओ।
 कहां तक जोर सहता हूं वहां तक जब्त करता हूं,
 जफायें करते जाओ तुम मेरा दिल देखते जाओ।
 तसल्ली के लिये नवशा तुम्हारा हमने खींचा है,
 अगर शक हो उठा कर पर्दे दिल देखते जाओ।
 जिगर पर तुमने जिस तिरछी नज़र का तीर मारा है,
 इसी तिरछी नज़र से जानिबे दिल देखते जाओ।

—'हमीद' मेरठी

× × ×

१) तलाशे दिल में आये हो मेरी आगोश^१ खाली है,
 नहीं है इसमें कुछ जुज^२ हसरते दिल देखते जाओ।

—'गफ़कार' मेरठी

मैं अपनी जान देने के लिये मकतल^३ में आ पहुँचा,
 मेरा शौके शहादत हसरते दिल देखते जाओ।

—'हाफ़िज' मेरठी

× × ×

२) तुम्हारा शोलये-उल्फत^४ भी शोला किस बला का है,
 फुंका जाता है पहलू में मेरा दिल देखते जाओ।

१—गोद, २—सिवाय, ३—फूल की जगह, ४—प्रेम का अंगार।

अभी खुल जायगा यह वाक्फा है कौन दोनों में,
देखा दो अपना दिल मुझको मेरा दिल देखते जाओ।
तरफ़ी छत्र में हो और तुम्हें अल्लाह खुश रखे,
ज़रा 'खुशतर' का भी हो जाये खुश दिल देखते जाओ।

—'खुशतर' मेरठी

×

×

×

✓ मेरा दिल तोड़ते ही चल गिये वह वाह री किस्मत,
यह कहता रह गया मैं हसरते दिल देखते जाओ।

—'दबीर' रुड़की

×

×

×

खुदा जाने अभी किस बला का सामना होगा,
अभी क्या है अभी अय हज़रते दिल देखते जाओ।
जहाँ जाते हो जाना, तुमको कोई रोक सकता है ?
मगर दम भर मेरी बेताबिये दिल देखते जाओ।
नज़र आयेंगी लाखों तुरबतें चम्मीद अरमां फी,
जहां देखा है आलम एक मेरा दिल देखते जाओ।
वफ़ाओं फी बलबदी से जफ़ायें पस्त होती हैं,
सितम के साथ ही तुम हिम्मतें दिल देखते जाओ।

—'ज़ार' मेरठी

×

×

×

अगर मंजूर है कुछ इन्तिहां लेना तो विस्मिह्लाह^१,
 मैं तुम पर जान दूँ और तुम मेरा दिल देखते जाओ।
 किसी के इश्क में बरबाद हो जाना नहीं काफी,
 देखाता है अभी क्या क्या हमें दिल देखते जाओ।
 न देखा है न देखें वह निगाहे लुत्फ से हरगिज़,
 कदो तुम लाख उनसे हालते दिल देखते जाओ।

—'जेवर' फ़रुखाबादी

X X X

✓ यह माना हमने तुम्हें नफ़रत है हसरत भरे दिल से,
 न देखो दिल मगर बेताबिये दिल देखते जाओ।

—'सर्दार' नज़ीबाबादी

X X X

वही हम हैं वही तुम हो वही दिल है वही हसरत,
 निगाहे नाज़ से फिर जानिये दिल देखते जाओ।
 सदा हर सिम्त से यह आ रही है क्यूे-क़ातिल^२ में,
 मेरा दिल देखते जाओ मेरा दिल देखते जाओ।

—'शम्स' गयाबी

X X X

अलम^१ के यास^२ के हसरत के ग़म के दाग हैं लाखों,
यह घर का घर चरागां^३ है मेरा दिल देखते जाओ।

—'शमसाद' साहब

×

×

×

उधर कहते हैं सब अंदाज़े क्रातिल देखते जाओ,

इधर मेरा इशारा है मेरा दिल देखते जाओ।

तगाफ़ुल^४ की शिकायत फिर कहीं यह ग़ैर मुमकिन है,

जो तुम तिरछी निगाहों से मेरा दिल देखते जाओ।

अगर उस शोला रू^५ के इश्क में यह हाल है 'शोला',

तो जलकर खाक भी हो जायगा दिल देखते जाओ।

—'शोला' देहलवी

×

×

×

दमें आखिर है एक बेकस^६ की मुशकिल देखते जाओ,

मुझे देखो न देखो रुखसते दिल देखते जाओ।

यह अलम हुस्न का फिर यह खिरामे-नाज़^७ मस्वता,

नज़र हर हर कदम पर आयेंगे दिल देखते जाओ।

अभी क्या है अभी क्यों हमपे हैंसते हो जफ़ा वालो,

वनेगा एक दिन नज़रो बफ़ा दिल देखते जाओ।

—'सरशार' फसनंदवी

×

×

×

१—दुघ, २—निराशा, ३—तीरान, ४—गाफ़ुल, ५—घनकला
मुस्तदा, ६—फ़रस, ७—ख़फ़लत भरते दुई प्याक ।

नहीं यह काम का खारे तमन्ना इसमें लाखों हैं,
न हो वावर^१ तो यह काटों भरा दिल देखते जाओ।
बुरा हो तेरा वेताबी^२ खफ़ा वह हो गये मुफ़ से,
यह उनसे क्यों कहा था हसरते दिल देखते जाओ।

—'सरीर' साहब

× × ×

खदंगे^३ नाज़ की आराम मंज़िल देखते जाओ,
तुम अपनी चाह में डूबा हुआ दिल देखते जाओ।
अदायें हैं तुम्हारी जहर कातिल की बुझी छुरियाँ,
इन्हें जो भोंक ले सीने में वह दिल देखते जाओ।
जिगर के जख़म, दिल के आवले, नासूर सीने के,
यह सब कुछ देखकर टूटा हुआ दिल देखते जाओ।

—'अतीक' हसनपुरी

× × ×

बिनाये^४ नाज़िरो^५ खल्लाके^६ कामिल देखते जाओ,
बहुत देखी है दुनिया एक मेरा दिल देखते जाओ।

—'अयाँ' मेरठी

× × ×

नहीं बिगड़ा अभी कुछ बाज़ आओ अपनी बातों से,
न लाये रंग यह टूटा हुआ दिल देखते जाओ।

१—यक्कीन, २—बेचैनी, ३—तोर, ४—दुनियाद, ५—नाश करना,
६—दरवर।

न देखी हो अगर जाने जहाँ उजड़ी हुई दुनिया,
तो पहलू चीर कर बरबादिये दिल देखते जाओ।

—‘आलम’ फरमीरी

× × ×

सदाये^१ दिल-खराश^२ आती है हरदम मेरे सीने से,
खुदा के वास्ते तुम हालते दिल देखते जाओ।
तुम्हारे नावके अन्दाज़ से जखमी हुए दोनों,
कलेजा देखते जाओ, मेरा दिल देखते जाओ।

—‘गरीब’ सहारनपुरी

× × ×

मेरी आँहे रसा चलते हुए जादू से क्या कम है,
चले आओगे खुद थामे हुए दिल देखते जाओ।

—‘फरोग’ भरतपुरी

× × ×

अगर जाते हो जाओ शौक से मैं कुछ नहीं कहता,
मगर तुम एक नज़र बेताबिये दिल देखते जाओ।
वह ठुकराते गये और हसरतें कहती गयीं ‘कासिम’,
ज़रा ठहरो यही है क्रमे बेदिल देखते जाओ।

—‘कासिम’ मुरादाबादी

× × ×

बजाहिर कुछ नहीं दिल में लहू की चन्द बूंदें हैं,
हकीकत में बड़ी शै है मेरा दिल देखते जाओ ।

—‘कामिल’ मेरठी

×

×

×

सुभे पामाल करना है तो करना शौक से लेकिन,
मेरी हसरत मेरा अरमाँ मेरा दिल देखते जाओ ।

—‘नज़र’ अम्बालवी

×

×

×

तड़पता है वरंगं सुर्ग-विस्मिल^१ देखते जाओ,
कहाँ जाते हो आओ तुम मेरा दिल देखते जाओ ।

—‘यूसुफ’ शाहजहाँपुरी

×

×

×

मेरे मरकद^२ पर अरमानों की महफ़िल देखते जाओ,
यही है दसन हर एक हसरते दिल देखते जाओ ।
जो है मंजूर तुमको इमतिहाने आशिके शैदा,
मैं हाज़िर हूँ ज़िगर वीरो मेरा दिल देखते जाओ ।

—‘क़मर’ अकबराबादी

×

×

×

तुम्हारे तीर को दिल म जगह दी किस मुहब्बत से,
मेरे पहलू में यह है दूसरा दिल देखते जाओ।

—‘नकहत’ शिकोहावादी

×

×

×

गम है क्या तुम शोक से हो जाओ ‘विस्मिल’ से अलग,
यह समझ लो हो नहीं सकते मगर दिल से अलग।
यह तो मुमकिन है मगर यह गैर मुमकिन है जरूर,
मैं तेरे दिल से अलग हूँ तू मेरे दिल से अलग।

×

×

×

न है कोई उवाहिश न है कोई शरमां,
मिलो हमसे तुम हसरते दिल यही है।
तमाशा दिखाये जो दोनों जहां को,
जरा आप देखें तो वह दिल यही है।
वह मुठ्ठी में क्या शै छुपाये हुए हैं,
दिखायें दिखायें मेरा दिल यही है।

—‘विस्मिल’ इलाहावादी

×

×

×

जिस दिल से उनकी बज़्म' में जाता हूँ मैं कभी,
लौटा न एक रोज़ भी वह दिल लिये हुए।

राहे वफ़ा में लुत्फ़ तो जब है कि यों चलें,
 मैं आपका दिल, आप मेरा दिल लिये हुए ।

—'नशतर' साहब

×

×

×

बेखुदी में कह दिया है आप से राजे नेहां^१,
 आप के मुंह तक रहे यह आप के दिल में रहे ।
 वक़्त^२ हुस्ने यार इतनी किसलिये है बेकरार,
 यह मेरी आंखों में ठहरे यह मेरे दिल में रहे ।

—'बर्क' देहलवी

×

×

×

किस कदर आवाद या मेरा दिले बरवाद भी,
 जिसके हर ज़र्रे से पैदा एक नया दिल हो गया ।
 हर किसी को यों तो पहलू में मिला है दिल भगर,
 जिस के दिल पर पड़ गई तेरी नज़र दिल हो गया ।

—'अम्र' गनोरवी

×

×

×

हाँ सितम कर तुम्हें कुछ लुत्फ़ जो हासिल हो जाय,
 तुम्ह को मंजूर है बरवाद मेरा दिल हो जाय ।
 उनका अरमान कि खूने दिले आशिक कीजें,
 मेरी इसरत कि हर एक क़तरये खू दिल हो जाय ।

मोहब्बत के सितम के नाज़ के काबिल समझते हैं,
खुदा का शुक्र है वह मेरे दिल को दिल समझते हैं ।

—‘कृष्णा’ रोहतकी

× × ×

जान लेता है तसब्बर में भी एक अंधोह ररक,
गैर उसके दिल में है और वह हमारे दिल में है ।

—‘सालिक’ साहब

× × ×

✓ चाहते हैं यों हसोनों को ‘ज़की’ ग़ाफिल कहीं,
यह भी कोई बज़ा है आंखें कहीं हैं दिल कहीं ।

—‘ज़की’ देहलवी

× × ×

सीने से हाय यास ने सब कुछ मिटा दिया,
जिस दिल में दर्द था मेरे वह दिल नहीं रहा ।

—‘रशकी’ साहब

× × ×

हुए जब एक दो दिल, फूट कैसी तफ़रका' कैसा,
तुम अपना दिल समझते हो हम अपना दिल समझते हैं ।

—‘आज़ाद’ लसनवी

× × ×

जो दिल था मेरे पहलू में वह है अब उनकी मुट्ठी में,
इसी वायस से शायद वह मुझे वेदिल समझते हैं।

—'इन्साफ' रंगूनवी

× × ×

✓ उन्हीं पर भरते हैं हम जिनको इस काबिल समझते हैं,
उन्हीं को देते हैं दिल भी जो दिल को दिल समझते हैं।

—'अहकर' सूरती

× × ×

तोड़ना तीरे निगाहे नाज़ से मुश्किल न था,
संग दिल इन्साफ कर पत्थर किसी का दिल न था।
ले गई पहलू से दुज़दीदा निगाहें' किस तरह,
वे खबर इतना तो अय 'हामिद' जिगर से दिल न था।

—'हामिद' लखनवी

× × ×

जिगर से नावके तीरे सितम खींचे तो क्या खींचे,
मज़ा जब है निकालो आरजू हसरत भरे दिल की।

—'रम्ज़' कादरी

× × ×

मताये ज़ोस्त^१ क्या हम ज़ोस्त का हासिल समझते हैं,
जिसे सब दर्द कहते हैं उसे हम दिल समझते हैं।

—‘असगर’ गोएडवी

× × ×

आशिकों वं दिल तुम्हें क्या दें, किसी काविल नहीं,
दिल जो हो सब कुछ है लेकिन कुछ नहीं गर दिल नहीं।
ले गई शायद निगाहे शौक उनकी ले गई,
आज ‘वाहिद’ क्या है पइलू में हमारे दिल नहीं।

—‘वाहिद’ विलग्रामी

× × ×

शिद्दते, आज़ार^२ से यह फैज़ हासिल हो गया,
खूंगरे गम रफ्तः रफ्तः अब मेरा दिल हो गया।
लुत्फ़ कर या कहर कर इस से मुझे मतलब नहीं,
मैं ने तुम्हको देदिया दिल अब तेरा दिल हो गया।
सौ अदा से जो चुभा था आपका तीरे नज़र,
रहते रहते अब वही दिल में रगे-दिल हो गया।
हुस्नो उल्फ़त ने दिखाया अब ‘ज़या’ उल्टा असर,
ले के मेरा दिल वह मुझ से और बरदिल हो गया।

—‘ज़या’ देवानन्दपुरी

× × ×

एक का अरमान जाने दूसरा मुमकिन नहीं,
हम से पूछो तो बतायें क्या हमारे दिल में है।

—'अज़ीज़' मिर्ज़ापुरी

×

×

×

|| रोज़ महशर^१ क्या बताऊँ जान किस मुशकिल में है,
|| वह सितम गर सामने है और दिल की दिल में है।
ज़िन्दगी का लुत्फ़ इस उजड़ी हुई मंज़िल में है,
एक दुनिया इश्क़ की आबाद मेरे दिल में है।
जाहिरो बातिन की एक रंगी कमाले इश्क़ है,
नाम उसी का लव पे है जिसकी मुहब्बत दिल में है।

—'कुदसी' जायसी

×

×

×

इस ताल्लुक के मैं सदके रबते^२ बाहम के निसार,
आपके तीरे नज़र का दर्द मेरे दिल में है।

—'हाशमी' कानपुरी

×

×

×

मैं सितम सहने को हर दम सामने मौजूद हूँ,
कह दो जो कुछ है ज़वां पर, कर लो जो कुछ दिल में है।

कद्र इसकी और कोई जानने वाला नहीं,
खाक-साराने^१ जहाँ से पूछ लो जो दिल में है।

—'विरनू' लखनवी

X X X

दूर हर महफ़िल से रह कर भी हर एक महफ़िल में है,
तुम को जो दिल में समझ ले तू उसी के दिल में है।
रौनके महफ़िल उसे कहता हूँ जो महफ़िल में है,
दिल से बढ़कर वह मोहब्बत है जो मेरे दिल में है।
बेवफ़ा तुम, वे सबव आज़ार तुम, बेमेहर^२ तुम,
आज सब तुमको कहेंगे जो हमारे दिल में है।
मह हूँ कुछ इस तरह उनके तसब्बर^३ में 'शमीम',
आँख में आँसू भरे हैं दर्द मेरे दिल में है।

—'शमीम' लखनवी

X X X

यों तो कहने सुनने को दुनिया तेरी महफ़िल में है,
हां मगर महफ़िल में तो वह है जो मेरे दिल में है।

—'इशरत' बलरामपुरी

X X X

✓ एक दिन कह दीजिये जो कुछ है दिल में आप के,
‡ एक दिन सुन लीजिये जो कुछ हमारे दिल में है।

—'जिगर' बिस्वानी

X X X

बैठते उठते हमेगा हर घड़ी मुशकिल में है,
 हसरतों की एक दुनिया क्या किसी के दिल में है।
 फत्ले गाहे नाज़ में उसको नहीं मरने का खौफ,
 किस कदर शौके-शहादन^१ अब किसी के दिल में है।
 —‘हुनर’ गायबी

× × ×

थे बड़े शातिर^२ मगर ‘शातिर’ भी धोखा खा गये,
 इनसे पूछे तो कोई भूल आये अपना दिल कहां।

× × ×

कभी आसां इसे समझा कभी मुशकिल समझा,
 लेकिन अब तक न मोहब्यत को मेरा दिल समझा।
 —‘शातिर’ इलाहाबादी

× × ×

मिटा कर मुझको समझे थे मिटा अब नाम उल्फत का,
 मगर इस पर भी मेरी याद बाक़ी रह गई दिल में।
 ‘बफ़ा’ मेरी बफ़ायें उनको जिस दिन याद आयेंगी,
 तो वह अपनी जफ़ाओं पर बहुत पछतायेंगे दिल में।

—‘बफ़ा’ शाहजहांपुरी

× × ×

ज्ञान भी प्यारी नहीं तुमसे हमें दिल भी नहीं,
ज्ञान भी कुशोन है तुम पर हमारा दिल भी है।

—'अनवर' अमरोही

× × ×

नाम जिसका खल्क में ज्ञातिम भी है कातिल भी है,
उसके कब्जे में हमारी जान भी है दिल भी है।

—'शवाच' ग्वालियारी

× × ×

लाख दिल हो आप के कब्जे में इस से क्या गरज,
देखना यह है हमें इस में हमारा दिल भी है।

—'रौनक' मेरठी

× × ×

क्यामत आज ले जाये कहीं और अपने मजमे को,
यह महफिल भर गई यां तो हजूमे हसरते दिल है।

—'बयां' मेरठी

× × ×

खुदा वह भी घड़ी लाये खुदा वह दिन भी दिखलाये,
रहो घेताव तुम मेरी तरह वेठाबिये दिल से।
तुम अपनी याद समझो इसको या दीवानगी मेरी,
बहुत बातें किया करता हूँ मैं तनहाई में दिल से।

—'अबद' मेरठी

× × ×

रस्के दुशमन का असर भी उल्फते कामिल में है,
 एक क्रयामत है, क्रयामत का यह कांटा दिल में है ।
 फिर किसी का सामना है जान एक मुशफिल में है,
 लव पे हफें मुहआ है ना उम्मेदी दिल में है ।
 हसरते थजें तमन्ना थव बड़ी मुशफिल में है,
 साफ चितवन कह रही है जो किसी के दिल में है ।
 मेरा वह मतलव नहीं मेरी तमन्ना वह नहीं,
 गैर का अरमान वह, जो गैर के जो दिल में है ।
 गये सब बलबले नाकामिये-पैहम^१ से आह,
 अब न हसरत है, न हसरत की वह सूरत दिल में है ।
 आप शर्माये नहीं, आप इस तरह बदजत^२ न हो,
 मेरा वह मतलव नहीं है आप के जो दिल में है ।
 मुझ पे औ दुशमन के होते फिर लगावट की नज़र,
 फिर किसी ताज़ा सितम का शौक उनके दिल में है ।
 जान बचती अब शबे फुर्कत नज़र आती नहीं,
 फिर वही वहशत, वही उनका तसव्वर^३ दिल में है ।
 रहम तुम करते न करते पूछ लेना था मगर,
 'आरजू' क्यों हो परीशां क्या तमन्ना दिल में है ।

१

—'आरजू' बरेलवी

X

X

X

मिटा कर दिल को तुम, अपने को आखिर क्या समझ बैठे,
मेरी हर आरजू हो जायगी दिल देखते जाओ।

—‘तायब’ मेरठी

×

×

×

‘नहीं मालूम क्या ज़िद है अदावत और उल्फत में,
न निकली वह तेरे दिल से न निकली यह मेरे दिल से।
जब आई हिचकियां समझे किया है हमको याद उसने,
खबर मिलती है घर बैठे हमें उस शोख की दिल से।
खुदा की शान है ‘कालिब’ जिन्हें ज़िद था न आने की,
वह देखो आ रहे हैं खिच के मेरे जज्बये दिल से।

—‘कालिब’ साहब

×

×

×

मंज़िले राह तलब तक खाक पहुँचेंगे नदीम,
होश हैं खोये हुए पहलू में अपने दिल नहीं।

—‘अर्श’ साहब

×

×

×

वह चुराये आँख अपनी जान लेकर शौक से,
फेर लें अपनी नज़र ऐसा हमारा दिल नहीं।

—‘रयाज़’ खैरावारी

×

×

×

यह खलिश मुझ में भी तो अय नावके कातिल नहीं,
ठीर है ठिरछी नज़र का आरजूये दिल नहीं।

उनके तरकश में हज़ारों तीर हैं दिल के लिये,
और तीरों के लिये पहलू में मेरे दिल नहीं ।

—'वसीम' खैराबादी

X X X

काम अपना कर गई कुछ ऐसा दुज्जदीदा^१ नज़र,
होश गुम हैं और पहलू में हमारा दिल नहीं ।

—'इशरत' लखनवी

X X X

अरे सब से मेरी फ़रियाद की आवाज़ आती है,
यह उस दुनिया के ज़रें हैं कि टुकड़े हैं मेरे दिल के ।

—'बेखद' मोहानी

X X X

क्या तसल्ली हुई नज़्ज़ारये क्रातिल से मुझे,
बूये खू आती है एक एक रंगे दिल से मुझे ।

—'बैवाक' शाहजहांपुरी

X X X

चमक उठे शरारे^२ बन के ज़रें कूये क्रातिल के,
यह आहें हैं मेरे दिल की यह नाले हैं मेरे दिल के ।

निकाले से न निकलेगा तेरा तीरे नज़र लेकिन,
और ऐसे तो सभी मेहमान नावक हैं मेरे दिल के ।

—'कैसर' लखनवी

X X X

मिली कब तुमको शग्ले कसरते आज़ार से फुर्सत,
जो मैं कहता मेरी बेताविये दिल देखते जाओ।
न मुझको है खबर दिल की न दिल को है खबर मेरी,
कहूँ मैं किस तरह उनसे मेरा दिल देखते जाओ।
उधर मुँह फेर कर इस चश्मपोशी^१ का नतीजा क्या,
कभी तो मुड़ के तुम बेताविये दिल देखते जाओ।

—‘यनी’ इलाहाबादी

× × ×

उससे उल्फत तर्क हो सकती नहीं तेरी तरह,
‘नज़म’ का दिल और है, ज़ालिम तेरा दिल और है।

—‘नज़म’ लखनवी

× × ×

आइने को हुस्न की तस्वीर के काबिल बना,
इरक करना है तो पहले दिल को अपने दिल बना।

—‘सिराज’ लखनवी

× × ×

सुराखे तीर गुमगस्ता^२ बड़ी मुश्किल से निश्चलेगा,
जो देखो घीर कर तो यह हमारे दिल से निश्चलेगा।

बवक्ते वापसी^१ कहती हैं पथराई हुई आँखें,
 कब उनके दीद का अरमां हमारे दिल से निकलेगा ।
 जलाकर खाक कर देगा यकी है अय फ़लक^२ तुमको,
 किसी दिन आह का शोला जो मेरे दिल से निकलेगा ।

—'शुजा' नारनौली

× × ×

न सागर की तमज़ा है न मतलब रंगे महफ़िल से,
 रहा करती है एक मस्ती मुझे कैफ़ीयते दिल से ।

—'कलीम' ओरई

× × ×

तुम अपने हुस्न की दाद आइने से किसलिये चाहो,
 मेरी आँखों से देखो और फिर पूछो मेरे दिल से ।
 तसव्वर में तो 'अनवर' हम नज़ारा कर ही लेते हैं,
 छुपें आँखों से बह लेकिन छुपेंगे किस तरह दिल से ।

—'अनवर' साह्य

× × ×

गलत बिल्कुल गलत कहना है दिल मिलता है मुशफ़िल से,
 नज़र से जब नज़र मिलती है दिल मिलता है खुद दिल से ।

—'ज़हर' उरई

× × ×

यही दिल है तो फिर खूने तमन्ना की शिकायत क्या,
 यहो तुम हो तो फिर निकलेगो क्यों हसरत मेरे दिल से।
 किसी की याद ने फिर चुटकियां 'वेताब' लीं दिल में,
 अभी फुर्सत मिली थी एक ज़रा वेताबिये दिल से।
 —'वेताब' कालपी

× × ×

उन्हें जब चाहता हूँ देखता हूँ,
 यह आइना है मेरा दिल नहीं है।

—'एहसान' सादव

× × ×

तरीक़े' वफ़ा में यह ग़ाफ़िल नहीं है,
 मेरा दिल कोई आपका दिल नहीं है।
 तुम्हारी मोहब्बत के काबिल नहीं है,
 नहीं है, नहीं, हां मेरा दिल नहीं है।
 वह आयेंगे घर पर बुलायेंगे घर पर,
 यकीं मुझको अथ हज़रते दिल नहीं है।
 कहूँ क्या ज़माने की शिफ़वा शिकायत,
 मेरी राय में जब मेरा दिल नहीं है।

—'शातिर' इलाहाबादी

× × ×

खयाल ईजाय^१ दुशमन का भी आ जाय नहीं मुमकिन,
 कि हर सीने में हम मस्तूर^२ अपना दिल समझते हैं ।

—'जिगर' बरेलवी

× × ×

याद आयेगी हमेशा आप की महफिल मुझे,
 आप से होकर जुदा जीने न देगा दिल मुझे ।

—'आज़र' जालंधरी

× × ×

खा गई है शोख^३ चरमो की नज़र इसको ज़रूर,
 हँडने से बरना मिल जाना था मेरा दिल मुझे ।

—'क़रत' जम्भूई

× × ×

मैं और अपनी ज़िन्दगी, बरबाद कर लेना गलत,
 तेरा अन्दाजे-तगाफुल^४ कर गया बददिल मुझे ।

—'आरजू' डुवाइवी

× × ×

हम को दुनिया का पलट देना कोई मुशकिल नहीं,
 जोश पर हैं ज़बये-सादिक^५ हमारे दिल में है ।

१—दुख, २—छिपा हुआ, ३—चंचल नेत्र, ४—गाफिल होने का ढंग, ५—सखी उर्नग ।

बेखुदी में खुल गये हैं राज हाये मार्फत^१,
एक हकीकत आशाना जज्बा हमारे दिल में है।

—'इशाद' मेरठी

×

×

×

तुम से क्यों पूछू मैं कासिद हाल उस दिलदार^२ का,
वह है मेरी आंखों के पदों में, वह मेरे दिल में है।

—'इन्द्र' ग्वालियारी

×

×

×

'हसरतों को पीस डाला आसिआये-घर्ख^३ ने,
अब तो दिल की हसरतों का खून ही बस दिल में है।

—'शर्मा' मेरठी

×

×

×

क्या जरूरत है कि जायें सैरे दुनिया के लिये,
सारे आलम का तमाशा खुद हमारे दिल में है।
तू नज़र में फिर रहा है क्या मुझे दरकार है,
दोनों आलम की खुशी इस वक्त मेरे दिल में है।

—'जौहर' बलन्दशहरी

×

×

×

दफन हैं इसमें हज़ारों रंजो, गम, हिरमानो^४ यास,
एक अजब हसरत भरी तुर्बत हमारे दिल में है।

—'दिलावर' साह्य

×

×

×

क्यों मेरी शीशत^१ में शिकवे गैर से करते हो तुम,
सामने मुंह पर कदो जो कुछ तुम्हारे दिल में है।
—'रौशन' पानीपती

× × ×

मैं -उसी का हूँ, उसी का हूँ, उसी का हूँ गुलाम,
हाँ वह मेरे दिल में, मेरे दिल में, मेरे दिल में है।
सुक पर इसका कुछ असर हो या न हो सुनता हूँ मैं,
तू कहे जा शौक से नासेह^२ जो तेरे दिल में है।
इशक़े सादिक जब से उस आइना रु से है हमें,
हम हैं उसके दिल में 'शाकिर' वह हमारे दिल में है।

—'शाकिर' ग्वालियारी

× × ×

अब मुसाफ़िर ठोकरें क्यों खा रहा मंज़िल में है,
दुंदूता फिरता है जिसको वह तो तेरे दिल में है।
अब उठा दो बीच से पर्दा नियाजो-राज^३ का,
है वही मेरी ज़बां पर, जो तुम्हारे दिल में है।

—'मुनव्वर' लखनवी

× × ×

१—पीठ पीछे धुराई करना, २—नसोहत करने वाला, ३—प्रेम को भेद भारी बातें।

क्या बतायें हम कि वह किस इशक की मंज़िल में है,
दूढ़ती हैं जिसको आंखें वह हमारे दिल में है।

—‘रौनक’ देहलवी

×

×

×

क़त्ल करके पूछते हैं क्या दिले विस्मिल में है,
और क्या है एक हुजूमे हसरतो गम दिल में है।

—‘नीलम’ सिकन्दरावादी

×

×

×

दर्द था जब तक मेरे दिल में मुझे एहसास था,
दर्द अब दिल में नहीं या यह कहूँ कि दिल नहीं।

—‘अहसान’ भुसावली

×

×

×

हो कशिश दिल में तो आजाते हैं खिच कर इस तरह,
गर न हो जज्बे मुइब्बत दिल में तो कुछ दिल नहीं।

—‘जरोह’ अमरावती

×

×

×

दिल अगर जाता रहा इसका नहीं कुछ हमको गम,
दिल के बदले दाप है फिर क्या हुआ गर दिल नहीं।

—‘जज्ब’ साहब

×

×

×

रंजो राम की बस्तियाँ ही बस्तियाँ आईं नज़र,
दिल की दुनिया में कहीं शक्ते निशाते^१ दिल नहीं ।

—'रागिब' बुरहानपुरी

X

X

X

गैर का पहलू खदंगे नाज़ के काविल नहीं,
और की क्यों जुस्तजू है क्या मेरा दिल, दिल नहीं ।

—'शरफ' अमरावती

X

X

X

आरजू का घर नहीं उम्मीद की मंज़िल नहीं,
मदफने^२ अरमां है पहलू में हमारे दिल नहीं ।

—'शौक' साहब

X

X

X

सदकं चायें आज ही मालूम होना था हमें,
मुदतें गुजरीं हैं पहलू में हमारे दिल नहीं ।

—'फातेह' मियांवली

X

X

X

एक संहाने आरजू आवाद होकर मिट गया,
यानी एक सहरा^३ का टुकड़ा है हमारा दिल नहीं ।

—'कौसर' साहब

X

X

X

१—दानन्द, २—दुःख होने की जगह, ३—जंगल ।

दिल अमानत जिसकी हो उसको ही 'मक़बल' दीजिए,
ग़ैर को देने के क़ाबिल यह तुम्हारा दिल नहीं।

—'मक़बल' साहब

× X ×

अब उन्हीं की फ़िक्र है, इसको उन्हीं की याद है,
अब उन्हीं का दिल समझिये अब हमारा दिल नहीं।

—'नासिक' साहब

× X ×

जो शहीदे नाज़ है मिन्नत^१ कशे क़ाबिल नहीं,
एक सीने में कहीं देखे गये दो दिल नहीं।

—'नैसां' अफ़ोलवी

× X ×

देखकर उनकी अदाओं को हुआ यह बेकरार,
अब मेरे बस में मेरे क़ाबू में मेरा दिल नहीं।

—'यावर' साहब

× X ×

छलिश से बेकरारी से पड़ी है जान मुशफ़िल में,
किसी का तीर है या है किसी की आरजू दिल में।
मिटायो शौक से इसको, जलाओ शौक से इसको,
यह रखना याद तुम आकर रहोगे फिर इसी दिन में।

नज़र आये न फिर क्यों लश्करे गम हर तरफ मुझको,
 किसी की आरजू है छावनी डाले हुये दिल में ।
 खालिश में क्या मज़ा है क्या खटक में लुत्फ है इसके,
 कि खारे आरजू को शोक से रखते हैं सब दिल में ।
 'ज़िया' मुझको शबे-फुक्रेत^१ की तारीकी^२ का डर क्या है,
 ज़ियाचे हुस्न जातां की मलक है जब मेरे दिल में ।

—'ज़िया' देवानन्दपुरी

X X X
 क्या क्या हैं जत्र इश्क में क्या क्या हैं सखितयां,
 यह गुफ से पूछिये यह मेरे दिल से पूछिये ।
 रखी गुदाम^३ खारे तमन्ना ने छेड़ छाड़,
 इस के मज़े को आपलये दिश से पूछिये ।

—'अउतर' नगोनवी

X X X
 आगे आगे हसरतें सब खाक उड़ाती जाती हैं,
 पीछे पीछे दोशे^४ हसरत पर जनाजा दिल का है ।
 अब ज़मीने कत्र थोड़ी और वसअत^५ चाहिये,
 एक लाशा मेरा है और एक मेरे दिल का है ।

—'नासेह' साहब

१—बिरह की रात, २—अंधेरा, ३—हमेशा, ४—कंधा,
 ५—कैलाश ।

हुआ है सामना दिल से मेरे मिज़गाने^१ कातिल का,
हजारों नश्वर हैं और एक है आधला दिल का।
क्रिया एक वार में निंगाहे नाज़ कातिल ने,
निकाला होसला कैसा मेरे धरमां भरे दिल का।
तुम्हारे गमज़ओ अशवा^२ अदाओ नाज़ रहज़न^३ हैं,
यही चारों लुटेरे लुटते हैं काफ़ला दिल का।
तेरा तीरे नज़र आकर जिगर में रुक गया ज़ालिम,
तड़प कर रह गया सोने में मेरे होसला दिल का।

—‘नाज़िम’ साहब

X

X

X

कोई हसरत है न हसरत से है कुछ हासिज़ मुझे,
सोचता हूँ या इज़ाही क्यों मिला है दिल मुझे।
मैंने नाज़े हुस्न उठाया और उसने वारे इश्क़,
मैं दुश्मा देता हूँ दिन को कोसता है दिल मुझे।
यह वफ़ादारी ज़माने के वफ़ादारों की है,
उनका दामन थामते ही छोड़ बैठा दिल मुझे।

—‘अहसन’ साहब

X

X

X

दोआयें देते हैं दिल से समझ लो दिल में तुम भी कुछ,
हिसाबे दोस्तीं दर दिल^४ फ़क़त है फैसला दिल का।

१—घरीने, २—बॉबे अदाएँ, ३—बाहू, ४—मित्रों का हिस्सा दिल में।

निकल जाये अभी अरमान कातिल तेरे विस्मिल का,
 पड़े गर हाथ पूरा तो हो पूरा होसला दिल का ।
 शवे तारीके गेसू^१ में दिखा कर मांग कहते हैं,
 इसी रस्ते में लुट जाता है देखो काफला दिल का ।
 तड़पने की नदी दम भर भी मोहलत मुझ को कातिल ने,
 न निकलाहाय वाद-अज़-क़त्ल^२ भी कुछ होसला दिल का ।
 बहुत फ़रशाद और मजनू के तो किस्से सुने होंगे,
 कभी बहरे-खुदा^३ सुन लीजिये किस्सा मेरे दिल का ।
 यही गौगा मचा है कूचये काकुल में वरसों से,
 इधर से वच के बस जाने न पाये काफला दिल का ।
 न मुंह को फेरिये बदलाइये मुझको न बातों में,
 जो छोड़ा है तो कुछ सुन लीजिये किस्सा मेरे दिल का ।
 गले पर फेर खंजर शौक से बहरे खुदा अब तो,
 हुआ जाता है खूँ पहलू में कातिल हसरते दिल का ।
 मेरे नालों को सुन सुन कर के फरमाते हैं लोगों से,
 असर होने लगा है इस की कुछ वेताविये दिल का ।
 सदाये^४ नाला बरपा है रवां आंखों से आँसू हैं,
 निकलता आज शायद दम है अपनी हसरते दिल का ।

१—केश, २—क़त्ल के बाद, ३—खुदा के वास्ते ४—आवाज़ ।

‘अहद’ यह तिलिमलाती कौंधती विजली जो है अन्सर,
उड़ाया ढंग इसने भी मेरी बेताबिये दिल का ।

—‘अहद’ साहब

× × ×

कुछ खटकता तो है पहलू में मेरे रह रह कर,
थव खुदा जाने सरी याद है, या दिल मेरा ।

—‘भिगर’ मुरादावादी

× × ×

इसको देंगे गम उठाने के लिए मुश्किल से हम,
दिल न होगा, तो तुम्हें चाहेंगे फिर किस दिल से हम ।
१. दिल नहीं मिलता जो दिल से तो यह मिलना कुछ नहीं,
आप भी उस दिल से मिलिये, मिलते हैं जिस दिल से हम ।

—‘बिस्मिल’ इलाहावादी

× × ×

गम है क्या मिट गया हस्त्री से अगर दिल अपना,
दिल जो सच पूछिये था भी इसी काविल अपना ।
याद है खूब हमें गो कि जमाना गुजरा,
अब जहां दाग है पहले था वहीं दिल अपना ।
जीनते पहलुये गमगीं था मगर बाये नसीब,
बन्फे तीरे निगहे नास हुआ दिल अपना ।

थे अजल ही से मुकद्दर^१ में यमो रंजो अलम,
 राहतो ऐश का तालिव है अबस^२ दिल अपना ।
 हम ने समझाया बहुत इशक का अंजाम उसे,
 उस तरफ से न फिरा, पर न फिरा दिल अपना ।
 हम जिसे दोस्त समझते थे रहे उल्फत में,
 आज दुश्मन नजर आता है वही दिल अपना ।
 थो कभी सोचते अहवाव मगर अय 'मोहसिन',
 अय न वह दोस्त, न हम हैं, न वह दिल अपना ।

—'मोहसिन' इलाहाबादी

×

×

×

कूचये कातिल में दूँडे से पता मिलता नहीं,
 हाय वह नाजों का पाला है हमारा दिल कहां ।
 अय 'यनी' में पहले ही नजरे मोहब्बत कर चुका,
 दूँढ़ता है दिल को वह पहलू में लेकिन दिल कहां ।

—'यनी' इलाहाबादी

×

×

×

प्रपने जीने का सहारा तेरा बिस्मिल समझा,
 तीर जो रह गया सीने में उसे दिल समझा ।

राहे उल्फत में कदम रखने से पहले मैंने,
दिल को समझाया बहुत पर न मेरा दिल समझा ।

—‘मोहसिन’ इलाहावादी

×

×

×

राह का चलना उधर दुश्वार मंजिल ने किया,
और इधर वेताब मुझको हसरते दिल ने किया ।
वार जब तलवार का वेरहम क्रांतिल ने किया,
सामना फौरन तड़प कर गम भरे दिल ने किया ।
आप तो आशिक हुए इलजाम आया मेरे सर,
मुफ्त में बदनाम मुझको हज़रते दिल ने किया ।
इश्क दुश्मन और फिर दिन रात की आहो फुगां,
आप को रुसवाये-आलम^१ आप के दिल ने किया ।
उन्न वेदादो सितम की आपको हाजत नहीं,
मैं इसे खुद जानता हूँ जो किया दिल ने किया ।
सब को देखा अपनी अपनी मौत से डरते हुये,
बढ़कर इस्तक़वाल^२ नावक का मेरे दिल ने किया ।
जानते हैं यह भी कोई चुलबुला माशूक है,
उनको गिरबोदा^३ हमारी शोखिये दिल ने किया ।

१—पंसार में बदनाम, २—रुदागत, ३—लुभाना ।

जान देने के अलावा कुछ नहीं दरमाने^१ इश्क,
मशविरा^२ देता है घबरा कर यह मेरा दिल मुझे ।
या खुदा मैं सख्तियां भेलूं कहां तक इश्क में,
क्या इसी के वास्ते तू ने दिया है दिल मुझे ।
क्या सुहब्त में नई कोई मुसीबत आयेगी,
आज यह कैसी सदायें^३ दे रहा है दिल मुझे ।
कल तो कहते थे 'गनी' से कुछ जरूरत ही नहीं,
आज क्यों तुम कह रहे हो दे दो अपना दिल मुझे ।
—'गनी' इलाहावादी

X X X

हुस्न की तासीर ने ऐसी बदल दी फितरतें,
उनका पत्थर का जिगर फौलाद का दिल हो गया ।

X X X

कुंज-तनहाई^४ में कोई भी नहीं अपना शरीक,
दिल को मैं तस्कीन देता हूँ शबे यम दिल मुझे ।

—'मोहसिन' इलाहावादी

X X X

करो इंसफ नावक सीनये विस्मिल में रहने दो,
यह जिसके दिल की इसरत है उसी के दिल में रहने दो ।

फटी कैसी शब-गम^१ और जड़वे-दिल^२ से क्या गुजारी,
हम अपने दिल में रहने दें, तुम अपने दिल में रहने दो।

—'वसी' काकोरवी

× × ×

सीने पे हाथ धरते ही कुछ दम पे बन गई,
लो जान का अज़ाब हुआ दिल को थामना।

× × ×

काफिर है कौन हम में से 'मोमिन' फिरे है तो,
काबे के आस पास तो मैं दिल के आस पास।

× × ×

न तन ही के तरे बिस्मिल के टुकड़े टुकड़े हैं,
है पाश-पाश^३ जिगर दिल के टुकड़े टुकड़े हैं।

—'मोमिन' देहलवी

× × ×

आज़ारों ज़रम सहने के काबिल बना दिया,
दिल की लगी ने दिल को मेरे दिल बना दिया।
हुस्ने बफ़ा ने आशिके कामिल बना दिया,
दिलवर को भी फरेक़ुये^४ दिल बना दिया।
देखे तो कोई सानये^५ कुदरत का यह फ़माल,
जब कुछ न बन सका तो मेरा दिल बना दिया।

१—दुख की रात, २—दिल की कशिशें, ३—टुकड़े टुकड़े,
४—दोपाना, ५—कारोगरी।

तीरे निगाहे नाज़ से धव खुल गया यह राज़,
एक क़तरा खून का था जिसे दिल बना दिया।

—‘गनी’ इलाहाबादी

×

×

×

निहां^१ जब हुआ माहे कामिल हमारा,
तड़पता रहा देर तक दिल हमारा।
न चौंके हुज़ूर आप सोते थे गाफिल,
पुकारा किया रात भर दिल हमारा।
न थी आस फिरने की जो उस गली से,
गले मिल के रुखसत हुआ दिल हमारा।
जब आकर किसी ने उठाया तो उठे,
जहां लेके बैठा हमें दिल हमारा।
तेरी गर्मियाँ जब कभी याद आईं,
दमे-सर्द^२ भरने लगा दिल हमारा।
न लें गर हसीनों को है वारे-खातिर^३,
मुवारक रहे यह हमें दिल हमारा।

—‘ताअश्शुक’ लखनवी

×

×

×

इश्क के सदमे उठाने को जिगर भी चाहिये,
क्यों हुआ मेरी तरह ‘आतिश’ किसी का दिल फहां।

×

×

×

‘आतिश’ उनसे नहीं नज्जारे का लपका छुटता,
मेरी आँखों को है शायद कि मेरा दिल भारी ।

×

×

×

शव को दम दे दे के ले जाता है क्यूे यार में,
मैं तो था ही मुझसे भी मुर्शिद^१ मेरा दिल होगया !

—‘आतिश’ लखनवो

×

×

×

ता सहर^२ की है फुगां जान के याफिल मुझको,
रात भर आज पुकारा है मेरा दिल मुझको ।
घारे हुस्न आप का लैला से उठया न गया,
न लिया कौंस ने जिसको वह मिला दिल मुझको ।
गैर फिर गैर हैं आखिर हैं फिर अपने, अपने,
याद करता है तेरे पास मेरा दिल मुझको ।
घार खातिर ही अगर है तो इनायत कीजै,
आप को हुस्न सुवारक हो मेरा दिल मुझको ।

×

×

×

हम असीरों^३ से इश्क फामिल है,
हर फफस^४ चाक सूरते दिल है ।
हँसते हो चाक हवीव पर नाहक,
यह तफाजाये वदशते दिल है ।

मेरे लारो पर आके वह बोले,
 उस तरफ़ बैठिये जिधर दिल है ।
 शये फुर्कत में कोई पास नहीं,
 एक बस मैं हूँ एक मेरा दिल है ।
 मुझ में ताकत कहां जो लूँ करबट,
 शक़कते^१ बेकरारिये दिल है ।
 मैं तो निकला तुम्हारे कूचे से,
 आज अकेला मेरा वहां दिल है ।
 मिल रहे हैं तमाम जुज़वे^२ वदन,
 किस कदर बेकरारिये दिल है ।
 तुमको क्या कद्र मेरे रोने की,
 अशक़^३ हर एक पारये^४ दिल है ।
 फर्श गोया है आबगीने^५ का,
 उस गली में वह मजमये दिल है ।
 नामावर राक़^६ है पसीने में,
 ख़त में मजमून सोज़िशे^७ दिल है ।
 आशिकों का कभी न दरल हुआ,
 घर तेरा है कि खानये दिल है ।

१—कृपा, २—हिस्सा, ३—घांसू, ४—डुकदा, ५—शीशा,
 ६—दूटा हुआ, ७—जलन ।

हूँ वह बेखुद कि जब कोई बोला,
 मैं यह समझा कि नालये दिल है।
 अथ 'ताअरशुक' वयान क्या कीजै,
 कुछ दिनों से जो हालते दिल है।

—'ताअरशुक' लखनवी

× × ×
 अथ वह दरसे^१ इश्क में भूलैगा मुशकिल से मुझे,
 जो मिला गम का सबक दीवाचये^२ दिल से मुझे।
 उन किताबों पर कि जिनमें दर्ज थे असरारे^३ इश्क,
 हाशिया लिखना पड़ा खूने रंगे दिल से मुझे।
 जो उड़ा ज़री वह पहुँचा आसमाने इश्क पर,
 हो गई मेराजे^४ गम बरवादिये दिल से मुझे।
 खींच कर मैं आह क्यों कइता यह मेरी आह थी,
 आपकी आवाज़ आई पर्दे दिल से मुझे।

—'नूह' नारवी

× × ×
 फावा पहुँचा तो क्या हुआ अथ शेख^५
 सइय^६ कर टुक पहुँच किसी दिल तक।
 × × ×

१—सबक, २—भूमिका, ३—भेद, ४—पलंदी, ५—पंडित,
 ६—कोशिश।

नज़र मुतलक नहीं दिखां^१ में उसको हाल पर मेरे,
मेरा दिल उसके गम में गोया उसका दिल है क्या जाने।

—'मीर' देहलवी

× × ×

रत्फा रत्फा जज्वे उल्फत ने दिखाया यह असर,
उनको भी मुज़तर^२ मेरी बेताबिये दिल ने किया।
किस का लूं मैं 'महशर' किस के सर इल्जाम दूं,
मुक्त को रुसवा खुद मेरी बेताबिये दिल ने किया।

× × ×

हल कहते हैं जिसे नक्शा तेरी महफिल का है,
रशके खुर्शीदे-क़यामत^३ दाग मेरे दिल का है।
शमां का आलम नज़र आता है जो वक्ते सहर^४,
वस वही आठों पहर नक़शा हमारे दिल का है।
है निगाहे शौक को तो काम अपने ज़ौक से,
हाल क्या भालूम इसको क्या किसी के दिल का है।

× × ×

जिन्हें हम बेवफ़ा, बेदादगर, क़ातिल समझते हैं,
उन्हीं को वाइसे आरामे जानो दिल समझते हैं।
जिगर में जो हैं दाग एक मेहर्बा^५ की मेहरवानी से,
उन्हें हम आफ़तावे आसमाने दिल समझते हैं।

१—खिरह, २—बेचैन, ३—सूर्य, ४—सवेरा ।

बक्रा के नाम पर कुर्बान होने वाले दुनियां में,
 न जां को जां समझते हैं न दिल को दिल समझते हैं ।
 'कलीसा,^१ बुतकदा,^२ काथा सब उनकी जलवा-गाहें^३ हैं,
 मगर इन सब से बेहतर हम हरीमे दिल समझते हैं ।
 मोहब्बत में किसीं पर क्यों रखें इल्जाम अथ 'महशर',
 हम अपनी जान का दुश्मन खुद अपना दिल समझते हैं ।

×

×

×

निगाह अहले महशर की लगी हैं मेरे कात्तिल पर,
 कयामत में कयामत पर कयामत है मेरे दिल पर ।
 निकलना वह हरीमें नाज़ से अँगड़ाइयाँ लेकर,
 वह धर्के तूर का गिरना इसी के एमने^४ दिल पर ।
 निगाहे नाज़ से कल्यो जिगर को छेदने वाले,
 रहेंगे नकश तेरे कारनामे सफ़हये दिल पर ।
 मेरी फरियाद से अज़ों समा^५ क्या अर्श हिलता है,
 मगर जालिम असर होता नहीं कुछ भी तेरे दिल पर ।

×

×

×

बहार आई कली चिटकी खिले गुल सुश हवा गुलची^६,
 शिगुल्फा देखिये कब तक हमारा गुञ्जये दिल हो ।

१—तरजा, २—मंदिरे, ३—जोरे-मंदिरे, ४—अरब को एक घाटी का नाम है, ५—जमीन और आवाश, ६—मालक ।

यही है इश्क का हासिल यही उल्फत का मकसद है,
फी मेरा दिल तुम्हारा दिल, तुम्हारा दिल मेरा दिल हो ।

—‘महशर’ लखनवी

×

×

×

मुक्तसा न दे ज़माने को परवरदिगार दिल,
आशुफ़ता^१ दिल, फरेपता^२ दिल, धे करार दिल ।
हर बार मांगती है नया चश्मे^३ यार दिल,
एक दिल के किस तरह से बनाऊँ हज़ार दिल ।
पहले पहल की चाह का कीजे न इम्तहान,
आना तो सीख ले अभी दो चार बार दिल ।
आशिक हुए वह जब से उदू^४ पर यह हाल है,
रख रख के हाथ देखते हैं बार बार दिल ।

—‘दाग’ देहलवी

×

×

×

✓ हम न कहते थे न जाओ ‘नूह’ बरमे नाज़ में,
उनकी सूरत पर फ़िदा सौ जान से दिल होगया ।

×

×

×

✓ धांगये पहलू में वह जान आगई,
वह गये पहलू से मेरा दिल गया ।

—‘नूह’ नारवी

×

×

×

मजा दोनों तरफ़ देगी तमन्ना इश्क़ का मिल में,
 इधर यह दिल से निकलेगी समायेगी उधर दिल में ।
 हमारा मुद्आ^१ तुम हो हमें दुनिया से क्या मतलब,
 तुम्हें हमसे गरज़ है तुम छुपे बैठे रहो दिल में ।
 सहे हैं जुल्म 'इत्ने बन गया हूँ दर्द का पुतला,
 जो तोड़ा फूल गुलशन^२ में तो कांटा चुभ गया दिल में ।
 दोआये वा असर पैदा करूँगा तोड़ कर दिल को,
 दवाये दर्द दिल मिल जायेगी टूटे हुये दिल में ।
 शराबे नाब^३ छोड़े 'बेखुद' मैल्वार^४ क्या सुमकिन,
 तसउब्बर^५ भी कभी तोवा का आ सकता नहीं दिल में ।

—'बेखुद' देहलवी

× × ×
 बताती है यह अशकों^६ में हमारे खून की सुरखी,
 वहाँ है टूट कर आंखों के रस्ते आवला दिल का ।

—'शक़क' इलाहावादी

× × ×
 आपका मिलना मेरा मिलना नहीं,
 जिस किसी से मैं मिला दिल से मिला ।
 ऐसे मिलने से न मिलना खूब है,
 क्या मिला गर वह बुरे दिल से मिला ।

१—तब कुछ, २—गाता, ३—खातीश, ४—शराबी, ५—प्यात,
 ६—आयु ।

जिसको मिलने से हमेशा उज्र^१ था,
 वह मेरे हसरत भरे दिल से मिला।
 चोर ऐसा, मोखविर^२ ऐसा चाहिए,
 मुझको दिलवर^३ का दिल से मिला।
 मिलने वाले को मिला कर खाक में,
 दिल तुम्हारा, गैर के दिल से मिला।
 अब है कुछ मिलने मिलाने का मज़ा,
 आपका दिल 'नूह' के दिल से मिला।

—'नूह' नारवी

× × ×

कोई दम में बुझने वाज़ा है चिराये ज़िन्दगी,
 अब नज़र आता है कुछ हमदर्द दर्द-दिल मुझे।

—'हामिद' इटावी

× × ×

सैकड़ों मिलते, तो करता इनको भी तुम पर निसार,
 एक दिल है, और इस दिल के अलावा दिल नहीं।

—'मदनो' कलकत्तवी

× × ×

तुम हमें भूलो, मगर हम याद से ग्राफ़िज़ नहीं,
 जिस तरह का दिल तुम्हारा है, हमारा दिल नहीं।

—'शौक' सहसरामी

× × ×

तुमने लूटी, तुमने छीनी दौलते सवरो सुकूं^१,
क्यों नहीं लेते इसे टूटा हुआ जो दिल भी है।

× × ×
मेहरवानी की नज़र शायद तुम्हारी हो गई,
किस लिए पहला सा वह अब इज़तिराबे^२ दिल नहीं।

× × ×
ते राम का भेलना मौकूफ^३ बिल्कुल हो गया,
इम बहुत है मुतमइन^४ पहलू में जब से दिल नहीं।

× × ×
वह क्या समझें, वह क्या जानें, वह सब बातिल^५ समझते हैं,
हमी कुछ दिल में क़द्रे आरज़ूये दिल समझते हैं।
वही कुछ फ़ाम आयेगा जिसे क़ातिल समझते हैं,
हम अपने दिल में उसको मुदआये दिल समझते हैं।
* तरीक़ा भी कोई होता है इज़हारे मुहब्बत का,
समझते हैं तो इसको सिर्फ़ अहले दिल समझते हैं।

× × ×
लाल चाहा यह निकल जाये मगर निकला नहीं,
तीर उनका है हमेशा से हमारे दिल के पास।
वह नहीं ध्याते न धायें कुछ भी इसका राम नहीं,
हर घड़ी रहता है तस्वीरे खयालो दिल के पास।

१—आनन्द, २—बेकरारी, ३—खन्द, ४—इतमीनान, ५—भूट।

गौर करने पर भी इसका राज^१ कुछ खुलता नहीं,
 टोस उट्टा करती है क्यों रह रह के मेरे दिल के पास ।
 क्यों करें चश्मे-इनायत^२ क्यों बढ़ायें रस्मों^३ राह,
 दिल वह मेरा ले गये अब क्या है मुझ वेदिल के पास ।

X X X

मुझ को अरमां रह गया, मुझ को तमना रह गई,
 दास्ताने दर्दे दिल सुनते कभी वह दिल से कुछ ।
 क्यों न मेरा दिल उड़ाकर दिल में वह महजूस^४ हों,
 सच है मिलती है हमेशा दिल को राहत दिल से कुछ ।
 हमसे यह कहता है जो कुछ हम तो करते हैं वही,
 क्या कहें मजबूरे उल्फत हो गये हैं दिल से कुछ ।
 क्या बताऊं, प्यार करता हूँ तुम्हें किस दिल से मैं,
 पूछ लो इस राज को तुम खुद ही अपने दिल से कुछ ।
 क्रिस्सये दर्दे अलम शबू न हो क्योंकर बैसर,
 दिल भी कहता है जिगर से कुछ, जिगर भी दिल से कुछ ।

X X X

नज़र अपनी जिस फूल पर मैंने डाली,
 हुआ मुझको धोका मेरा दिल यही है ।
 नहीं सुनते वह इससे उल्फत^५ का क्रिस्सा,
 मुद्बवत में बस क्रिस्सये दिल यही है ।

X X X

हो गया मालूम अब आयेंगी इस पर आफ़तें,
 किस लिये.. वह देखते हैं मेरे ही दिल की तरफ़ ।
 बाल अगर पड़ जाय आइने में तो किस काम का,
 आप क्यों देखें मेरे टूटे हुये दिल की तरफ़ ।

X X X

स्मीद मेरी खंजरे क्वातिल में रह गई,
 क्या क्या तड़प तड़प के मेरे दिल में रह गई ।
 यूँ बफ़ा जहाँ में कहीं नाम को नहीं,
 जो कुछ भी थी वह सिर्फ़ मेरे दिल में रह गई ।
 हसरत निकल सकी, न निकाले से भी 'अज़ीज़',
 यों वह दबी दवाई मेरे दिल में रह गई ।

X X X

तुम पर इस को निसार' करता हूँ,
 यह मिटाना नहीं है क्या दिल का ।
 मिट गया आप के मिटाने से,
 यह हुआ हाल इश्क में दिल का ।
 कुछ फ़दा, कुछ सुना नहीं जाता,
 क्या सुनूं हाल, क्या कहूँ दिल का ।

X X X

वह मुहब्बत में मेरा क्रातिल है,
जिस को समझा था जान है, दिल है।
क्यों उन्हें मैं निकाल कर देदूँ,
मेरे पहलू में एक ही दिल है।
जो न जाये, न आये उल्फत में,
वह कोई जान, वह कोई दिल है।
मुझ को इंकार कब हुआ इस से,
मैं तो कहता हूँ, आप का दिल है।
हाल क्या पूछते हो तुम दिल का,
दर्द उल्फत में मुब्तिला^१ दिल है।

× × ×

यह कहा यह कह के फिर पामाल^२ क्रातिल ने किया,
सारे आलम में मुझे रुसवा मेरे दिल ने किया।

× × ×

रंजो गम पाते न उल्फत में अगर क्रातिल से हम,
अपने दिल को थाम कर क्यों आह करते दिल से हम।
अब न आयेगे पलट कर कूचये क्रातिल से हम,
मशविरा^३ यह पेशतर ही कर चुके हैं दिल से हम।
खुद बखुद जब तुम चले आये तो अब यह क्या कहें,
कर रहे थे याद फुर्कत^३ में तुम्हें किस दिल से हम।

अब तक औरों पर खफ़ा होते कभी देखा नहीं,
 है खता दिल की, उन्हें जो चाहते हैं दिल से हम ।
 क्या बतायें क्या बतायें क्यों मुहब्बत हो गई,
 दिल यह हमसे पूछता है, पूछते हैं दिल से हम ।
 मर चुके मरना था जिस पर खत्म भगड़ा हो गया,
 हाथ उठा बैठे गमे उल्फत में अपने दिल से हम ।
 क्यों सताया इस कदर इश्को मोहब्बत ने 'अजीज़,
 दिल अगर ठहरे तो इतनी बात पूछे दिल से हम ।

—'अजीज़' मिर्ज़ापुरी

×

×

×

देख कर गिरियां^१ निकाला अपनी महफ़िल से मुझे,
 अश्कों^२ की सूरत गिराया आप ने दिल से मुझे ।
 उम्र भर अपना शरीक़े गम रहा है अय अजल^३,
 नज़्मा^४ में रुख़सत ज़रा हो लेने दे दिल से मुझे ।
 ज़ब्त गो दिल ने किया, लेकिन न आहें रुक़ सकीं,
 दर्द दिल ने उठ के शर्मिदा किया दिल से मुझे ।
 वह मुकद्दर^५ हैं मेरे दिल से, नहीं हैं दिल से साफ़,
 दिल फ़ो है उनसे शिकायत, है गिला दिल से मुझे ।

मेरी खातिर तो वही था एक ठिकाना चैन का,
आप ने नाहक निकाला गोशये^१ दिल से मुझे।

—‘सादिक’ इलाहाबादी

×

×

×

हुई मालूम वजह इज़तिरायो शोरिशे-आलम^२,
यहां दिल है हर एक ज़र्रा, हर एक ज़र्रे में एक दिल है।
वह आईना हो, या हो फूल, तारा हो कि पैमाना^३,
कहीं जो कुछ भी टूटा, मैं यही समझा मेरा दिल है।
वह दिल लेकर हमें बेदिल न समझें उनसे कह देना,
जो हैं मारे हुए नज़रों के उनकी हर नज़र दिल है।

—‘सीमाव’ अकबराबादी

×

×

×

तुम कभी आकर जो देखो तो कभी मालूम हो,
अब वह दुनियाये तमन्ना क्या मेरे दिल में नहीं।
फल यह रोना था कि लाखों आरजूयें दिल में हैं,
आज यह रोना है कोई आरजू दिल में नहीं।

—‘विस्मिल’ इलाहाबादी

×

×

×

बैठ कर उठना पड़ा है क्यूँ^१ क्रांतिल से मुझे,
 है गिला इसका मेरी बेताबिये दिल से मुझे।
 किस अंदा से कह दिया उसने, मेरा दिल फेर कर,
 सख्त नफरत हो गई, हसरत भरे दिल से मुझे।
 बैठकर पहलू में लीं उसने गज़ब की चुटकियां,
 बैन अब मिलता नहीं बेताबिये दिल से मुझे।
 वह यह कहते हैं मेरा दूटा हुआ दिल देख कर,
 "ऐश" साहब चाहते हैं आप इसी दिल से मुझे।

x

x

—"ऐश" इलाहाबादी

x

फँसाया हुस्ने-आलमगीर^२ ने उनको भी मुशकिल में,
 कि दिल एक एक के पहलू में वह एक एक के दिल में।
 मदद अब इश्क सादिक^३ फँस गये हम सख्त मुशकिल में,
 कि इतने नरतरे यम हैं, रंगें जितनी नहीं दिल में।
 असर कुछ आप ने देखा हमारे ज़ब्जे फामिल का,
 इधर छूटे कमां से और इधर तीर आ गये दिल में।
 इधर आ कर ज़रा आँखों में आँखें डालने वाले,
 वह लटका तो बता दे, जिससे दिल हम डाल दें दिल में।
 खयाले जुल्मे-जानां^४ को जगह किस वास्ते दे दी,
 मेरी उलझी हुई तकदीर ने सुलझे हुये दिल

—गली, २—जंसार भर में मुन्दर, ३—उषा, ४—मायक़ की

यह प्यारे नाज़, यह वांकी अदा, यह मोहनी सूत्र,
समां सकते तो रख लेता, उठा कर मैं तुम्हें दिल में।
क्या अंधेर है, यह क्या गज़ब है, क्या तमाशा है,
मिटाओ भी उसी दिल को, रहो भी तुम उसी दिल में।
तरीफा इस से आसाँ और क्या है घर बनाने का,
मेरी आगोश में आ कर जगह कर लीजिये दिल में।
—“नूह” नारवी

×

×

×

अपनी मुट्ठी में मसल कर नाज़ से कहते हैं वह,
आ रही है धू मुहब्बत की तरे दिल से मुझे।

—‘वज़ीह’ इलाहाबादी

×

×

×

गैर वाक़िफ़ हूँ क्या जब आन से वाक़िफ़ रहूँ,
कौन है जो आशाना^१ कर दे मेरे दिल से मुझे।

—‘मंसब’ धरलवी

×

×

×

पदले तो लेकर दिले पुर दाग़ कुछ देखा मयौर,
फिर यह पूछा प्यार करते थे इसी दिल से मुझे।

—‘गहरार’ मिर्जापुरी

×

×

×

जाहिरी लुफ्तो इनायात^१ का हासिल क्या है,
 दिल से देखो तो खुले दर्द भरा दिल क्या है।
 आप कह दें तो अभी सब को तसद्क^२ कर दूं,
 यह मेरी जान है क्या, और मेरा दिल क्या है।
 नाम को इस में कूदूरत^३ रहे मुमकिन ही नहीं,
 आइना है तेरी उल्फत का मेरा दिल क्या है।
 दिल से जब कद्र करो दिल की तो दिल है सब कुछ,
 दिल से जब कद्र नहीं दिल की तो फिर दिल क्या है।

×

×

×

मोयस्सर लज्जते दर्दे जिगर मुशकिल से होती है,
 मगर यह बात ऐसी है, कि पैदा दिल से होती है।
 जो सब पूछो तो दुनियाये वफ़ाओ इश्क की रौनक,
 किसी से भी नहीं होती है लेकिन दिल से होती है।
 नहीं पहलू में दिल तो किस तरह दिल में मोहब्बत हो,
 मुहब्बत दिल में होती है तो पैदा दिल से होती है।
 समझते हैं इसे अच्छी तरह हम भी समझते हैं,
 इनायत दिल पे होती है, मगर किस दिल से होती है।
 जो दिल को बात है वह दिल से लव पर आ नहीं सकती,
 हमारी याद होती है, मगर किस दिल से होती है।

×

×

×

हुआ जीना बहुत मुशकिल हमारा,
 न वह हम हैं न अब वह दिल हमारा ।
 नहीं दिल अब किसी काबिल हमारा,
 कभी था सब के काबिल दिल हमारा ।
 बतायें क्या, बस इतना जानते हैं,
 किसी ने हम से छोना दिल हमारा ।
 उठाये किस तरह कोहे^१ मुसीबत,
 कि नन्हा सा अभी है दिल हमारा ।
 यह पुतला है वफ़ा का या नहीं है,
 ज़रा जाचें वह लेकर दिल हमारा ।

×

×

×

पड़ी है फूट मक़तल^२ में पसे-क़तल^३,
 कहीं सर है कहीं है दिल हमारा ।
 वफ़ाओ इश्क़ से क्या हाथ उठाये,
 तुम्हारे हाथ में है दिल हमारा ।
 कोई पूछे तेरी नीची नज़र से,
 मिला मिट्टी में क्यों कर दिल हमारा ।
 वह कहते हैं मुश्क़लत दिख़गी है,
 अभी तक देखते हैं दिल हमारा ।

मिलाओ दिल को मिट्टी में समझ कर,
हर एक ज़र्रा बनेगा दिल हमारा ।
करें सब अहले-दिल^१ इस दिल की तौक़ीर^२,
नहीं है ऐसा वैसा दिल हमारा ।
न देंगे दिल तुम्हें तो किस को देंगे,
तुम्हारे वास्ते है दिल हमारा ।
कोई ख्वाहां^३, कोई इसका तलबगार^४,
तमाशा बन गया है दिल हमारा ।
फ़हां दिल है यह क्या तुम पूछते हो,
जहां तुम हो वहीं है दिल हमारा ।
मुहब्बत में हुई यह बात मालूम,
हमारा दिल नहीं है दिल हमारा ।
हम अपनी बेकसी^५ पर रो दिये हैं,
हमें जब याद आया दिल हमारा ।
दमे^६ विस्मिल जो अय 'विस्मिल' न तड़पे,
वही है, हां वही है, दिल हमारा ।
—'विस्मिल' इलाहावादी

॥ समाप्त ॥

१—दिलवाले, २—आदर, ३—चाहनेवाला, ४—माहफ,
५—मजबूती, ६—तड़पते घमप ।

सरस्वती-सदन की कुछ उत्तमोत्तम पुस्तकें

१—विवाह समस्या अर्थात् स्त्री जीवन

[लेखक—महात्मा गांधो]

हिन्दू समाज का कोई भी स्त्री पुरुष इस पुस्तक को पढ़कर अपने दाम्पत्य जीवन को सफल बना सकता है और एक दूसरे के प्रति अपने कर्तव्यों को समझ सकता है। महात्मा जी ने प्रत्येक लेख के एक एक शब्द में जादू का सा असर भर दिया है। पुस्तक का मूल्य केवल ॥॥) बारह आना।

२—स्त्रियों के खेल और व्यायाम

तन्दुरुस्त रहने के उपाय, बिगड़ी हुई तन्दुरुस्ती सुधारने के उपाय, विवाह और सन्तान होने के बाद भी स्त्रियाँ तन्दुरुस्त और खूबसूरत कैसे रह सकती हैं, स्त्रियों के स्वास्थ्य बिगड़ने के कारण और उसके सुधारने के भिन्न भिन्न तरीके, तन्दुरुस्ती बढ़ाने-वाली कसरतें इत्यादि कितने ही विषय हैं। पच्चीसों उपयोगी चित्र दिए गए हैं। मूल्य सजिल्द का २) दो रुपया।

३—सचित्र दाम्पत्य शास्त्र

स्त्री पुरुषों के दाम्पत्य जीवन सम्बन्धी कोई ऐसा विषय इसमें नहीं छोड़ा गया है जिसके प्रत्येक पहलू पर गंभीरतापूर्वक विचार न किया गया हो। हिन्दी संसार विशेषकर नवयुवतियों के लिए जिन्होंने दाम्पत्य जीवन में प्रवेश किया है वह पुस्तक पथ और सच्चे साथी का काम देगा। सजिल्द का २) दो

४—विहारी-सतसई

प्रसिद्ध महाकवि विहारी की सतसई पर सरल सरस टीका, टिप्पणी सहित सचित्र, सजिल्द मूल्य २।) सवा दो रुपये ।

५—विस्मिल की शायरी

हैरत में है कोई तो कोई पढ़ के दंग है ।

‘विस्मिल’ की शायरी में जो ‘अफ़वर’ का रंग है ॥

आज सभी पत्रों में पाठक आँख फाड़ फाड़ कर विस्मिल की रचनाएँ खोजा करते हैं । व्यंग कविताओं में इस समय ‘विस्मिल’ अपना सानी नहीं रखते । उनकी वही दिल को फड़काने वाली पुरलुफ़, मज़ेदार कहकहे लगाने वाली सभी विषयों पर चुनौ हुई कविताएँ इस पुस्तक में दी गई हैं । मूल्य सिर्फ १।) रुपया

६—दर्द-दिल

पुस्तक आपके हाथ में है ।

७—बलिवेदी पर

इस पुस्तक में लाड़ले राजपूत-सपूतों की वीर गाथा कहानियों के रूप में दी गई हैं । एक एक वहादुर की वीरता और साहसपूर्ण कहानी पढ़कर हृदय में साहस, और बल पैदा होता है । जीवन में जागृति आती है उन वीर स्त्री पुरुषों के प्रति श्रद्धा और भक्ति से मस्तक झुक जाता है । सचित्र पुस्तक का मूल्य दस आने ।

८—हमारे हरिजन

इस पुस्तक में हरिजन जातियों की गणना, उनकी संख्या और उनकी कठिनाइयों का वर्णन बड़ी खूबी से किया गया है । सचित्र पुस्तक का मूल्य सिर्फ ॥३॥ सात आना ।

९-लाठी शिक्षक

हिन्दू जाति की जागृति के समय, प्रत्येक हिन्दू बालक को स्वस्थ, हृष्ट पुष्ट और लाठी आदि चलाने में दक्ष होना चाहिये। लाठी चलाना सिखाने वाली अब तक कोई पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई थी। इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिये यह सचित्र अद्वितीय पुस्तक प्रकाशित की गई है मूल्य ॥॥) बारह आना।

१०-अछूत भक्त

चित्त में शान्ति और परमेश्वर के प्रति अनुराग उत्पन्न करने वाली भगवद्भक्त अछूतों की प्रेममयी, सरस, पावन, कथाएँ। सचित्र पुस्तक का मूल्य ॥॥) आठ आना।

११-पौराणिक कथाएँ

इस पुस्तक में जगह जगह चित्र देते हुए बड़े रोचक ढङ्ग से सरल, शिक्षाप्रद पौराणिक कथाएँ लिखी गई हैं। मूल्य ॥३)

१२-ऐतिहासिक कहानियाँ दो भाग

यह पुस्तक दो भागों में है। पुस्तक में रोचक और सरल भाषा में भारत के महापुरुषों के संक्षिप्त में जीवन चरित्र और उनके जीवन की वे रोचक घटनाएँ दी गई हैं जिनसे वे महापुरुष हो गये हैं। सचित्र पुस्तक मूल्य प्रत्येक भाग का ॥३)

१३-भारत के मशहूर स्थान

इस पुस्तक में भारत के मुख्य २ ऐतिहासिक, दर्शनीय स्थानों का उनकी विशेषताओं सहित वर्णन दिया गया है। मूल्य ॥२)

१४-जमीन आसमान की बातें

इस शिक्षाप्रद सचित्र पुस्तक को बड़े बड़े अक्षरों और कौतूहल से पढ़ते हैं। मूल्य सिर्फ ॥२॥) साढ़े छै आने

१५—बालगीत

इस छोटी सी पुस्तक में बालकों के लायक, याद करने योग्य अच्छे चुने हुए उपदेश प्रद भजन कविताएं हैं। मूल्य ३)

१६—ज्ञान्य अर्थमेशिक

यह हिसाब की पुस्तक प्राइवेट स्कूलों के बहुत काम की चीज है बड़े सरल ढंग से लिखी गई है। मूल्य सिर्फ १) आना

१७—अछूत के पत्र

प्रत्येक व्यक्ति के पढ़ने और मनन करने योग्य हिन्दू समाज के फलक की फरुण कहानी। बड़ी ही रोचक भाषा में पत्रों के रूप में लिखी गई है। मूल्य ॥१)

१८—वे चारों

एक सामाजिक भौतिक सरस और रोचक प्रत्येक स्त्री पुरुष के पढ़ने योग्य उपन्यास। मू० ॥२)

१९—एक रात

प्रत्येक स्त्री पुरुष के पढ़ने लायक पुरलुत्फ दिल में गुदगुदी पैदा करने वाला मजेदार एक भौतिक उपन्यास। पढ़ते ही तबियत फड़क उठती है। मूल्य ॥२) दस आना

ये पुस्तकें बहुत शीघ्र प्रकाशित होंगी।

१—तीरे नज़र २—महाकवि दास की शायरी ३—तूफाने नूह ४—अकबर ५—चक्रवस्तु ६—ज्ञौक ७—गालिय ८—जन्म-वाते विस्मिल।

इनके सम्पादक व लेखक प्रसिद्ध कवि 'विस्मिल' इलाहाबादी होंगे। जिनकी 'विस्मिल की शायरी' ने धूम मचा रखी है।

